ਰਾਜੇ ਰਸਾਲੂ ਤੇ ਪੂਰਨ ਦੀ ਸਾਖੀ

ਛੇੜਨ ਵੇਦ ਅਗਮ ਨਿਗਮੀ ਹੈ ਸਾ

ਨਾਥ ਕਰ ਮਹੰਤ ਅਤੁਮਾਨੇ ਸੰਪੂ

ਅਕਾਰ

मो॰ ग्र॰ प॰ १

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ रामाय नमः ॥ सवैया ॥ ॐ पावन जामै जिन के पदपंकज सेवत नीत तरे भ्रम भारी ॥ औरस राग न से
वत है गुरु जो हरि मैं न भेद सु भ्रम विचारी ॥ तात भजे जग मात भजे श्रुति जो हरि मनाय जिन्हे त्रिपुरारी ॥ सो गणनायक हो रघुसन्न
गहे गुरु वंदि न भेद हमारी ॥ १ ॥ उत्तम को हरणी सदा करणी बुद्धि अपार ॥ सुखदा ताबा गेश्वरी वंदो पाद उदार ॥ २ ॥ सवै
या ॥ जिन्हते उपजे ब्रह्म रुद्र प्रवेर सतेज प्रचंड रवली विलहारे ॥ जिन्ह को हरि पिखि बहु भांति भने जड़ चेतन के न रभेद निहारे ॥
सनकादिक नारद को विदके गन जो हरि पिखि सभ भेद निवारे ॥ उरतो जन कामज जापति के पदपंकज लको बहु वंदहमारे ॥ ३ ॥
सवैया ॥ जो पदपंकज नीर हरे मलता रनदीन व है भव भारी ॥ वामन के पदपंकज ते भनु गंग गिरीजन तारण हारी ॥ वैन न नै
नन की उपमा रवि कंजन ते श्रुति सार निहारी ॥ तो गुरु नानक के पदपंकज सीस निवाइ कि वंदहमारी ॥ ४ ॥ माधव छंद ॥ गोवि
द सिंह कृपानिधनाथ हरे रिद जा सु सदा सुखदाई ॥ वही भवसागर पार परे पदपंकज की जन जे सरनाई ॥ रेजन ना मसरे
सभ काम रहे भव मे रलचिंतन काई ॥ इसो पदपंकज वंदित हो निज दास न दास कि हो हुसहाई ॥ ५ ॥ नराज छंद ॥ सुनाथ माल
सिंह के पदार विंद ते गिरे ॥ मनूप वारि विंद को सुखार विंद मै परे ॥ सुवाग ही न झूप मे वचाल मूक को करे ॥ निहार रूप आपनो
गहे कुबंध को हरे ॥ ६ ॥ तथापि भाव हे रयो पुनंगुनी विजाल मे ॥ पदार विंद पारयो सुभाग पुंज भाल मे ॥ कुबंध को मिटा इयो ॥
सुराम को दिखाइ के ॥ करे सु पाद कंज को नमामि सीस धारि के ॥ ७ ॥ सवैया ॥ ब्रह्म सुधाम च है नर जे गति ता हि निमित्त कहो
सुखदाई ॥ मारग पार सुधाम लहे नर ब्रह्म सनातन जो अधिकाई ॥ ता न हि एक कहे श्रुति सार सुया विन और न आस मिटा
ई ॥ इव मिटे सुख सार लहे नर या भव चिंतर हे न हि काई ॥ ८ ॥ तथा च श्रुतिः ज्ञात्वा देवं केवलं नामः पंथा विद्यते अयनाय
दोहरा ॥ श्रुति वखानगो यों पजो तां ही को उर मान हृदह समा रेज भये नीके गये वखान ॥ ९ ॥ चौपई ॥ गुरु अर्जन कल्यानव ।

मो० ह० प० ७

ई ॥ भीमादिक व्रवधानहि होई ॥ नरपति नारि लखे न हि कोई ॥ २९ ॥ रवि दुति सो जग कौ दुति नासे ॥ गगन माहि तारागन हि भासे ॥ तोउ
ह पक्ष दिउ जनलग्यो रोई ॥ भेद न लखे सर्व सिमें कोई ॥ ३० ॥ परि सभ सम पन देखे को ॥ कर्म सो म समान न सोइ ॥ योगी पुरुष सगल को
देखे ॥ नारिहि भाव कदाचित देखे ॥ ३१ ॥ तिउ ही ब्रह्म एक जग माही ॥ पृथक बुद्धि निर्द्वंद्वे नाही ॥ तानी ब्रह्म अभेद निहारे ॥ अद्वैत ब्र
ह्म बहु प्रगट उचारे ॥ ३२ ॥ कर्म सो म विवेक न हि मान ॥ ब्रह्म अभेद वेद प्रमान ॥ तत्त्वमसी यो वेद उचारे ॥ लोगन के संदेह निवारे ॥ ३३ ॥
प्रमत्व प्रमाणा विवि ब्रह्म होतब ॥ वेद प्रमाण सदा निरदोषब ॥ तो ते वेद बखाने जोई ॥ साचो अर्थ पछानो सोई ॥ ३४ ॥ दोहरा ॥ वेद
विरोधी वाद जो भाखे बहु प्रकार ॥ तिह जीवन ते वेदार्थ को सके न को निरधार ॥ ३५ ॥ वेद विरुद्ध वाद है जेते ॥ करो निरास याहि मो ते
ते ॥ वार व्यान परपथी जोई ॥ करो निरास याहि मो सोई ॥ ३६ ॥ लक्षण के जो ई परकार ॥ या भीतर ते कहो विस्तार ॥ नव ग्रन्थ्यास
या भीतर गावो ॥ महावाक्य को अर्थ दिखावो ॥ ३७ ॥ जीव मुक्ति अवस्था जोई ॥ या मे प्रगट होइगी सोई ॥ विदेह मुक्ति परमात्म धा
म ॥ भावो सगल सनो अभिराम ॥ ३८ ॥ दोहरा ॥ कहु कहु तार स्य पुल पूर्व उत्तर वार ॥ प्रगट देत या मे कहो सम मझ होइ निरवार
३९ ॥ सवैया ॥ वेद विहीन सु सांख्य प्रधीन सदा नर आपन रूप भुलाने ॥ ते सभ जीव विलक्षण नियो बहु भेद कहे न हि तत्त्व पछाने ॥
कारण माहि विवाद सदा गुनि और सु और हि भाव न वखाने ॥ ताहि निवार सदा सुख सार सु आतम रूप निरंतर जाने ॥ ४० ॥ दोहरा
केसे कै विवाद को आपन रूप भुलाइ ॥ सावधान मन के सुनो नीके दयो बताइ ॥ ४१ ॥ चौपई ॥ प्रधान अचेतन जोइ कहे है ॥ ज
ग कारण साखी तिहि कहै ॥ ता बिन हेतन माने अप्रमाणो को मत यो पहिचान ॥ ४२ ॥ प्रधान अशासन गुण मे जोई ॥ परे प्रकृति
बिंब सभ भासे सोई ॥ जीव भिन्न पुनि ईश्वर नाम ॥ पातंजल मत कारण अभिराम ॥ ४३ ॥ कलेस कर्म ते जो असंग ॥ पुरुष विशे
ष निम्य चिद्रंग ॥ ता ही ने सभ जग उपजायो ॥ यो पातंजल आप दिखायो ॥ ४४ ॥ चेतन पशुपति जोइ कहे ये ॥ जीव भिन्न रूपा
निरूप ये ॥ जग कारण ता ते न हि आने ॥ अप्रगट पाशुपति ताहि बखाने ॥ ४५ ॥ वासुदेव ही है जग करता ॥ दया निधान भगत

ख्यानभ्रमभयमिटैसब्रह्मज्ञान ॥ उत्तमपंथग्यानजगसारदुःखमैंहनसावरैनउदार ॥ १ ॥ ब्रह्मादिकचिंटीलौंजेते ॥ दुःखमैं
द्वेषकरैंसभमैंतेते ॥ सदाजिज्ञासादुःखकीकरैंदुःखनाशसाधनग्रंथसरे ॥ २ ॥ सगलदुःखकोकारणदेह ॥ ताकोधर्माधर्मवि
धेहु ॥ विहितनिषिधकर्मनितिहिमूल ॥ रागद्वेषकर्मनकोमूल ॥ ३ ॥ भलोबुरोअध्यासहजोई ॥ रागद्वेषकोकारणसोई ॥ सोपरि
भलोबुरोअध्यास ॥ निखिलद्वैतनतेभयोप्रकास ॥ ४ ॥ सोसभद्वैतनतूलसमैंऐसे ॥ सीपविखेरूपोजगजैसे ॥ ताकोकारणहैअज्ञान
सोउरकल्पितसमपछान ॥ ५ ॥ सोअज्ञानअहैहैजौलौ ॥ सर्वअनर्थलहैनरतौलौ ॥ ताकोनाशकआत्मज्ञान ॥ सोवेदांतते
नीकेमान ॥ ६ ॥ सोवेदांतहैगुरुअधीन ॥ तांपरसेवेहोंयस्वधीन ॥ तांउपरिदृष्टंपथहैजोई ॥ भलीप्रकारअभ्यासेसोई ॥ ७ ॥ तांपा
रिपंथीवादीजेते ॥ तर्कखड्गसौंछेदैतेते ॥ वेदविपरकोटेवेओट ॥ सगलनिवारैतांकोचोट ॥ ८ ॥ सावधानअतिधीरजवंत
ब्रह्मधामकोपावैसंत ॥ तोमैंरमैपरमसुखपाई ॥ दुःखसगलकोमूलमिटाई ॥ ९ ॥ दोहरा ॥ ज्ञानवत्तानयोपंथजोभाख्योता
हिस्वरूप ॥ ताकोपायस्वधामकोपावैशिष्यअनूप ॥ १० ॥ चौपई ॥ जीवब्रह्मएकताजोई ॥ हस्तविल्वसमभासैसोई ॥ श्रुतिपादि
कोज्ञानबखानै ॥ ताकोन्यायहोइभवहानै ॥ ११ ॥ तत्त्वंभवकूमेंरोमसहाय ॥ वरविख्यातनीकेहमपाय ॥ यौंअप्रयत्नकेहैदेवें ॥
तांहिअभावप्रगटजनपेखें ॥ १२ ॥ तिउहीजीवब्रह्मअभेद ॥ हरयोकिनैनपेखैभेद ॥ ताहंब्रह्मबखानेसारे ॥ अहंब्रह्मनहिकोउ
उचारे ॥ १३ ॥ ताते ब्रह्मएकताऐसे ॥ कूपमेंहरोमजगजैसे ॥ याहिअसंकाकोपरिहार ॥ भाखेंप्रगटसनोनिरधार ॥ १४ ॥ यदि
कछुनेमनहैभवमाहि ॥ अप्रयत्नहोइसहोवैनाहि ॥ होइवस्तुअरुभासैनाही ॥ याकेअष्टहैतभवमाही ॥ १५ ॥ हरसमीपईदृष्य
कोज्ञान ॥ मनचंचलसुखअवधान ॥ तिरसकारसाजातीसंग ॥ यदिअसहैतधरोचितअंग ॥ १६ ॥ अधिकहरतेभासैनाही ॥ जिउ
खगहरगगनकेमाही ॥ अतिसमीपतेनजरनआवै ॥ जिउनिजनैनलीलनहिपावै ॥ १७ ॥ इंद्रियहानहोइगुनजहां ॥ अंधवधुपना
हैरनहां ॥ मननहिसथितिजाकोहोई ॥ निकटपदार्थलखैनसोई ॥ १८ ॥ अतिसूक्ष्मपरमाणुजोई ॥ ताहिनलखैजगतेमेंको

संगनिषाय ॥ शुद्ध मलिन के भेद ते है सब जीव कुदाय ॥ ८२ ॥ यों वरंती भाव ते है सम्यक के भेद विचार ॥ ज्ञाता को उर धार है सो भव उतरे।
पार ॥ ८३ ॥ चौपई ॥ नर्क गाढ दुःख में मन मारी ॥ किउ कर जीव मारगे नाही ॥ विना मारग न हिय मो आवे ॥ तांते जीव बहु दुख भव जावे ॥ ८४
वेद हीन पुनि तिन के हि हीन ॥ ध्यान भूल मन ता को चीन ॥ तांते तां को हृद हि डारे ॥ सो वीजन न रहि ताहि विचारे ॥ ८५ ॥ नउ शति ता का धी
उदार ॥ भयो न तां ते तां परिहार ॥ कौन युक्ति सों तांहि निवारे ॥ तां ते न रन रहि ता हि विचारे ॥ ८६ ॥ पर मत दारत कें गन जोई ॥ वेद स्वा।
सभाव पायो है सोई ॥ बहुर ग्रचार्य सो विस्तार यो ॥ भाष्य शरीरिक माहि उचारयो ॥ ८७ ॥ नउ किहि भांति निवारे व्यास ॥ कीजे सो परका
श प्रकास ॥ सो परकार कहों अब तासों ॥ सावधान मन सुनियो मोसों ॥ ८८ ॥ पंचम सत्र ते ले व्यास ॥ सांख्य को मत कीयो निरास ॥ ते
सांख्य पुनि या विधि गावें ॥ निज परिपाटी भाव सुनावें ॥ ८९ ॥ गुण की साम्य अवस्था जोई ॥ ताम प्रधान कहावे सोई ॥ जब बहु साम्या।
अवस्था भागे ॥ जग को जनन तबे बहु लागे ॥ ९० ॥ सर्व सो महत्तत्व उपावे ॥ बहुर अहंकार त्रिधा उपजावे ॥ बहुरो भूत मात्रा जोई ॥ तो।
हृता भव उपजी सोई ॥ ९१ ॥ बहुरो उपजे निखिल विकार ॥ षोडश संख्या तां निरधार ॥ पांचो महाभूत परिचानो ॥ एकादश हि इंद्रिय उ
आनो ॥ ९२ ॥ मूल प्रकृति अविकृति हि ये ॥ प्रकृति विकृति सप्त लिये ॥ षोडश तां पुनि अहे विकार ॥ प्रकृति न विकृति पुरुष अ।
विचार ॥ ९३ ॥ या विध जग प्रधान उपावे ॥ नर को भोग मोक्ष दिखलावे ॥ ऐसे सांख्य भाव जानं ॥ तां मैं न हि पये परमान ॥ ९४ ॥ सा
म्य अवस्था माग न जोई ॥ करे प्रधान सु किहि विध सोई ॥ मागन को न बहि परवीन ॥ तां ते चेतन ना ते हीन ॥ ९५ ॥ नहि को चेतन
ता के संग ॥ पुरुष अपक है सो असंग ॥ मारी सहर ना चेतन संगा ॥ काय दे [illegible] संवेगा ॥ ९६ ॥ ऐसे दृष्टमा हि जिउ होई ॥ अदृष्ट माहि।
मानिये सोई ॥ दृष्ट विलक्षण कल्या जोई ॥ वेद विहीन वने न हि सोई ॥ ९७ ॥ दोहरा ॥ जैसे बछे के निमित्त अवे पय न न ते हृद ॥ चेतनता।
विन जिउ चले सागर को जल सुध ॥ ९८ ॥ दोहरा ॥ तैसे सन ना प्रधान य हि पुरुष भोग अमोक्ष ॥ कारण जग उर धार के करे न लागे दो
ष ॥ ९९ ॥ चौपई ॥ दूध अव ता में हे न पछानो ॥ धेनु प्रेम उर अंतर आनो ॥ सति चोसन चेतन व्यापारि ॥ निर्मान दे शा को चाहे वारि ॥ १०

उः स्वरूपता॥ ऐसे सा ज्ञान प्रगट दिखावें॥ वासदेव विन और न गावें॥ ४६॥ निमर ह्वा पुनि निमम ज्ञान॥ तामै निमय ज्ञाप हिवान।
जीव भिन्न ईश्वर उर धारे॥ नैयायिक कारण ताहि उचारे॥ ४७॥ बौद्ध कहै पुनि विज्ञान परकार॥ आपर्ग पनी बुद्ध ज्ञान सार॥ के परमा
णू के वज्ञान॥ के चित ऋम करे विख्यान॥ ४८॥ परिणामी ओ पुनि निमवलाने॥ सत्य स्थूल सगल को जाने॥ भिन्नाभिन्न जीव।
ने आहि॥ जग कारण जैनी कहि ताहि॥ ४९॥ सभ ज्ञाता महि नहि परमान॥ वेदवादी नैकिया प्रधान॥ कहू सर्व ज्ञ शून्य जा हये
वाग धेन वन ताको लहये॥ ५०॥ दोहरा॥ सर्वज्ञ ज्ञान उपासिये जग कारण जो होई॥ या विधि कारण सेवतो पहू वाने सोइ॥ ५१॥
परमाणु आदि जग कारण होई॥ जीव अदृष्ट संग मिल सोई॥ पुगल जग तरन हीं ते भयो और कछु कारण नहि दयो॥ ५२॥
सोरठा॥ कहियो मीमांसिक आप जग कारण वनाय कै॥ उर मै धरहीं पाप जो ताके पाछे चलहि॥ ५३॥ सवैया॥ के चित वेद।
प्रमान उरै पुनि कारण को निरधार सुनावैं॥ और न कारण को भव मै चतरानन एक सदे तव गावे॥ वेद न भासत मानके।
देर मवे रन की नर सा खे दिखावें॥ नम तिमान विचार करें भवगोपम तो नर ता हि न पावें॥ ५४॥ नराज छंद॥ स एक रूप देस
दास जीव भेद मानिये॥ अनेद मूर धार मैं न दुःख लेश आनिये॥ सज्ञान रूप धाम मैं समोह एक जानिये॥ प्रकाश आदि देह लो
स सत्र ताहि मानिये॥ ५५॥ चौपई॥ माया पुरुष ब्रह्म महान॥ तारी ने सभ हर या भान॥ यौ वेदांती प्रगट बखाने॥ रज सर्प जिउ हैत
पछाने॥ ५६॥ दोहरा॥ कारण माहि विवाद जिउ तिउ आतम मै जान॥ बहु विधि ताहि उचार है सो मैं करो बखान॥ ५७॥ चौपई॥ तन।
को आतम एक सुनावें॥ और इंद्रिय आतम गावें॥ एक कहे पुनि प्राण पछानो॥ और कहे मन आतम जानो॥ ५८॥ विज्ञान आत्मा।
के चित धारे॥ शून्य आश पुनि और उचारे॥ जड़ चेतन पुनि भाट वतायो॥ केवल जड़ नै या यि गायो॥ ५९॥ चौपई॥ मान माहि बहु भे
द विचारे॥ अणु मध्यम महान उचारे॥ [illegible] आदि बहु भेद उचारे॥ मूर्ख जन नहि विवेट विचारे॥ ६०॥ चौपई॥ अविद्या पुरुष करे सभ के
मै॥ यतः असंग सदा निरधर्म॥ सति चित आनंद आतम रूप॥ वेदांती भाखें ताहि अनूप॥ ६१॥ दोहरा॥ चेतन एक असंग जो माया।

मो ह प ध

रहेथे ॥ तहा प्रधान वे यकें भोग हू वे ते गई ॥ सदोष मोहि हे रयो लज्जा ध माने सो भई ॥ ४९ ॥ चौपई ॥ विकारी चेतन जो भव हो ई ॥ ०
रहो ब्बन को जाने सोई ॥ शुद्ध निरविकार न दि जाने ॥ न हि प्रधान जो ते जड माने ॥ ५० ॥ सो वेते ही न मोच्छ न भावे ॥ बुद्धि
वान तिहूं न हि ग्रभिलावे ॥ शुद्ध सो त्वै मे होइ नरक्त ॥ जो ते मो ह ते भयो विरक्त ॥ ५१ ॥ तव जो भोग मा त उर माने ॥ ता को है
त प्रधान वखाने ॥ सो इम कर के ग्रंगीकार ॥ हू खन भावे है वहु सार ॥ १ ॥ दोहरा ॥ ग्रव सो खो ते मत विवेक ने भोग न हि मोच्छ
कृत हान ते ग्राटि ले लागे वहु विध रोव ॥ २ ॥ चौपई ॥ शुद्ध ग्रकर्ता लो हि वता यो ॥ ग्रक्ता ता ही को शुनि गायो ॥ ग्रकर्ता जे भ
क्ता भव हो वे ॥ ग्रकृत लगे कृत सभ खो वे ॥ ३ ॥ खाय ग्रोर ग्रोरे त्रुमा वे ॥ ग्रोर जले ग्रोरे दुःख पावे ॥ या विध नियम न यो जग
माही ॥ नियम हेत को पायत नाही ॥ ४ ॥ दोहरा ॥ कैसो भोग ग्रसंग मे सके न को निरधार ॥ ग्रंथे कौन प्रधान को कहो सगा
ल विचार ॥ ५ ॥ चौपई ॥ इम ग्रविवेक ते भोग वखाने ॥ न हि को ग्रंथ प्रधान हि ठाने ॥ टपाल निज ग्रार्थ विन जग माही ॥ करे
कर्म इक्षा नेक कुनाही ॥ ६ ॥ काहू को ग्रविवेक दिगावो ॥ ता को इप सम मो दि वतावो ॥ ग्ररथ एक हूं सर परधान ॥ ता ही को जो
एक ज्ञान ॥ ७ ॥ ता को तम ग्रविवेक दिगावो ॥ नर को जो ते भोग वतावो ॥ ग्रथ्वा संस्कार तो को रे ॥ ता ही को ग्रविवेक दिवे
रे ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ ग्रथ्वा भेद ज्ञान को जो भव माहि ग्रभाव ॥ जो ग्रविवेक हि रूप है सोई कहो ग्रभाव ॥ ९ ॥ चौपई ॥ भिन्न पदार्थे
एक ज्ञान ॥ ससे सी गवत तो को मान ॥ ग्रमथ्या ख्यान न ते मत माही ॥ ग्रोर टोर को ग्रावे नाही ॥ १० ॥ ग्रमथ्या ख्याति रूप है ।
जो ई ॥ ग्रागे ग्रगट कहेंगे सो ई ॥ ग्रनिर्वाच्य जो एक ज्ञान ॥ मत वेदांती को पहिचान ॥ ११ ॥ ता को कहै ग्रविवेक वनाई ॥ इम
रे मत मैं पर है ग्राई ॥ ग्रभय पाश रज्जु गलते रे ॥ ग्रैसे मन महि ग्रावत मेरे ॥ १२ ॥ एक ज्ञान जो ते न हि होइ यो ॥ संस्कार को ता
ते लोइयो ॥ या विध दो नो पद निवार ॥ ग्रव तीसर को कहो प्रहार ॥ १३ ॥ ग्रभाव नाम तत्व तर जोई ॥ सा ख माहि मानियो न
हि सोई ॥ ग्रधिकरणा रूप ग्रभाव वखाने ॥ सो विवेक ते होइ न हाने ॥ १४ ॥ सोरठा ॥ ग्रान में ग्रौर प्रधाने है ग्रधिकरणा ग्रभाव ।

प्रयोजन

अंतरयामीसभमेसोई ॥ चेतनविनकर्तानहिकोई ॥ अंतरयामीवेदवखाने ॥ चेतनविनकर्तानहिमाने ॥ ५ ॥ तंत्रसातकगलल
शुपरकाश ॥ तमगुणतेहेआवरणविलाश ॥ सतोतेलवतरूपजावे ॥ तमपाश्यरसमग्रधहिविसावे ॥ ५२ ॥ रजगुणतेधारणको
होई ॥ चलनसभावकहीजोसोई ॥ आपसतोवहूचलनसरूप ॥ औरनचालेरजोअरूप ॥ ५३ ॥ यौतीनोमहिक्रियाभई ॥ सूक्षम
गलतातेनिरमई ॥ याविधसोअवस्थागाई ॥ जातेकामसरेनहिराई ॥ ५४ ॥ ऐसेजेवहिचलनसभाव ॥ सर्गहोइनहिकटेअ
भाव ॥ प्रलयहोइकदेजगनाई ॥ साम्यअवस्थापायतनाई ॥ ५५ ॥ तंत्रकर्मनतेअवस्थाहोई ॥ जामेहूलवनरहेनकोई ॥ पर्वसर्गा
भोगनकोजोग ॥ कर्मरचेवहूविधकेभोग ॥ ५६ ॥ देकरभोगक्षेहितपजवही ॥ प्रलयजगतकीहोवेतवही ॥ याविधसाम्य
अवस्थाहोई ॥ नहिदूखनयाभीतरकोई ॥ ५७ ॥ याहिसूक्ष्मकेकारणजेई ॥ लीनरूपप्रगटेनहितेई ॥ लीनकर्मपाकेपुनिजव
ही ॥ मिलप्रधानउपावेतवही ॥ ५८ ॥ दोहरा ॥ कर्मनियमतेनियमकोकहांवखानेकोई ॥ जगसृष्टेनहितेभयेतेजगउन्नरहो ॥
इ ॥ ५९ ॥ चौपई ॥ प्रथमप्रधानएकहीहोई ॥ पुनिमहत्तउपावेसोई ॥ क्रमहीक्रमसोतत्तउपजावे ॥ तातेकर्मजन्मकोपावे
६० ॥ कर्मनतेपुनिचेलप्रधान ॥ प्रमोअमप्राअपतामान ॥ उत्पतिपालनऔसंहार ॥ कर्मनियमतेहरविचार ॥ ६१ ॥ दोहरा ॥
अवसांखीतेमतविवेहूखनभाखोंओर ॥ जगतजन्मजेसगयोवंधमोखनहिठोर ॥ ६२ ॥ चौपई ॥ उदासीनहैपुरुषअसंग
प्रधानसाथभेटेनहिअंग ॥ ऐसेसांखनऋमैगायो ॥ वंधमोखकेहेतगवायो ॥ ६३ ॥ दोहरा ॥ विनासंगप्रकृतिजेवंधनक
रेवनाई ॥ मुक्तिहोइनरजेगणतिनभीवंधनपाइ ॥ ६४ ॥ चौपई ॥ प्रधाननामकैवल्यपछानो ॥ पेशलतेअतिपेशलमानो
अपपुरुषहेरेकवार ॥ वहुरनदर्शनदयेउदार ॥ ६५ ॥ मैकैवल्यनिहारयोमोहि ॥ यहिमोकोहैहूखनदोहि ॥ यद्यपि
रहेंएकप्रमाही ॥ तदपिदर्शनदेवेनाही ॥ ६६ ॥ दोहरा ॥ तिउहीपुरुषप्रधानकौयद्यपिसंगतिमाहि ॥ तदपिवंधनन
हिकेपुरुषविवेकीमाहि ॥ ६७ ॥ नाराजछंद ॥ प्रधानखानदोखकौयदासआपपेखये ॥ असंगभंगहीनरूपआपनोसले

मो ष ५

ताकोसेभगवतअवतार॥ कैसेलंबरनसोकीयोपदिसंकानहियार॥३२॥दोहा॥सांख्यवनायोजांदिनेसोभगवतहेअवतार॥ई
श्वनिरासनकीनतिहिदेतपरमपद्धान॥३३॥चौपई॥कपिलनामतेअहेसमान॥औरविलक्षणसगलपद्धान॥तिवशस्तल-
कपिलवडभाग॥ज्ञानपरमअरुभयेवैराग॥३४॥याविधवेदमहात्मभाखे॥करदमसुतकपिलउस्राखे॥सगरतनयपरतमा
जोई॥ताहिमहात्मभाखेसोई॥३५॥कपिलमाहिगतभावेजोई॥गोतममाहिपद्धानोसोई॥जोजोवेदविरुद्धवखाने॥तांतांसे
गतिअप्रसीजाने॥३६॥सवैया॥सांख्यमतोअरहेरह्योअववोगिमहैंरैवेनवखाने॥हेपरमेस्वरचालककर्तादिसनाहिप्रधानस्वतं
त्रहाने॥यादिकुलालसमानसदावहुकार्यकोरच्यनेक॥पद्धानोयाविधवेनवखाननतेस्अवहोतसलोमनतादिस्हानेम
३७॥चौपई॥देहेविहीनपरात्मयारो॥करणविहीनसदानिरधारो॥कार्यअवरुगणारखोजोई॥ताहिविहीनवखानोसोई॥३८
यत्नविहीनपरात्मयारो॥प्रधानादिकनिरवयवउचारो॥इणादिकतेहीनप्रधान॥सदाप्रतीरैताकोमान॥३९॥विनाशस्य
त्ववखावैकैसे॥नाहिउदाहरणपयेनेसे॥चेतनतत्रपकुलालपद्धानो॥तनुअरुकरणलादिकेमानो॥४०॥माटीआदिसव
यवरूप॥इणादिकजांमाहिअनूप॥तिनतेनोकरतादिनिहारो॥वहुरोरस्लमाहिनिरधारो॥४१॥चक्रादिमेअरेजवहो॥
वहुरोचरउपजावेनवही॥यादिग्रथंकोसगरेजाने॥नाहिविवादयाहिमेहाने॥४२॥तेभावयोपरमेस्वरजोई॥यादिकु
लालविलक्षणसोई॥प्रधानादिकजेईजगहेत॥भूईविलक्षणधरेनिकेत॥४३॥तांतेजगउपजावनजोई॥अरुअसंगति
ताभेसोई॥नत्र देहीनिजदेहहिअरे॥करणविनाहीवुद्धजनटेरे॥४४॥तेसहीपरमात्मजोई॥प्रधानादिकनिजअरेसोई॥
प्रधानादिकईस्वरकीदेहा॥जोउरअंतरमानीयहा॥४५॥शारीरीकर्ताजोभवमाही॥भोगफलसंसेकछुनाही॥जिउधा
दिजीवशरीरीहय॥पुण्यपापकोकारणपये॥४६॥भोगेताकेफलहिअपार॥तिउपरमात्मउरमेधार॥पुण्यपापउपजा
यजोई॥ताकोफलभोगपुनिसोई॥४७॥तांतेभयोसुजीवसमान॥वेधमोतअवतामेमान॥सहुदपावनहरदरगयो॥उता॥

निजकहियेप्रधान केतूकहियेदहक्का बहुत

करणविहीनपद्धानोसोई

नर

का ॥ होहि न ते मन ज्ञान मोख न को ई होइ जग ॥१५॥ तोटक छंद ॥ नहि ना सव वखान न हो तिन को ॥ जग है तव खान न है जि-
न को ॥ नहि चेतन ना सउ चारन है ॥ विध कौन इमोख सधारन है ॥१६॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ प्रधानं विनासी वखानो विचा-
रो इन्हे जीव वंधं मनं जाय यारो ॥ अनासी प्रधानं सदा तो हि मानी इनी वा न सोई विनासी वखानी ॥१७॥ तोटक छंद ॥ पुनि जी-
व विना सहि ते हि करे ॥ कहु मोख वधू पव को न गहे ॥ पति संग सती वहु मोह भई ॥ पति है रन सा सनि का रगई ॥१८॥ दो-
हरा ॥ नर इ पाल इ द्यान जो भाख्यो तो हि वनाइ ॥ सो श्रेसो नहि है इपो पश्हि तक मैं कमाइ ॥१९॥ दोहरा ॥ पर को दुःख निहा-
र के दुःखी होइ दयाल ॥ सुदुःख के परहार को करे कर्म वेसाल ॥२०॥ चौपई ॥ नहि गुवि वेक को धर्मी कोई ॥ जो हि ग्रधार जग
त मो होई ॥ एक गुह्य इस प्रधान ॥ एक ग्रसंग हि तो यज ज्ञान ॥२१॥ अविवेका हि जइ महि न हि होई ॥ असंग माहि कुहे न-
हि कोई ॥ जिउ या धर्मी नहि निरणोत ॥ तिउ विवेक को पारा चीन ॥२२॥ सा ग्रव धर्म कौन को होई ॥ धर्मी ता हि वने न हि होई ॥ ए-
क ग्रसंग हि तो यज इह यो ॥ ता तो माहि विवेक न पयो ॥२३॥ विना विवेक वने नहि मोख ॥ कैसे जीव त्यागै सो ख ॥ न न वा पवुद्धि-
को धर्म पछानो ॥ ग्रौर न धर्मी ता को मानो ॥२४॥ ता ईहै यज न न को मोह ॥ ता ते जीव त्याग हो वहु ॥ नहि सम्पक पइ मनतो त-
मारो ॥ जउ ता है तना हि मा धारो ॥२५॥ विवेक रहो ई वुद्धि के माही ॥ वंधन हरे जीव के जाही ॥ सो कहु ग्रात्म संग ति पाप ॥ उतो व-
न संग हि तो हि मिटाइ ॥२६॥ प्रथम मे जीव सम संग हि भयो ॥ ग्रसंग मि ज्ञान त माये गयो ॥ हि तीये करे न काहु मोह ॥ प्रथ वा ह-
रे संग लन रोह ॥२७॥ यहि नखंध यह ही भव श्रृंका ॥ याहि विवेक नहि है री श्रृंका ॥ त के गा ढ सका यो जाई ॥ भई निरास सांत-
मन सोई ॥२८॥ ईख ण एवं सइ ह व खान ॥ वे द करे सं ती मन ज्ञान ॥ यो ने हु इ हमारे जे ई ॥ कता पुरुष व खा ने ते ई ॥२९॥ तंत्र-
का पल मन जे ग्र नुसरे ॥ ते सर्व तता हि उ चरे ॥ ता ते ता हि व खान यो जोई ॥ सा चो न र उर धारे सोई ॥३०॥ सिंख व खान यो सर्व-
ता न ॥ इह ग्र ईत समान पछान ॥ ते भी तिहि सर्व त व खान ॥ ता ही को उर कि उ न हि माने ॥३१॥ दोहरा ॥ कपिल व ना यो सा-

दोजीवईशतेभयो ॥ ४९ ॥ कलालसमानदेहकेमानै । हवनयाविधिकेपहिचानै । कहतनिधिपरमात्मजोई । दुःखदेत
जगरचेनसोई ॥ ४२ ॥ सवैया ॥ हेकहलानिधिएकसनंतनसत्तगविहीनपरमातमजानो ॥ जीवनदुःखनिदानसदाजगना
हिरचेउरग्रंतरग्रानो ॥ ग्रोरग्रधीनवखानततोहिसईश्वरकोग्रवजीवपछानो ॥ ईशहिप्रेरकग्रोरकहेग्रवग्रोरनग्रो
रवखानो ॥ ५० ॥ चौपई ॥ तातेभयेग्रनवस्थाभारी ॥ जोकिनदूतेजायनटारी ॥ ग्रहजेतोहिसनंतनगावो ॥ वद्रहोभवकोहो
नवतावो ॥ ५१ ॥ विनानिमित्तविलमउपजावे ॥ सोकैसेजगदोषकहावे ॥ दुःखलायप्रपंचउपजायो ॥ दोषग्रग्रमपरमेश्व
रग्रायो ॥ ५२ ॥ देवनकोवहुसखीउपावे ॥ नरकमाहिजनदुःखदिखावे ॥ सखीदुखीमानवउपजाय ॥ विषमनिरचिता
मदोषहुयग्राय ॥ ५३ ॥ दोलखग्रकृग्रनीश्वरहोई ॥ तातेभयोग्रनीश्वरसोई ॥ कलेसादिकतेजोग्रसंग ॥ इत्यादिकलक्ष
णतेभग ॥ ५४ ॥ भयोनिहारेकाहेनाही ॥ प्रवेग्रपरचितारेनाही ॥ नतुजगप्राणीकर्मग्रपार ॥ पुण्यपापहैवहुप्रका
र ॥ ५५ ॥ सोजाकेजाविधकेपावे ॥ तांप्रतितेसेतनउपजावे ॥ सखीदुःखीकर्मनग्रनुसार ॥ होवैसगलजीवसंसार ॥ ५
तातेइहनतायहमारे ॥ काहेतांप्रतिदोषउचारे ॥ कर्मग्रपेक्षरचेसंसार ॥ जोपरमात्मतोउरधार ॥ ५७ ॥ ग्रन्योन्या
श्रयतादोख ॥ ईश्वरमाहिनहोवेमोख ॥ कर्मग्रचेतनग्रापनचले ॥ ताकोमायचलावेभले ॥ ५८ ॥ तायचला
एकर्मग्रपार ॥ फलउपजावेयोवुधधार ॥ वहुतोकर्मग्रेरदेजैसे ॥ इहउपावेईश्वरतेसे ॥ ५९ ॥ याविधईश्वरकर्म
ग्रधीन ॥ परसपराश्रयदोषउरचीन ॥ नतुप्रथमसर्गकर्मकोपावे ॥ तांसोउतरसर्गउपावे ॥ ६० ॥ पूर्वसर्गकर्मपुनिकेसे
हुएनतांहिविवेपुनितेसे ॥ सर्गकर्मकीमालाजोई ॥ ग्रनवस्थापरहारीसोई ॥ ६१ ॥ नतुवीजांकुरमालाजेसी ॥ हो
इनाहिकीमालातेसी ॥ वीजांकुरकीमालाजोई ॥ मानप्रत्यक्षदिखाईसोई ॥ ६२ ॥ तांमालामोनहिकोमान ॥ का
हेताकोकरेवखान ॥ विनप्रमाणतमानितोग्रेसा ॥ ग्रंधाकुपपछानेजेसा ॥ ६३ ॥ ग्रहपुनिईश्वरचालकजोई ॥ ता

मो॰ तत्त्व प्र॰ ८

हिसंबंधकह्योकोहोई ॥ अपृथकसंबंधनमानियोतोही ॥ साचोकौनवतावोमोही ॥८४॥ निरावयवअक्रियप्रधान ॥ तै-
सेहीपरमात्मज्ञान ॥ ताकोनाहिसंयोगहिहोई ॥ निरावयवअक्रियदेहोई ॥८५॥ प्रश्नछिद्रदेनोतेमाने ॥ केसेताहिसं-
योगवखाने ॥ प्रकृजेतोहिसवयववखानो ॥ क्रियावंतितउरभीतरमानो ॥८६॥ तोसवयवसक्रियदेजोई ॥ घटसमप्रहे-
विनासीसोई ॥ तिउप्रधानपरमात्मयाते ॥ भयेविनासीयोउरधारे ॥८७॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ गुणीनप्रधानेगुणीईशनाही
समवायकेसेवनेदोनमाही ॥ नहीव्यक्तिदेशंजातियाजातिमाने ॥ समवायकैसेसताकोवखाने ॥८८॥ चौपई ॥ गुणो-
नविलक्षणदेनोहूये ॥ नाहितदात्मताकोपये ॥ विनासंबंधचलावनजोई ॥ ससेसींगसमजानोसोई ॥८९॥ तंतुवि-
नासंबंधचलावनजोई ॥ ससेसींगसमकैसेहोई ॥ कृपायसकोतुंबकप्रेरे ॥ विनासंबंधसकलजनहेरे ॥९०॥ लोह
चलावनतुंबकमाही ॥ विनासंबंधवनेवहुनाही ॥ जोवहुविनासंबंधचलावे ॥ अतिप्रसंगभवभीतरआवे ॥९१॥ जे
तोलोहअहेभवमाही ॥ दूरचलेसभनाछिनमाही ॥ लोहविहीनजगतसभहोवे ॥ निजव्यवहारसगलजनखोवे ॥ ११
तंतुसंबंधवतावोकौन ॥ भांतोत्तनोअहेवहुजोन ॥ निरावरणहैसंनिधजोई ॥ नाहिसंबंधपछानोसोई ॥९२॥ तंतु-
तुंबककोसनतउचारे ॥ प्रकृजेग्रथकारहेभारे ॥ प्रसंगहोइकेप्रेरजोई ॥ तामेकहेउदाहरणसोई ॥९३॥ तोनेहहुवि-
हहुवखानयो ॥ जोसंबंधनाहिकोमानयो ॥ संयोगसंबंधआदिहेजेते ॥ वहीनिषेधकरेनतेते ॥९४॥ याहिसंबंधनि-
षेधनाही ॥ अतिप्रसंगहहरउरमाही ॥ संनिधसतासगलउचारे ॥ तोनयाहिसंबंधनटारे ॥९५॥ तंतुवहीसंबंधहमारे
हेये ॥ प्रेरकताअनताहिकोपये ॥ निरंशतिमेसंनिधहेजोई ॥ तेमनमाहिवनेनहिसोई ॥९६॥ जेसंनिधवहुनिरवखा-
नो ॥ सदाइहुप्रलयनहिमानो ॥ सोतवनिरासहूवनहैजेहै ॥ प्राणनिविलरहाअवतेहै ॥९७॥ प्रकृजेकहेअनिरवा-
नाय ॥ कारणताकोमोहिवनाय ॥ एकपरणमहितोप्रधान ॥ तोमहिकारणकोनवखान ॥९८॥ वदेनकारणया ८

मकोई ॥ निरावयव अक्रिय है दोई ॥ तजीय जीव जो है तउ चारो ॥ निरावयव अक्रिय वहु धारो ॥ १० ॥ नंनु तम मेरमत ईश्वर जो
ई ॥ कि हि विध सहूउ पावै सोई ॥ निरविकार परमात्म जोई ॥ सो धिष्टान को न विध होई ॥ ११ ॥ मांया अग्नि वीच है जोई ॥ ग्रहे
अनंत शक्ति मन सोई ॥ ताहि सवल परमात्म जोई ॥ निखिल प्रपंच उपावै सोई ॥ १२ ॥ स्वमत इष्ट को जिउ परमाता ॥ तिसे अधि
ष्टान ईश आख्याता ॥ स्वमत समान सुहीउ पजावे ॥ को विस्वेश्वर गन लखै न गावे ॥ १३ ॥ या हि यत्न उपाय न जोई ॥ वार निरा
सग्रंन मे होई ॥ युक्ति उक्ति जे नीकन्नु श्रोता ॥ भावि गे सभ ना ही होता ॥ १४ ॥ नंनु जिउ को विद्वेर वनायो ॥ सवल ब्रह्म तै
कारण गायो ॥ तिउ हीं ईश ब्रह्म मानो जोई ॥ मम आगम मे भाखा सोई ॥ १५ ॥ ताहि विवेभाखे यो प्रधान ॥ ताही को उरकार
ण मान ॥ नहि ते आगम स्वतं प्रमान ॥ वेदविरुद्ध ताहि प्रहिचान ॥ १६ ॥ वेदविरुद्ध मान जे होई ॥ बौद्ध माहि प्रवराधन
कोई ॥ वेद पक्ष अहि तीव नावे ॥ ते आगम मना ताहि गावे ॥ १७ ॥ जीव ईश को भेद निवारे ॥ तत्वमसी अभेद उचारे ॥ ते आगम
मे भाखे यो भेदु ॥ तां ते मूल नताको वेदु ॥ १८ ॥ नराजछंद ॥ ससं [illegible] वयोग श्रे ववेद हीन जो वखानयो ॥ प्रधान देतह इष्ट को
सजीव भेद मानयो ॥ सजीव ईश भेद मान मूल जो उचारही ॥ निहार वेद सार को विरुद्ध सो निवारही ॥ १९ ॥ सुवेद मूल
जो कहै न ताहि को निवारही ॥ असंग जीव चेतनै सुव्यापकं उचारही ॥ सदा अदृष्ट योग जो पनै जसो उचारहै ॥ तिसे नि
षेधना करै विचार चित्त धारहै ॥ २० ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ निषेधं प्रधानं रहे ज्ञान लीजे ॥ रहे अग्र जोई स आगम कीजे ॥ मा
ह्वा वाक्य अर्थं जहां मेव खानो ॥ सजीवेश भेदं तहां हान जानो ॥ २१ ॥ चौपई ॥ या हि तै रक तु अवसर पाय ॥ सांख्य मतमस्य हु
वोलयो आय ॥ वासुदेव समस्तु उपाई ॥ नारद पंचरात्रि मे गाई ॥ २२ ॥ वासुदेव इक ब्रह्म निरंजना ॥ तां को निशदिन सेवे
संता ॥ ज्ञान स्वरूप निरंजन जोई ॥ परमार्थ तत्व एक पुनि सोई ॥ २३ ॥ प्रकृति निमित्त उभय स्वरूप ॥ वासुदेव ही अहे अरू
प ॥ आत्म चार प्रकार वनायो ॥ चतुर व्यूह तां ते कहलायो ॥ २४ ॥ वासुदेव इक व्यूह पछानो ॥ द्वितीय संकर्षण नाम न मे ग्रा

पतंजलिशास्त्र

नो॥ तत्तीयप्रफल्लभयोजगमाही॥ अनरुद्धनामचौथोपुनिग्राही॥२५॥ वासुदेवपरमात्मजानो॥ संकर्षणनामजीव।
पहिचानो॥ प्रद्युमननामममनतीकेगायो॥ अनरुद्धनामहंकारबतायो॥२६॥ तिनमैवासुदेवहैजोई॥ परमप्रकृति
पछानोसोई॥ इतरसंकर्षणालौहैजेते॥ कारजरूपपछानोनेते॥२७॥ प्रभतेजीवसंकर्षणभयो॥ मनप्रद्युमनतानै।
भवलयो॥ मनतेलीनोभवहंकार॥ अनरुद्धनाममनाहिकोधार॥२८॥ याविधरूपउपाईसारी॥ वासुदेवभक्तभयहारी॥
जीवजगतमैग्रायोजोई॥ वेदपढ़ेहरिसेवेसोई॥२९॥ योगकरेवंदनपुनिधारे॥ अज्ञानताकोवहुविस्तारे॥ शतवर्षलोसे
वेजबही॥ होहिकलेशक्षीणसभतबही॥३०॥ वासुदेवकोप्राप्तिहोवे॥ दुःखअनेकअपनेखोवे॥ है परमात्मतेवह।
निआरो॥ सेवकताकासदाविचारो॥१॥ ऐसेमातनमत्यवखाने॥ अपनेपक्षमीदृढकरमाने॥ याहिपक्षमैहखनसार॥
दृढवखानेसुनोनिरधार॥२॥ जीवजन्मभाखयोतेजोई॥ प्रथमवनेनहिसम्यकसोई॥ जन्मवानभवभीनरजोहे॥ घट
जिउसगलविनासीसोहै॥३॥ जीवविनासीजानेभयो॥ मोक्षपक्षपवनेरोगयो॥ कार्यकारणयावेजबही॥ होवेलीनरा।
हेनहितबही॥४॥ तिउहीजीवपरात्मपाय॥ होवेलीनप्राप्तिमिटजाय॥ यहपुनिवासुदेवहैजोई॥ चेतनरूपबखानयो।
सोही॥५॥ चेतनग्रहेपरणामविहीनो॥ साचोउपादाननहिचीनो॥ जोपरणामीचेतनहोई॥ तौरसमानविनासीसोई॥
६॥ यहिहैपक्षतमारोजोई॥ मूलकहारपछानोसोई॥ विवर्तवादसुनहिउरमेमाने॥ किहिविधचेतनहेतबखाने॥७॥ अ
रुपुनिजीवउपायोजोई॥ नामसंकर्षणभाखयोसोई॥ उपावतनेपूर्वेवहुयाहि॥ अथवानयोउपायोनाहि॥८॥ उपाव
नतेजेपूर्वेहोई॥ केसेताहिउपावेसोई॥ ताकोसताप्रवेहोई॥ ताउतपतिकेरनहिकोई॥९॥ तामेकारणहोरव्यर्थ॥ लहै।
ततहिविविककुग्रंथ॥ द्वितीयपक्षमैहखनजोई॥ भाखेदृढसलोतमसोई॥१०॥ नूतनजेतउपायोजोई॥ ताकोपुण्यपा
पनहिहोई॥ विनापुण्यपापनहिदेह॥ परहैपुण्यपापकोगेह॥११॥ सुखदुःखकोभोगअपार॥ देहविनाकेसनिरधार

नीलकंठियेमली प्रकार

भोगविनाबंधननहिहोई ॥ बंधनासमोक्षपुनितोई ॥ २ ॥ भोगमोक्षतविनसेवनजोई ॥ ईश्वरमाहिकरेनहिकोई ॥ ईशउपासन
भावेजेई ॥ भयेग्रथयथार्थयवनेई ॥ ३ ॥ पुनिविधकोइहवनगनप्रायो ॥ जीवजन्मकहुकोतेगायो ॥ तंतुविस्फुलिंगदृष्टांतदि
खायो ॥ जीवजन्मवेदमेगायो ॥ ४ ॥ विस्फुलिंगदृष्टांतहजोई ॥ जीवजन्मनहिभावेसोई ॥ कार्यकरणसंघातप्रकार ॥ उपजे
जीकर्मनअनुसार ॥ ५ ॥ वहीउपाधिजीवकीमाने ॥ उपाधिकआविर्भाववखाने ॥ याहीतेश्रुमेतरजोई ॥ निषेधजीवजन्म
कोसोई ॥ ६ ॥ सोयदिखावनअजरअमहाना ॥ अजरअमरअमृतपदिखाने ॥ याविधश्रुतिअनंतउचारे ॥ जीवजन्मकोदूरनिवा
रे ॥ ७ ॥ सत्रकारव्याससहजोई ॥ जन्मअसंभवभावेसोई ॥ तातेकाहुजन्मउचारयो ॥ सत्रकारनिरदूरनिवारयो ॥ ८ ॥ तथाचसूत्र
उत्पत्त्यसंभवात् ॥ अहउपनिजीवजन्महजोई ॥ गीतामाहिनिषेधयोसोई ॥ उपजेजीवकदाचितनाही ॥ तातेमरणनाहियामा
ही ॥ ९ ॥ अजअहनित्यजीवपहिचानो ॥ शाश्वतअयंपुराणपछानो ॥ योनिजवासदेवहीगायो ॥ साचोवहुकेतोहिवता
यो ॥ १० ॥ वासदेवकोकृष्णवखानो ॥ किहविधसोवततोहिपछाने ॥ तातेवासुदेवजगगाई ॥ साचीवातपछानोसाई ॥ ११ ॥ पुन
श्रुतिअहसत्रकार ॥ वोयावासदेवनिरधार ॥ जीवजन्मपहिपछतमारो ॥ चहुविरुद्धसदानिरधारो ॥ १२ ॥ अहउपनि
जीवसंकर्षणजोई ॥ कैसेमनउपजावेसोई ॥ देवरतभवकर्तजोई ॥ करणऊदारजनेनहिसोई ॥ १३ ॥ जीवतमारेकर्ताहा
ये ॥ मनहीकरणताहिकोपाये ॥ तातेमनउपजावनजोई ॥ शक्तिहीनपहिचानोसोई ॥ १४ ॥ मनकोजीवउपावेजवही ॥ कु
रणांतरकोचाहतवही ॥ सोकरणांतरजीवउपायो ॥ अथवाश्वतासिद्धवहगायो ॥ १५ ॥ प्रथमपक्षअनवस्थाजोई ॥ करण
तरविनवनेनसोई ॥ द्वितीयेजोसोमनउपजायो ॥ वहीकरणमनमनमेंआयो ॥ १६ ॥ प्रथमकरणजीवकोजोई ॥ मनइति
नामकहीजेसोई ॥ स्वतासिद्धकरणांतरजोई ॥ जोउरमेमनमानेसोई ॥ १७ ॥ तोअवकाहेजन्मवखाने ॥ स्वतासिद्धताहि
कोमाने ॥ नतुकरणांतरचाहनाही ॥ स्वतंत्रजीवउपावेनाही ॥ १८ ॥ नहिअनवस्थायामेसोई ॥ औरनहूषनयामेकोई ॥

अवरकहूवनआरेआवे॥ मनकोकल्पनदूरमिटावे॥ ३०॥ करणरहितजीवहैजोई॥ जोसमर्थकार्यकोसोई॥ तोमनकल्पन
तोहिअर्थ॥ मनतिउजीवजनेसभअर्थ॥ ३१॥ तातेमनउपजावनजोई॥ अहेअसंगतिजानोसोई॥ याहीतेभवसत्रकार॥ याहि
पतकोकरेप्रहार॥ ३२॥ तथाचसूत्रं॥ नचकर्तृकरणं॥ कर्ताजीववालानयोजोई॥ तातेकरणमनोनहिहोई॥ यहिसत्रकोअ
र्थपछानो॥ तातेजीवहेतननहिमानो॥ ननुसंकर्षणादिजीनहैजेई॥ नहिजीवाहिपछानोतेई॥ वासुदेवसमईस्वरजानो
तानस्वरूपसगलपहिचानो॥ ३३॥ समयेस्वयंसमंवलजानो॥ तेजशक्तिसमताहिपछानो॥ चारहईस्वरूपसमान॥ वा
हूणोपकव्यवस्थाजान॥ ३४॥ वासुदेवसमतीतोजेई॥ उपजेवासुदेवतेतेई॥ ऐसेहमरेअंगीकार॥ जीवजन्मनहिकरेउ
चार॥ ३५॥ कर्षीकाशाअवलेवनजेसो॥ यहिसिद्धांतनमारोतेसो॥ वारेईशवतानेजोई॥ प्रथमअसंगतजानोसोई॥ ३६॥
नराजछंद॥ स्ववासुदेवपकहीअनेककाजकोकरे॥ नयासमयोरईशकोविचारचिह्नमेधरे॥ अजागलेयनेसमंनुओरईं
प्रमानिये॥ सुचारकोनकाजतोहिभाविचेववानिये॥ ३७॥ भुजंगप्रयातछंद॥ चहूईशमानेसुनोवातमेरी॥ निषेधतासप
कंगईवाननंशैस्वचारोनिषेधताभयेईशजाते॥ नहीजेनिषेधतागहेताहिकाने॥ ३८॥ चौपई॥ परमार्थतत्वपकशनिसोई
यहिभीवातसुनोअववोई॥ चारोईस्वरूपवतानो॥ परमार्थतत्वचारहीमानो॥ ३९॥ तमरेमतईस्वरहेजोई॥ परमार्थ
तत्वकहीजेसोई॥ अहशुनिवासुदेवसमजेई॥ उपजेकोनप्रकारहिनेई॥ ४०॥ भुजंगप्रयातछंद॥ यथावासुदेवानथाते
पछानो॥ समईशजानेसुआपेवतानो॥ जनेताहिकैसेनहीजानुजाईं॥ नहीशक्तिकाईसुतामेवताई॥ ४१॥ चौपई॥ चारो
केगुणसमहिवताने॥ अतिशयताहिकिसूमहिमाने॥ अतिशयशक्तिवानहैजोई॥ जगतमाहिकारणसोहोई॥ ४२॥ प
चात्रिसिद्धांतीजोई॥ तारतम्यनहिमानेसोई॥ ज्ञानपेस्वर्यशक्तिहैजोई॥ ताकोभेदनमानेकोई॥ ४३॥ आत्मचारप्रका
रवतायो॥ चतुरव्यूहतानेकहलायो॥ याभीतरकछुअहैविचार॥ सोसुनिपेतोकेनिरधार ४४॥ चतुरसंख्याभावतो

जोई ॥ के मेवा सदेव मंदिर होई ॥ एक अनेक सुद्ध सम सोई ॥ वासदेव बिन और न कोई ॥ ४५ ॥ ब्रह्मादि चिंटी लौ जेते ॥ भगवता
स्वरूप ह्वानो तेते ॥ आत्म सर्व प्रकार बतायो ॥ सर्व स्वरूप तां ते कहलायो ॥ ४६ ॥ स्मृति वेद पुरानन माही ॥ भगवत बिन कछु मा
नियो नाही ॥ वासदेव ही सर्व सरूप ॥ बहु बिध भयो सु एक अनूप ॥ ४७ ॥ ऐसो विचार अंतर धरो जोई ॥ सार ग्रंथ प्रगट अब होई ॥ १
जीवादिक उपजावन जोई ॥ विद विरुद्ध निगम सम सोई ॥ ४८ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ निमित्त उपादान ईश बखाने ॥ निगम सेन सोई भ
ली भांति माने ॥ घनो वेदनी के सु ग्रंथ उचारे ॥ धरे कौन भ्रम जंतु को निवारे ॥ ४९ ॥ चौपई ॥ ग्रोर उपासन भाव घ्यो जोई ॥ मा
नेसी सुधार हम सोई ॥ वेद पुरान ग्रहै भव जेते ॥ ईश उपासन भावें तेते ॥ ५० ॥ दृढ हमारे वही जे ई ॥ ईश उपासन भावें तेई
सो ही वस के तलो जेते ॥ ईश उपासन भावें तेते ॥ ५१ ॥ दोहरा ॥ तंत्र उपासन जो कह्यो साची वात प्रमान ॥ उपादान पुनि
ईश को के सकी न बखान ॥ ५२ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ निमित्त उपादान ईश उचारे ॥ जु भाखे सु भ्रम न कोई निवारे ॥ इसो जो ब-
खानो नहीं चित्त आवे ॥ यतो तर्क वेदान्त सधी रे बतावे ॥ ५३ ॥ चौपई ॥ जिउ नैयायिक वैन उचारे ॥ सो सु नियामी के निरधारे ॥ नि
मित्त हेत ईश को गावे ॥ उपादान परमाणु बतावे ॥ ५४ ॥ ता मे युक्ति कहे इक भारी ॥ को इन सके तदा हि निवारी ॥ मृत्त घट वि
न घट देखे सारे ॥ ईश युक्ति नहि को ऊ निहारे ॥ ५५ ॥ उपादान जो को जो होई ॥ ता हि युक्त कार्य सो होई ॥ ऐसे आमि सगल ब-
खाने ॥ ऐहु कोन जा या हि न माने ५६ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ भई सृष्टि सारी रची ईश जैसी ॥ ऐह रीत जैसी कहो आन तैसी ॥ प्र
वाधं स निस्य तथा चाहि जानो ॥ कृती तां हि की और तथा नित्य मानो ॥ ५७ ॥ चौपई ॥ श्रुति दृष्ट सगल जग जोई ॥ ता हि संयोग
करे प्रभु सोई ॥ मिलत श्रुति परमाणु साथ ॥ धरणी आदि रचे जगनाथ ॥ ५८ ॥ दोहरा ॥ नैन पारक णु भुगत या ऐसे भावें ता
न ॥ युक्ति हीन उर हेरके नहि मानै सो ज्ञान ॥ ५९ ॥ चौपई ॥ ज्ञान नित्य नैसे निहि चाहि ॥ यत्न नित्य ईश मे आदि ॥ कार्य नि
ति लस दा न व होई ॥ प्रलय जतन कहे तनहि कोई ॥ ६० ॥ सवैया ॥ फलन को फल को पुनि ने प्रभु सको न करे अब देहन को।

ई ॥ ईशाअधीनसमरथिकही अरु तां गुणनिषमनेतमसोई ॥ नाहिविलंबसईशाकेरे पुनिसीतसउष्णीत्वमकीगतिखोई ॥ ना
हिसहायकओरकेरे पुनिनेपुकरेभवभीतरजोई ॥ ८१ ॥ चौपई ॥ सहिकारीओरईशाकेमान ॥ हावनकोजेकरेपरदान ॥
तामेहूवनप्रगटवखानो ॥ तमनीकेउरअंतरआनो ॥ ८२ ॥ सहिकारीतोकेनिमतवखानो ॥ प्रथवातोहिअनिमत्तमानो
सहिकारीनिमतसदाहीहोई ॥ प्रनिमतमाहिहूवनपुनिसोई ॥ ८३ ॥ दोहरा ॥ जेसहिकारीकोजनेसहिकारीविनसोर ॥ भा
वरचनामेहरउरतेसेकिउनहिहोर ॥ ८४ ॥ चौपई ॥ सहिकारीमहिसहिकारीओर ॥ कहैप्रनवस्यालहेनहोर ॥ अरूपुनिरई
स्वरूपजाजोई ॥ चितयस्वरूपकहीजेसोई ॥ ८५ ॥ सिसस्ताओरविरस्तादोई ॥ संहारेस्तातीसरपुनिहोई ॥ सम्मसंकल्पईशाहै ।
जोई ॥ सुगुणपरसफलकरेत्रपसोई ॥ ८६ ॥ सरजनपालनओसंहार ॥ सभकार्यकोपुगपदधार ॥ कर्मथ्यवस्याहेतजोई ॥ प्र
थमनिरासकोपेरमसोई ॥ ८७ ॥ प्रकृयअनुमानिकरईस्वरजोई ॥ उभयप्रकारहेतसोहोई ॥ भूमादिककार्यहेजोई ॥ प्रकृति
निमित्रपकतेहोई ॥ ८८ ॥ कार्यतहींहेतवखानो ॥ करणनाभतेतसमजानो ॥ जोकुलालरदृष्टांतवखाने ॥ सुइनिमित्रई ।
णकोमाने ॥ ८९ ॥ नराजछंद ॥ कुलालकेसमानतोसदेहतोमानिये ॥ गहेपराणजोहिसोसहायकोवखानिये ॥ कुलाल
केसमानसोअनित्यवोपहोवई ॥ सदापराणनापिलेकवीकवीसुजोवई ॥ ९० ॥ चौपई ॥ अनिमत्तानईस्वरप्रवहोइयो ॥
निमत्तानमततेरोतोइयो ॥ सागकुलालललेयमृदजाल ॥ लपउपजावेजटकीमाल ॥ ९१ ॥ दोहरा ॥ वहुरोपावेभोगकोसोग
कुलालहिजोई ॥ कर्मअधीनेभोगसोईशाययानहिसोर ॥ ९२ ॥ चौपई ॥ जिउईस्वरपरमाणगहे ॥ सर्गउपायभोगतिउलहे ॥
भोगहोएकर्मनअधीन ॥ करेकर्मनहिईस्वरचीन ॥ ९३ ॥ दोहरा ॥ निमित्रहेततोईशकोभईनेकतेहान ॥ अवपरमाणहेत ।
तानकेहीनपहिचान ॥ ९४ ॥ चौपई ॥ वैशेषिकसमपदार्थमाने ॥ भिन्नभिन्नतिहिनामवखाने ॥ सोसंक्षेपतेकरोउचार ॥ का
करंतसमअधिकविचार ॥ ९५ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ द्रव्यंगुणंकर्मसामान्यजानो ॥ विशेषंसमवायषष्ठोपछानो ॥ अभावंच

हौ मानतं संख्या उचारं ॥ तैसो धारि मैं संग्रसारं विचारं ॥७६॥ चौपई ॥ तो परिमाणी योपरिचानो ॥ यामै भेद न रंच कमानो ॥ क्रिया
वंत परमाणू माने ॥ तिनहीं ते सभ जगत बखाने ॥७७॥ पुनारंभक कार्य बहु काल ॥ सगुण धार रही गुणमाल ॥ बहुरसृष्टि
कालके माही ॥ जीव मांहि ग्रहष्ट जेप्राही ॥७८॥ तिनहीं के प्रभु होइ अधीन ॥ निज रछ्या जगजन प्रवीन ॥ परमाणू को श
भयो मिलाप ॥ कार्य जनन यो सहज सभाय ॥७९॥ दुहूं मिले ते भयो द्वियणुक ॥ तीन हि ग्रणु ते भयो त्रियणुक ॥ यावि
धक्रम करजगत बनाय ॥ कारण गुण कार्य गुण जाय ॥८०॥ परमाणू माहि द्विव है जोई ॥ द्वियणुक परिमाण ग्रंभक
सोई ॥ द्वियणुक माहि त्रिसंख्या जोई ॥ त्रियणुक परिमाण ग्रंभक सोई ॥८१॥ परमाणू अणु परिमाण हि जोई ॥ ता हि ग्रं
भक माने सोई ॥ अणु परिमाण न अजो होई ॥ अणु ते अणुतर होवै सोई ॥८२॥ परमाणू निरावयव ते माने ॥ सदा अना
सी ताहि बखाने ॥ यहि प्रक्रे उरना की माने ॥ तामै हलन प्रगट पछाने ॥८३॥ सवला सिद्ध क्रिया है जोई ॥ कार्य हेत हो
इ न हि सोई ॥ जेता को पुनि हेत बखानो ॥ कार्य सदा होय मत हानो ॥८४॥ पुनारंभक कार्य बहु काल ॥ सगुण धार रही
गुणमाल ॥ यहि मत ते रोम भयो विनासी ॥ ताते सहि सदा प्रकासी ॥८५॥ तां ते कार्य कारण जोई ॥ भा बो क्रियाको ते
होई ॥ पत्वका ने इश्वर है जोई ॥ तो हि संयोग हेत निरहे होई ॥८६॥ अथवा कर्म वदाम जोई ॥ ताहि संयोग हेत निरहे होई
उत मूर्ति द्रव्यान्तर जोई ॥ ताहि संयोग हेत निरहे होई ॥८७॥ ईश संयोग हेत न हि होई ॥ प्रथम निरास कीयो है सोई ॥ कर्मवा
न जीव है जोई ॥ ताहि संयोग हेत जे होई ॥८८॥ प्रलय काल होइ जगसारो ॥ तैसो जीव सदा निरधारो ॥ परमाणु ते प्रलय
मे ग्रोरा ॥ मूर्ति द्रव्य लहे न हि ठोरा ॥८९॥ न हि तन को नो अंगीकार ॥ कार्य के सेवने न हार ॥ यथा कथंचित क्रिया होई ॥ तो
निरवयव मिले न हि ठोई ॥९०॥ एक देश संयोग बखाने ॥ निरावयव ताहु है हाने ॥ सर्व संयोग बखानो जब ही ॥ एक दे
शामत जावे न ब ही ॥९१॥ निरछिद्र एक एक के माही ॥ हि ती प्रवेश करे यहि नाही ॥ विना प्रवेश न सर्व संयोग ॥ ताते सो दे

सो. त. प. १०

मानन योग ॥ ४२ ॥ दोहरा ॥ संकृत संयोग जो ग्रतु भव कुछन होइ । नाश विभाग सु मरेहरउ रमाने नाही कोइ ॥ ४३ ॥ चौपई ॥ तंत्र
ते तहि तो ग्रवछेदक जोई ॥ कल्पित देश वनावे तेई ॥ कल्पित देश वान ग्रण जोई ॥ ग्रदेश संयोग वतिहि सोई ॥ ४४ ॥ निराव
यव मत होइ न हाने ॥ कल्पित जो तेरेश वखाने ॥ पुनि ग्रभाव ग्रण तम माजोई ॥ मम ग्रतु कूल पक्षा नो सोई ॥ ४५ ॥ कल्पित दे
शव खाने जोई ॥ जो कार्य निरवाहिक तेई ॥ तो यदि माया वाद पछाने ॥ ते सिद्धांत ग्रव हरवला नो ॥ ४६ ॥ संयोग को यहु
निर्णीकार ॥ वरण भिन्न हि गुणक ग्रसार ॥ कार्य कारण की तादात्म्य ॥ तोते भिन्न लदेन हि ग्रात्म ॥ ४७ ॥ ग्रवयव ग्रवयवी
को समवाय ॥ जो तभाव समाहि वनाय ॥ जो समवायु संबंध हि जोई ॥ तो हि संबंधक हो कोइ होई ॥ ४८ ॥ जो संबंध न ता को होइ
तो हि संबंधक है न हि कोइ ॥ संबंधी भिन्न ग्रसंबंध है जोई ॥ ग्रम्य पदार्थ सम रहे सोई ॥ ४९ ॥ जो संबंध वखानो ग्रोर ॥ भई ग्रनव
स्था ता सी ठोर ॥ स्वरूप संबंध संबंध न होई ॥ उभय ग्रधीन न जाने सोई ॥ ५० ॥ दोहरा ॥ जो संबंधी सों कहो ता हि ग्रभेद वनाय ॥
तो तूं कह लखन ग्रोर ग्रवनी के दयो सुनाय ॥ ५१ ॥ चौपई ॥ ग्रभेद कहे गुनि कार्य जाय ॥ सो प्रकार ग्रव कहो वनाय ॥ द्वि गुण
क भेयो समवाय ग्रभिन्न ॥ सो परमाणु ते न हि भिन्न ॥ ५२ ॥ ता विध पोषवराण होई ॥ कार्य द्रव्य सगल ते जोई ॥ तो विद्व ग्री
न सकै हि वनाय ॥ रहे द्व्यणुक परमाणु जाय ॥ ५३ ॥ ग्रह सम समवाय वखानय जोई ॥ उभय संबंधी ग्राश्र सोई ॥ एक संव
धी जो मर जाय ॥ तो समवाय नाश को पाय ॥ ५४ ॥ नित्य संबंध समवाय वखानो ॥ वहू लक्षण ग्रव हान पछानो ॥ एक सं
बंधी ग्राश्रे होई ॥ तो संबंध वने न हि सोई ॥ ५५ ॥ दोइ संबंधी ग्राश्रे होई ॥ तम संबंधक ही जो सोई ॥ यहि लक्षण ग्रव ते ग्रोहान
एक हि ग्राश्रय की योव खान ॥ ५६ ॥ कार्य कारण माने जोई ॥ भिन्न ग्रसंतव खाने तेई ॥ तो हि संयोग संबंध हि होई ॥ कहर वट
रजिउ ग्रोर न कोई ॥ ५७ ॥ तोटक छंद ॥ ग्रव हू लखन ग्रोर वखानत हो ॥ मत वेद विहीन सुजानत हो ॥ जग पो करने मत हू रकरे ।
वहू हू लखन ग्रोधिन जानत परे ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ ग्रवयवी माहि ग्रवयवी जोई ॥ एकारि सहि जे भ्रमो होई ॥ कारण विरवे ताहो वसा

म

वभीतरहोई॥ वहनिजज्ञानविनासीसोई॥१८॥ योपरमातमभयोविनासी॥ कैसेनांहिकहेअवनासी॥ भाषीयुक्तिवखानीजो
ई॥ अवतिनसमसतिनकोहोई॥१९॥ मूढअतितनबहभावधेजोई॥ परमातमहेतनसबेसोई॥ मूढअकारणतिनअज्ञान॥ का
रणवार्केकेहेवखान॥२०॥ परिणामीहेतयहीजगहवे॥ विवर्तहेतरैअवरतिउपये॥ अज्ञानस्फुरणासनाविशिष्ट॥ भावे
जगकोइहअनिष्ट॥२१॥ सकापकयाहिमाजोई॥ तापनजलधारासभयोई॥ माटीयुक्तिस्वपनघटहोई॥ विदअज्ञान
विनहेतनकोई॥२२॥ नैयायिकाहिमतअरंभगपो॥ वोहनिजसअवसरंपरिभयो॥ चारवुडकेशिष्यपढानो॥ यामेभेद
नंरचिकमानो॥२३॥ सोत्रांतिकनामप्रकटकोहवे॥ हसरवैभासिकजगकहवे॥ योगाचारतृतीयपहिचान॥ माध्यमि
कचोथोइसमेआन॥२४॥ तिनचारोमेजेहृयआर॥ तिनकेप्रगटहिवोवोवार॥ भूमीजलअरुअग्निसमीर॥ चारभूतय
हिजानोवीर॥२५॥ तापरमाणुकोसंघात॥ वाह्यजगज्ञानोविख्यात॥ वाह्यकोअैसेउरआन॥ अंतरकोअवकरो
वखान॥२६॥ मानवादिदेहजगलात॥ ज्ञानोपंचस्कंधसंघात॥ पंचोकायहिनामपहिचान॥ उपप्रथमरूपसरवि
ज्ञान॥२७॥ संज्ञासंस्कारमिलचार॥ वेदनपंचमकोइधार॥ विविअरपुनिइहिपजोई॥ उपंसकेधकहीजेनरई॥२८॥
आलयधारावाहीज्ञान॥ पेहिकनिर्विकल्पविज्ञान॥ हितीस्कंधउपपहिज्ञान॥ अवतीसरकोकरोवखान॥२९॥ तृ
तीयप्रहेपुनिपाचप्रकार॥ संज्ञागुणक्रियानिरधार॥ जातिविशिष्टप्रतीतमिलहोई॥ पचप्रकारप्रगटयहिहोई॥३०॥ तो
प्रगटयहिसंज्ञाजानो॥ शुकलकृष्णगुणताकेमानो॥ गमनअनयागोक्रियाहवे॥ तोत्वेतोमहिजातिस्वपपे॥३१॥ अो
गीशुद्धवतीपटचार॥ विशिष्टप्रतीतियहिनिरधार॥ पंचप्रकारवखानेजेई॥ याविधप्रगटहिवोपेतेई॥३२॥ रागद्वे
षमानमदरूप॥ धर्माधर्मसोहतमरूप॥ स्कंधसंस्कारयहिगायो॥ सोमैतोकोभावसनायो॥३३॥ सावई:सुवकोअ
नुभवजोई॥ वेदननामकहीजेसोई॥ पांचस्कंधनकोसंघात॥ ईनतेभिन्ननआत्मनात॥३४॥ इनकोआत्मधीरवना

सो असत्य हे ताके माही ॥ उत्सत्य ते पूर्व तिह माही ॥

री ॥ ह्यधुहे तां तेन रभारी ॥ ९ ॥ अलामें गो नाना होई ॥ एक गोण हि केहेन कोई ॥ जो पुनि एक देश करर है ॥ अवयवांतरमांहि
तेवहूगहे ॥ १० ॥ अवयवांतरमें केसे होई ॥ प्रतीक हे हूवन हे सोई ॥ तामें एक देश कर होई ॥ अवयवांतरको चाहे सोई ॥ ११ ॥ अ
सके हूअनवस्था आई ॥ कार्यवेनन कतहू गई ॥ अलपरमाणतेहि अणु जोई ॥ उपजे नाहि कदाचित सोई ॥ १२ ॥ परमाणुमा
हि हि अणुक असत्य ॥ सो कारणतेहो इन सत्य ॥ जो असत्य सत्य पुनि होई ॥ ससे सींग उपजावे कोई ॥ १३ ॥ असत्यांहि अणुक को
कारण जोई ॥ ससविषाणको कारण सोई ॥ जिउ बालूतें तेल न होई ॥ विधा सत उपजयो नहि कोई ॥ १४ ॥ तिउ परमाणुतेहि अ
णु नाही ॥ सो असत्य हे ता के मांही असत्य ते सर्व माही ॥ भाव सत्य असतानाही ॥ १५ ॥ कार्य समवायहि होयो ॥ तो पम
तो अपनो नेवोयो ॥ अरु पुनि कार्य गुण हे जोई ॥ कारणगुण में आहि न तई ॥ १६ ॥ ताके से कार्य में जाय ॥ अवेल सम हवना
य ॥ हिअणुकमाहि गतिभावी जोई ॥ कार्यगुण महि मानो सोई ॥ १७ ॥ अरु परमाणु सत्या जोई ॥ नाहि परमाणु आरंभक सो
ई ॥ जो संख्या परिमाणहि जाय ॥ तो पुनि दृष्य गंध उपजाय ॥ १८ ॥ तो नहि दृष्य गंध उपजावे ॥ जो संख्या परमाण न जावे ॥ विज्ञाती
गुण हो नो उर आनो ॥ बाधक साधक तत्स्य पहिलानो ॥ १९ ॥ तो ते अणु परिमाणहि जोई ॥ हिअणुक परिमाण आरंभक सोई ॥ अ
णुते अणुतर भाव यो जोई ॥ नाहि अपाटन तमते होई ॥ २० ॥ परमाणुते अणुतर जो होई ॥ नाहि प्रसिद्ध मानियो कोई ॥ अप ।
सिद्ध अपार न नहि भव होई ॥ ससके सींग समान हि सोई ॥ २१ ॥ अरु पुनि त्रि अणुक वतानयो जोई ॥ वही नित्य वहू किउ नहि
होई ॥ नेनु चाद्वष्ठ यहो इ भव जोई ॥ अरे हुअनित्य नित्य नहि सोई ॥ २२ ॥ अरु सावयव वहू गो वहू होई ॥ निरवयव न हि माने ।
कोई ॥ तो पुनि मूर्ति द्रव्य सत जोई ॥ नहि निरवयव नित्य को होई ॥ २३ ॥ ते मूर्ति परमाणु माने ॥ ताको किहि विधि नित्य वखाने
वहू गोहे वे वहो सवयव ॥ केसे तिहि भाखे निरवयव ॥ २४ ॥ मूर्ति वस्तु हे रज गज जोई ॥ अरु दिशा सब धी सोई ॥ अरु अवय
व नियम करता के ॥ ता नरव ने सं वे धन वां के ॥ २५ ॥ तिउ मूर्ति परमाणु यागो ॥ अरु अवयव नियम ते धारो ॥ जो सवयवभ

वे॥ रचतेभिन्नतसोदरसितवे॥ वाहरभीतरजोसंघात॥ समकतनभंगरजानोलात॥४३॥ भावरूपजगतमेजोई॥ विकृति।
वतत्तणभंगुरसोई॥ सोपंईतिपतिभित्ताज्ञान॥ रोपज्वालजिउपरचान॥४४॥ ऐसेसिछ्यनकरउपदेस॥ करैनरकमे
जारप्रवेस॥ वहुरत्वनगननामनमाहि॥ भावोप्रगटसनेग्रवलाहि॥४५॥ तत्तणपरमाणसहजगभीन॥ कहियोसि।
होतमाननेकौन॥ मानविनानहिमेयप्रसिद्ध॥ जोतमानकरेतोसिद्ध॥४६॥ मानप्रमत्तनयामेहोई॥ सन्निकृष्टकोभास
सोई॥ तत्तणभंगुरजगभीतरजोई॥ सनिकर्षलोगरहेनूसोई॥४७॥ संबंधजन्मलोस्थितमाने॥ तत्तणभंगुरमनहोवेहाने॥
प्रमत्तयोगपरमाणलाही॥ कहैसंवंधसिद्धकछुनाही॥४८॥ वासिविनुनाहीप्रत्यक्षमान॥ तत्तणकौवासिहोइनभान॥
याहीतेउपमाननहोई॥ तत्तणभंगुरकरहतयासोई॥४९॥ शाहूनतोकोकरैप्रकाश॥ शहूसनेतत्तणभंगुरनाश॥ तका।
रटकारवर्णहियजेई॥ एकसमेउपजेनहीतेई॥५०॥ क्रमकरउपजेपुतमेहोई॥ श्रवणताहिकोक्रमकरहोई॥ चार।
कालत्तहस्थितिकहै॥ तत्तणभंगुरमततप्रपनोदहै॥५१॥ नराजछंद॥ नमानमूलतेमतेसभ्रातिमूलजानिये॥ सवैदलोक
हीनकोनकाजनाहिमानिये॥ नभोगमोक्षकोकरैग्रनर्थहेतधारई॥ सदारहूरयाहिकौनधीरकोविचारई॥५२॥
कवित्त॥ आपनीसबुद्धकोप्रसिद्धलोकमेकरैजुमानतेविरुद्धहीसिद्धांतकोवखानिये॥ किधोंमोहकेवसपिसा
चरेहतेधर्मविवेकछुट्टतेनसबकेअर्थजानिये॥ किधोंसबलोकवेदकौकरेकल्याननेहरकेनिरर्थकुःखहेतहेय।
लोहिनीचहानिये॥ तीनपक्षहूविवेसदोषतेमतेविवेक॥ सबलोकवेदहीनकौनकाजनाहिमानिये॥५३॥ चौपई॥
तेसिद्धांतमेहवनग्रौर॥ कहेग्रनेननपावेठौर॥ जइपरमाणक्रियाविहीन॥ क्रियाविनमिलनोनहिचीन॥५४॥
क्रियाजन्मलोरहेनतेई॥ तत्तणभंगुरभावरहेजेई॥ सततोनक्रियातामहिहोई॥ भिन्ननकर्त्तामानियोकोई॥५५॥
भुजंगप्रयातछंद॥ शरीरंतनमाहीइनेग्रादिजानो॥ कटाकारपाटंघटंवित्तग्रानो॥ कफुटेकर्मविरक्तलालविनाशी॥

५

ग्रहेनेमसारेवनेनीननारी॥ ८६॥ चौपई॥ जौलनमभित्रवखानोकर्ता॥ सोप्यापीकेलछणमर्ता॥ जौप्यापीतांहिवखानो॥ लछ
णभगुरमनहीवेष्यानो॥ ८७॥ लछणभगुरजेकर्ताहोई॥ जग्यजनमलोरहेसोई॥ जग्यजनमलोरहेनजोई॥ कर्तानाहिकहेनहिको
ई॥ ८८॥ परमाणसहवखाननयोजोई॥ करवैविकल्पवनेनहिसोई॥ सहपरमाणलेहैनिग्रोरे॥ प्रथवानाहिभित्रवचारे॥ ८९॥
प्रथमेनेसिडांनपत्नानो॥ भित्रप्रवयवीजीनतमानो॥ द्वितीयेतिरुप्रत्यछननहोई॥ येंद्रियकनहिपरमाणकोई॥ ९०॥ नन्नुंतिउ
रककेशहूरनहिदेवे॥ ननसमुदायप्रगटजनपेखे॥ तिउपरमाणएकप्रगोचर॥ तिरुसमुदायहोइजनगोचर॥ ९१॥ के
वलएककथनीद्रयहोई॥ निकटपरिखेपेखेसभकोई॥ तिउपरमाणनाहिनिहारे॥ केवलतिरुप्रत्यछउचारे॥ ९२॥ सेन्नानवाट
मैइखनणस॥ सनियेयोरतजौतिरुप्रास॥ प्रथमप्रथमजोईसचान॥ सोउन्नरउन्नरकोमान॥ ९३॥ खसमानउन्नरउपजा
य॥ प्रथवानाहिविलछणजाय॥ प्रथवाकोइननेमुवखानो॥ तीनोमेहूखनउरमानो॥ ९४॥ प्रथमपत्तमेहूखनसार॥ क
होप्रगटउरभीनरधार॥ बीजतेप्रकुरतातेडाल॥ तातेपत्रफलविसाल॥ ९५॥ ग्रहेविसंहरयातेजगमाही॥ सोउपजेनहि
नेमनमाही॥ द्वितीयेसर्वभावकेलछण॥ लछणमाहिसहोहिविलछण॥ ९६॥ उपजेबीजसतांलछणमाही॥ प्रकुरज
नेद्वितीयलछणमाही॥ त्रतीयेकाउदियनुविसाल॥ चौथेहोइफलकोमाल॥ ९७॥ दिनग्रहमांसविलवनहोवे॥ सर्वछ
णलछणमेजननजोवे॥ त्रतीयेनरपुरगलदेजोई॥ द्वितीयेलछणसरहोवेसोई॥ ९८॥ बहुरमनछहायीहूयजाय॥ होइननरगा
वलेभूधाय॥ भोजननपात्रमेधरप्रागे॥ जेवनलोगेहूलाहूललागे॥ ९९॥ निरुवाकांमेकरेनकोई॥ निरुवेरुनरयोसभवो
ई॥ निरुचेविनानकार्यहोई॥ निरुचेरुननमानियोकोई॥ १००॥ तातेसर्वभावकोनियत॥ उपजावनपालनपुनिरुता॥ स
र्वशक्तिचेतनतइकरुये॥ तोविनकार्यकोयनपये॥ १०१॥ दोहरा॥ नउजापंचस्कंधहीभावसांहिवनाइ॥ मिलेपरस्परतेजा
वेलेवेचितिउपजाइ॥ १०२॥ भुगताचेतननहोइजगप्रेरेजउतराय॥ निरुचेतेलेप्रारिजेसापेसभैविहार॥ १०३॥ चौपई॥ चेतनवि

उनहि मिलें रूप ॥ बिन कर्ता ने है जग रूप ॥ बिना संज्ञातन न चिति प्रकाश ॥ भोगता की ग्रब होइ प्राश ॥ ७४ ॥ भुगता बिन
कर्ता नहि कोई ॥ करनृ नियमक होने होई ॥ कर्ते नियमक जवै योग यो ॥ कार्य नेयमक ह्वाने भयो ॥ ७५ ॥ प्रकृति भुग
ता का हि बताव ॥ संचौ भिन्न संज्ञा नहि गावो ॥ प्रथ बातो पाचो को होइ ॥ उ ज्ञाना मैं ने एक हि कोई ॥ ७६ ॥ प्रथम जु गयो सि
ड्डा नत कहाव ॥ भिन्न ग्रब पवी की पोउ चाव ॥ द्वितीय एक मतो न हि होइ ॥ इह नास ब्रह्म भीतर होइ ॥ ७७ ॥ एक देह लय
वा ह्न जावे ॥ द्वितीय गुद्ध हि भीतर टहि रायो ॥ तीसर सर्व मास सि तव मैं जावे ॥ चौथा मारग मै ग्रह कावै ॥ ७८ ॥ पा विध वा
र करे न जब ही ॥ होवै नास देह को न ब ही ॥ ततीय निरधार ण न हि होई ॥ भुगता पाने वनेन कोई ॥ ७९ ॥ तंतु ग्राल य
ता न धारा है जोई ॥ स्व प्रकाश ने आत्म सोई ॥ आत्म को ज्ञान भुगता करे ॥ सता न रूप सो सो सदा रहे ॥ ८० ॥ कारण कला ।
० हि ग्रे सोइ ॥ पा विध नित है निरधारण होइ ॥ पा हि निरधारण न मरे जोई ॥ न हि नी के मन आवत सोई ॥ ८१ ॥ भुजंगप्र
यात छंद ॥ हण त्तान जोई व ही सो बखानी ॥ कि धो ते स्वधारान आरी प्रमानी ॥ इहै रूप त्व माहीं सनो रोघ जोई ॥ मते ने प ।
ला नै न गहे ना हि कोई ॥ ८२ ॥ चौपई ॥ प्रथम धारणा गई पलाय ॥ जो ते भिन्न न मानी काय ॥ द्वितीये आत्म निश्चल जोई ॥ ना
मा न रकर भा विये सोई ॥ ८३ ॥ प्रकृति नितेम ति आत्म जोई ॥ ताण भगर मानि योने सोई ॥ जो के ग्रंथ भाग पुनि होई ॥ न
हि थिर ग्रब भुगता कोई ॥ ८४ ॥ महानुभाव ह्वावों मै आप ॥ तो हि निमित्त करें बहु ताप ॥ साधन धारल हो निज मोरव ॥ जा
ने ह्वों सगल जग रोव ॥ ८५ ॥ पर हृम मनो को भयो अपार ॥ जा का न हि पावे पर पार ॥ ताण भगर आत्म बखाने ॥ सो प्रश
म त्तण होवे ह्वाने ॥ ८६ ॥ साधन फल लो रहे न सोई ॥ साधन करे न फल हित कोई ॥ शास्त्र ते गो भयो ग्रंथ ॥ जो ते होइ न न
र को ग्रंथ ॥ ८७ ॥ जो नैक रूपो प्रतिभित्ता प्रीति ॥ स भद्र ताण भगर है एकांत ॥ सो प्रश्न रूप त्व न श्रुति सार ॥ जा को न हि प
उ धार ॥ ८८ ॥ जो प्रति भित्ता भ्रम हि बखाने ॥ भोजना रिह्वो वै ति ह ह्वाने ॥ ग्रम्वें बस्त्र रज न न कोई ॥ प्रश्नि निवृत्ति न ता ।

मो
ह
प
३

स्थित आत्मा को

मेहोई ॥ ५२ ॥ यदि अनुकूल यही प्रतिकूल ॥ ऐसो तान उहू कोमूल ॥ जो भोग योग्य आत्म सत्व जाने ॥ तिह अनुकूल तथा हनगा-
ने ॥ ५३ ॥ जो भोग योग दुःख देवै भाव ॥ सो प्रतिकूल सदा उर धारे ॥ अन उपभुगत मजा ती जोई ॥ तामे नहि हो वैय दि होई ॥ ५४ ॥ या-
ही ते नहि होइ प्रवृत्ति ॥ प्रवृत्त तो ते नहि होइ निवृत्ति ॥ प्रवेदिन मे भोग योजे से ॥ शाम भयो आज प्रदिते मे ॥ ५५ ॥ ऐसे धार लये।
मन माही ॥ नव प्रवृत्ते तो के माही ॥ प्रवे उन्नर अनुगत रूप ॥ मानो चेतन पक अनूप ॥ ५६ ॥ जो जग उद्दे काल को जाने ॥ तो-
मे इष्ट अनिष्ट बखाने ॥ जो नहि तो का अंगीकार ॥ भोजन नहि मत वनेत हार ॥ ५७ ॥ भोजन विन मरण आवै आयो ॥ ऐ-
सो का हि सिद्धांत हि गायो ॥ गत दिन मे भोग यो मे जे सो ॥ ऊटन टयो मे ते प्रदिते सो ॥ ५८ ॥ यो बालक निज अनुगत मान
भोजन को नहि करना हान ॥ न तो बालक ते अनुद्वा ॥ जाको नहि कछु रूप सद्वा ॥ ५९ ॥ यो प्रति भिन्ना भ्रम हि निवारयो ॥ से
प्यक तिह प्रमाण उचारयो ॥ निदर्शन मे चलना को जोई ॥ याही ते परिहरयो सोई ॥ ६० ॥ ऐतर धान भई तिह सोई ॥ स्व
रूप नाश नहि ता को होइ ॥ प्रकृति ने तम तविद्या जोई ॥ प्रगट अविद्या जानो सोई ॥ ६१ ॥ निहचल आत्म वेद बखाने ॥ प्रकृ
ति लोक मगल यदि जाने ॥ सोई मे यदि भाव से सोरे ॥ लाभ भंगुर नहि को उचारे ॥ ६२ ॥ तो मे लाभ भंगुर जो हान ॥ ता को
विद्या करे बखान ॥ इन ते पर न और अविद्या ॥ अहे अविद्या ते री विद्या ॥ ६३ ॥ विप्रलंभक वाक जग जैसो ॥ तिह श्रुति या-
हक शास्त्र ते सो ॥ होइ और प्रकृ और दिखावे ॥ विप्रलंभक ता ते कहि लावे ॥ १ ॥ विप्रलंभक वैन नहि मान ॥ भयो प्रवृत्ति हो-
इ तिह हान ॥ दुष्ट पंथ को करउ उपदेश ॥ जर विपन मे दे पकलेस ॥ २ ॥ तिउ ते रोहू दर्शन जोई ॥ नरक पंथ उपदेश सोई ॥
कि हृविधमाने तिह परमान ॥ जो ते होइ जनन को हान ॥ ३ ॥ लाभ भंगुर जाने गो जोई ॥ वैदक कर्म करे नहि सोई ॥ नि-
हकर्म नहि थिति होई ॥ उलटे कर्म करेगो सोई ॥ ४ ॥ या विध परे नरक मे जाय ॥ देवै गोय मत बहुत से जाय ॥ खबते जनप
रतारण करे ॥ तै भी जाय नरक मे परे ॥ ५ ॥ रत्नादिक हरत वन अमोच ॥ ग्रंथ बढन ते करो संकोच ॥ अयको वादि भव मे जो ।

३

ई ॥ उभयमतोयहित्यागोसोई ॥ ५ ॥ दोनोंकोमतभयोनिराश ॥ अवतीसरवोलयोधरआश ॥ सर्वेजगतलक्षणमात्रसत्य ॥ उत्रा-
रलक्षणमेहोइअसत्य ॥ ७ ॥ प्रथमप्रथमनेउत्तरहोवे ॥ रहेसंतानसदानरजोवे ॥ तेसेसर्वेस्वलक्षणजानो ॥ ग्राह्यग्राहकभा-
वनमानो ॥ ८ ॥ वाह्यअर्थनिवारणजोई ॥ ग्रेहस्यअभिमतहमकोसोई ॥ विज्ञानविनानहिऔरोकोइ ॥ जोतेतर्कहीनहे-
सोइ ॥ ९ ॥ सोपरमाणकिधोसमूह ॥ प्रथमेग्रहणगोचरऊह ॥ द्वितीयेतोनिरणयनहिहोइ ॥ दुरनिरूपनहिमानेकोइ ॥ १०
वाह्यवनग्रोनरविज्ञान ॥ भासेपोउरअंतरज्ञान ॥ योगाचारतृतीयमतयह ॥ सोसमझानोश्रवनगेह ॥ ॥ सर्वेजगत-
लक्षणभंगुरहोई ॥ उत्तरलक्षणरहेनकोई ॥ सोईचरपरकोइनजाने ॥ अर्थसकलकोहोवेहाने ॥ २ ॥ नंतुखसाटशाउत्तरा-
उपजाय ॥ पोतेअर्थनकोईजाय ॥ लक्षणभंगुरनहिकारणहोई ॥ अर्वेसम्यक्भाख्योसोई ॥ ३ ॥ तातेयथायोगस्याई ॥ मा-
नोवातननविगरेकाई ॥ संतानवखानीतेनेजोई ॥ तर्कहीनयहिचानोसोई ॥ ४ ॥ संतानसंतानीभिन्नवखानो ॥ अथवा-
वातोहिअभिन्नहिमानो ॥ प्रथमेसोलक्षणभंगुरग्राहि ॥ अथवानित्यवखानोनाहि ॥ ५ ॥ प्रथमपक्षमेरहिणजोई ॥
सोअसत्यलक्षणभंगुरसोई ॥ द्वितीयेसमलक्षणभंगुरणायो ॥ सोअसत्यतिहनित्यवतायो ॥ ६ ॥ अथमद्वितीयमेरहेनसो-
ई ॥ तिहअभिन्नलक्षणभंगुरहोइ ॥ याविधतिहरहनोहैजोई ॥ नीकेसमझअसंगतिसोई ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ सर्वस्वलक्षणमा-
नइरवाह्यअर्थअभाव ॥ भाख्योतोहिवनायकेजानोवहीअभाव ॥ ८ ॥ चौपई ॥ वाह्यअर्थअभावहमाने ॥ कोनयुक्तिति-
हिमाहिवखाने ॥ उपलंभकप्रमाणनहृये ॥ पोतेवाह्यअर्थनपये ॥ ९ ॥ अथवातिहउपलंभनहोई ॥ पुनेतातिहिनमाने-
कोई ॥ उपलंभकउपलंभहिजोऊ ॥ अहेप्रागभावभीतरसोऊ ॥ १० ॥ तैनादिकउपलंभकहृये ॥ अर्थउपलंभसगलजना-
पये ॥ जेनवअर्थनअंगीकार ॥ ज्ञाननहोवेअर्थप्रकार ॥ ११ ॥ ज्ञानविचित्रकारणजोई ॥ ज्ञानभिन्नअर्थहैसोई ॥ ज्ञान-
विनानहिअर्थहिकोई ॥ जानोरहैअसंगतिहोई ॥ १२ ॥ परिहिचटज्ञानयहीपटज्ञान ॥ भिन्नविषयक्षणदोनोमान ॥ ज्ञान-

स्वपते आमा का

मेहोई ॥ २९ ॥ यहि अनुकूल यही प्रतिकूल ॥ ऐसो तानउ हू को पूल ॥ जो भोग योग्य आत्म सुख जाने ॥ तिह अनुकूल तया त्तनगा॰
ने ॥ ३० ॥ जो भोग योउ दुःख देवै भारे ॥ सो प्रतिकूल सदा उरधारे ॥ अनउप भुगत मजाती जोई ॥ तो मैं नहि होवे यहि होई ॥ ३१ ॥ या
ही ते न हि होइ प्रवृत्ति ॥ प्रकृत तौ ते न हि होइ निवृत्ति ॥ पूर्व दिन मे भोग यो जैसे ॥ शाम भयो आज प्रहित मे ॥ ३२ ॥ ऐसे धार लये ॥
मन माही ॥ नव प्रवृत्ते लो के माही ॥ पूर्व उन्नर अनुगान रूप ॥ मानो चेतन पक अनूप ॥ ३३ ॥ जो जगउ हू काल को जाने ॥ लो॰
मे इष्ट अनिष्ट वखाने ॥ सो न हितो का अंगीकार ॥ भोजन न हिमत वने तहार ॥ ३४ ॥ भोजन विन मरणा अव ग्रायो ॥ ऐ॰
सो काहि सिद्धांत हि गायो ॥ गत दिन मे भोग यो मैं जैसो ॥ ऊटन रपो मैं ते प्रहित मे सो ॥ ३५ ॥ यौ बालक निज अनुगति मान
भोजन कौ नहि करना हान ॥ तौ तौ बालक कते अपुडा ॥ ताको न हि कछु हूय सज्ञा ॥ ३६ ॥ यौ प्रतिभि तो भ्रम हि निवारयो ॥ स
स्यक तिह पर माण उचारयो ॥ निदर्शन मे चलता को जोई ॥ याहीते परिहरयो सोई ॥ ३७ ॥ अंतरथान भई तिह सोइ ॥ स
त्रुप नाश नहि ताको होइ ॥ पहशुनि ते मत विद्या जोई ॥ प्रगट अविद्या जानो सोई ॥ ३८ ॥ निहचल आत्म वेद वखाने ॥ प्रकृ
पुनि लोक मगल यहि जाने ॥ सोई मैय हिभा वेसाऐ ॥ तागाभ गुर नहि को उउचारे ॥ ३९ ॥ तो मे तगाभं गुर जो ज्ञान ॥ ताको
विद्या करे वखान ॥ उन ते परे न और अविद्या ॥ यह अविद्या ते री विद्या ॥ ४० ॥ विप्रलंभक वाक्य जग जैसो ॥ तिह श्रुतिपा॰
दक शास्त्र ते सो ॥ होइ और प्रकृ औरहि लावे ॥ विप्रलंभक तौ ते कहि लावे ॥ १ ॥ विप्रलंभक वेद न नहि मान ॥ भयो श्रुति हो॰
श्रुति रहान ॥ दुष्ट पंथ को करउ पदेश ॥ उर विप ने मे दपे कलेस ॥ २ ॥ तिउ ते रोहे दर्शन जोई ॥ नरक पंथ उपदेशो सोई ॥
किह विधमाने तिह परमान ॥ जो ते होइ जनन को हान ॥ ३ ॥ तगाभं गुर ज्ञाने गो जोई ॥ वेदक कर्म करे नहि सोई ॥ नि॰
ह कर्म न हि थिति होई ॥ उलट कर्म करेगा सोई ॥ ४ ॥ या विध परे नरक मे जाय ॥ देवै गो प्रमव हून संजाय ॥ खल ते जनप
रनारगा कवे ॥ तैभी जाय नरक मे परे ॥ ५ ॥ इत्यादिक रहावन प्रमोच ॥ ग्रंथ बढन ते करो मै कोच ॥ अप को चाहि भव मे जो॰

ई॥ इह मतो यहि त्यागे सोई ॥ ८ ॥ दोनो को मत भयो निराश ॥ अब तीसर वो लयो धर आश ॥ सर्व जगत लक्षण मात्र सत्य ॥ उन्ना
लक्षण मे होइ असत्य ॥ ७ ॥ प्रथम प्रथम ते उन्नर होवै ॥ रहे संतान सदा नर जोवै ॥ ते सभ सर्व स्वलक्षण जानो ॥ आलय आदि कभी
ह न मानो ॥ ८ ॥ बाहर अर्थ निवारण जोई ॥ ऐसे सत अभिमत इह मको सोई ॥ विज्ञान विना नहि औरो कोइ ॥ जो नेत्र तर्क हीन है
सोइ ॥ ९ ॥ सो परमाण कि यो सम्रूह ॥ प्रथम अग्र लयगो बरु रूह ॥ द्वितीय तो निरणय नहि होइ ॥ दुरनिरूपन हि माने कोइ ॥ १०
बाहर वन आंतर विज्ञान ॥ भासे यो उर अंतर ग्यान ॥ योगाचार ततीय मत वह ॥ सो सभ जानो इव वन गेह ॥ ॥ सर्व जगत
लक्षण भंगुर होइ ॥ उन्नर लक्षण रहे न कोइ ॥ सोई चर पर कोइ न जाने ॥ अर्थ सकल को होवे हाने ॥ १२ ॥ नंगुर माट शउन्नर
उपजाय ॥ याते अर्थन कोइ जाय ॥ लक्षण भंगुर नहि कारण होइ ॥ अवे सम्यक भाख्यो सोई ॥ ३ ॥ ताते यथा योग स्थाई ॥ मा
नो वासन वियोग काई ॥ संतान वखानी तैने जोई ॥ तर्क हीन यह विचारो सोई ॥ ४ ॥ संतान संतानी भिन्न वखानो ॥ अथ
वा तो हि अभिन्न हि मानो ॥ प्रथम मे सो लक्षण भंगुर आहि ॥ अथवा नित्य वखानो नाहि ॥ ५ ॥ प्रथम पक्ष मेर हिताण जोई ॥
सो असम्य लक्षण भंगुर सोई ॥ द्वितीय सभ लक्षण भंगुर नाशो ॥ सो असत्यानित्य नित्य वताशो ॥ ६ ॥ अथ म द्वितीय मे रहे न सो
इ ॥ तिह अभिन्न लक्षण भंगुर होइ ॥ या विधि तिहरि हनो है जोई ॥ नीके समझ अप्रसंगति सोई ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ सर्व स्वलक्षणमा
त्र उर बाहर अर्थ अभाव ॥ भाख्यो नो हि वनायके ज्ञानो वही अभाव ॥ ८ ॥ चोपई ॥ बाह्य अर्थ अभाव कहमाने ॥ कोन युक्ति ति
हि सादि वखानो ॥ उपलंभक प्रमाण न हये ॥ याते बाहर अर्थ न पये ॥ ९ ॥ अथवा तिरह उपलंभन होई ॥ ते ता हि न माने
कोई ॥ उपलंभक उपलंभ हि जोऊ ॥ अहे अग्राह्य भव भीतर दोऊ ॥ २० ॥ तेनादिक उपलंभक हये ॥ अर्थ उपलंभ सगल जन ना
पये ॥ जेतन व अर्थन अग्रीकार ॥ ज्ञान न होवे अर्थ प्रकार ॥ २१ ॥ ज्ञान विचित्र कारण जोई ॥ ज्ञान भिन्न अर्थ है सोई ॥ ज्ञान
विना नहि अर्थ हि कोई ॥ जानो इहै अप्रसंगति होई ॥ २२ ॥ परिछिन्द ज्ञान यही पर ज्ञान ॥ भिन्न विशेषण ते दोनो मान ॥ ज्ञान

मो० त० प० ४

विशेष पृथक न दरसे ॥ यहि विधि भेद बिना नहि पेखे ॥२३॥ ब्रहम आतम सरूप ब्रहम केरो ॥ विशेषण ब्रहमेक पहिं हेरो ॥ विशेषा-
ज्ञान को है अभिभेद ॥ यहि विधि वचनन करि है अभेद ॥२४॥ ज्ञेय भिन्न भिन्न नहि ज्ञान ॥ ऐसे ही उर अंतर मान ॥ तंतु सन पट केरक यो-
ग प्रकार ॥ तां सां नीके मत नहि इमार ॥२५॥ जो जो संगत सम सोल हूये ॥ ताते भिन्न न सो जग करूये ॥ जैसे चंद्र हि न जग माही
चंद्र भिन्न नहि सो कछु आही ॥२६॥ ज्ञान संग ही अर्थ लहीजे ॥ तांते भिन्न न अर्थ कहीजे ॥ तो हि कहू यो यहि नियम विचार ॥ सो
असत जांने अभिचार ॥२७॥ अलोक अपदोनो करने म ॥ सह उपलंभ नाहि अनेम ॥ दोनो भिन्न सगल जन माही ॥ कहे अभिन्न-
वने यहि तांही ॥२८॥ विचित्र ज्ञान सत जांने होई ॥ ऐसो अर्थ भिन्न है कोई ॥ तनु इक और प्रकार है हूये ॥ ज्ञान भिन्न अर्थ न हिय-
ये ॥२९॥ भव मै जे अन्वय व्यतिरेक ॥ ते ई करे सपरम विवेक ॥ वासन जांने होइ विचित्र ॥ तां ही ते जग ज्ञान विचित्र ॥३०॥ जो न-
हि वासन तै से होइ ॥ ज्ञान विचित्र कहे न कोइ ॥ सपने बिना अर्थ के भेद ॥ वासन कर पये सभ भेद ॥३१॥ तां ते अर्थ न कारण
हूये ॥ वासना हेतु ता हि को पये ॥ यहि प्रकार भ्रम मिथ्या हूये ॥ स्वपन समान जाग्रत नहि पये ॥३२॥ स्वपन अर्थ वत बाध सना-
हि ॥ जाग्रत नहि सम पये ता हि ॥ बाध बिना नहि अर्थ अभाव ॥ तां ते आहि सत्ता को भाव ॥३३॥ वस्तु विचार करे जे कोई ॥ सा-
मा अर्थ बिना नहि होई ॥ अनिर्वचनी प्रतिभासिक सिद्ध ॥ स्वपने मांहि अर्थ प्रसिद्ध ॥३४॥ अरु पुनि ज्ञान विचित्र जो ई ॥ ते स-
न महि कार्य सो ई ॥ ता को हेतु वासना गांवे ॥ वासन हेतु सु कोन वतांवे ॥३५॥ ज्ञान भिन्न ते यह है जो ई ॥ ते मत माहि सपन नहि
सो ई ॥ तां ते हेय न कारण होई ॥ वासन हेतु वने न हि कोई ॥३६॥ अरु पुनि ज्ञान वासना जे ई ॥ परस्पर हेतु वखाने ते ई ॥ तो र-
कहू लेन अंबोरे आवे ॥ कार्य को वहु मूल उठावे ॥३७॥ ज्ञान चित्र ते वासन विचित्रा ॥ तां ते होइ सत ज्ञान विचित्रा ॥ अंमो मध्याश्रय
ता हो ई ॥ कार्य रेप सगल वहु लो ई ॥३८॥ वासना जन्म ज्ञा नहि ते हो ई ॥ ऐसे हेतु और न हि कोई ॥ वाह्य अर्थ करि अंगीकार ॥ जा-
ने वासन वने न तहार ॥३९॥ एक सत्या रे मानो कोई ॥ ज्ञा नहि वितै वासन पुनि सोई ॥ जो क्षणभंगुर तां हि वखानो ॥ वासन मूल-

करोपुनिहारनो॥४०॥वासनज्ञानदोऊभेद॥ग्रथवालाहियइहैकछुभेद॥ग्रभेरजमजनकनहिकोई॥ज्ञानवोभेदेहतहोई॥४१॥
उभयपासरज्जुगलिहार॥वासनज्ञानभिन्नउपाय॥वाह्यवतग्रंतरविज्ञान॥भासेयोतेकरपोवखान॥४२॥जोवाह्यनहिय
योहकोई॥उपमातोहिकोनकीहोई॥वाह्यग्रंथघटादिकजेई॥उपमाहेतहोहिंगेतेई॥४३॥उपमाहेतग्रंथजगजोई॥नाहि
ग्रभावतोहिकोहोई॥जोनहिवाह्यग्रंथहमाने॥क्षणभंगुरविज्ञानवखाने॥४४॥तोनहिहोइसगलव्यवहार॥जोको
जगमेबहुविसतार॥यहहैसिद्धहैहगहभारा॥यहिसेवकयहसेवहमारा॥४५॥यहवोध्ययहवोधकहये॥यहवादी
प्रतिवादीपये॥इहहैबंधइहैजनमोक्ष॥याइमोक्षजनमारगेरोक्ष॥४६॥शास्त्रयोकेहेतवनाऊ॥याहीकोमेपाठपढा
ऊ॥यहमेरोहैबहुहितकारी॥कवीनमेग्राताइनदारी॥४७॥इत्यादिकव्यवहारग्रपारा॥ताकोनेसभमूलउखारा॥साध
नकरेमोक्षहितकोई॥द्वितीयक्षणग्रात्मनहिहोई॥४८॥कहोमोक्षग्रवकोनेहोई॥तेसिद्धांतसभटीनोखोई॥वालन।
काजेकरेउपाय॥क्षणभंगुरग्रात्ममरजाय॥४९॥सिद्धांतयाहतेमूकप्रमान॥जातेनहिकछुहैवेहान॥क्षणविज्ञान।
वादहतमान॥श्रनीनिजमतकरेवखान॥५०॥निरउपाख्यसमहैजोई॥निखिलपदार्थकारणसोई॥नंनुभवकारणश्र
मनहोई॥तवसानीर्थकरह्योनक्कोई॥५१॥बुद्धनतांकोकीयोउपदेश॥तातेकूटानवाप्रदेश॥ग्रेसेमततमकहोवनाइ
देवोसगलव्यवस्थाजाइ॥५२॥श्रमवाउगुरुकेमनमाही॥सोनहिग्रावेतांउरमाही॥सोज्ञातिकवैभासिकजेई॥ग्रपपके
चिन्नथेतेई॥५३॥तांमनवाह्यग्रथनिवेश॥लखयोगुरुउरूहरणकलेश॥तवताकेग्राशेग्रनुसार॥उपदेशकीयोगुरु
परमउदार॥५४॥वाह्यग्रर्थवादहारा॥श्रमविविचिततकाधारा॥ईषनपक्षचिन्नयोतीजो॥विज्ञानविनानहिमानो॥
वीजो॥५५॥ताकोकीनोतिउपदेश॥करुणानिधगुरुहरणकलेश॥ताहीहारश्रमसहिग्रानया॥तांकोवधसगा।
लग्रभानयो॥५६॥सोकोपितउन्नमग्रधिकारी॥श्रमवादभावेयोउरारी॥ममनमाहिनकछुविरोध॥एहीसभको

अपारव्यनाम जाती गुरु क्रियाका है

हंदग्रझेप॥७७॥बुद्धकीयोगत्रयोउपदेश॥तांतेकहतनमत्यउपदेश॥चौथकोमतयोनिरधारो॥तामेंहूलवनप्रगटविचारो
॥७८॥निरउपाख्यअसतेकार्य॥हेवेनाहिकदाचितआर्य॥जोअभावभावउपजावे॥चिरविनहूकणअंकुरजावे॥७९॥शशि
विषाणतेउपजेभाव॥हेवेसगललोकअभाव॥नहिहेवेसोकौनेकारण॥तांतेताकोजानअकारण॥८०॥बीजनाशअ
हंदिहविनाश॥शशेसींगतेनहंसप्रकाश॥निरउपाखतेंतोसमलक्षण॥नहिअंकुरचटजेनेविलक्षण॥८१॥कारणजे
समलक्षणहोई॥जन्यविलक्षणकहेनकोई॥समतेंतनतेसमहिपदार्थ॥यहीनियमसभलखेअनार्थ॥८२॥शशविषा
णतेकिउनहिंहोई॥यामेंउत्तरकहयोनकोई॥कार्यसगलविलक्षणजाने॥असमहेततांतेनहिमाने॥८३॥अभावविलक्ष
णजोनेहोई॥इसोविशेषणमानोकोई॥नीरजमाहिनीलहैजैसे॥अन्यविवेविविषेणनेसे॥८४॥सवैया॥नीलअधारस
नीरजकेसमनांहिअभावकहोअवसोई॥आहिअधारविशेषणकोभवमाहिअभावनसोपुनिहोई॥नांहिअधारवने।
समसींगअभावअहेभवभीतरजोई॥नांहिअभावकिमाहिविशेषणनीरजनीलसमानसकोई॥८५॥चौपई॥प्रतियो
गीविलक्षणजोई॥अभावविलक्षणकारणसोई॥याविधभयेअभावविलक्षण॥तांतेकार्यहोइविलक्षण॥८६॥विलक्ष
णनहिंप्रतियोगीहोई॥विलक्षणहेतकहयोनहिकोई॥याहेतजेतांहिवखानो॥अनवस्थापुनिप्रगटपछानो॥८७
जोप्रतियोगीअंगीकार॥असमवायनहिंवनेनिहार॥असअसमप्रतियोगीहोई॥नांहिअभाववनेअवसोई॥८८॥जासोअ
विनकार्यहोई॥उपादानपहिचानोसोई॥जिउकटकादिकहेमविकार॥हेमपुञ्जजननलखेउदार॥८९॥घटहैसमसंसम
असतल॥समपूछानोयातेमूल॥परमतत्तगुरअर्जुननाम॥यहिवखानयोसबकेधाम॥९०॥आपसमाधायीसभसमदि
सअभनेसगलोउमति॥उद्दालकशिवनिजसतशतिगायो॥समहेतसभजगतवतायो॥९१॥सतहीसोमयहआगेभा
यो॥सतहीतेयानेभवलयो॥अमेवसंविविपुनिभाववयो॥समवाहहरकीनावयो॥९२॥समभूलजेजनकोहोई॥घटप

रूपस्यकरेहेसभकोई ।। त्वरविषाणाकेसमसभहोई ।। तोहिनिहारेतोकोकोई ।। ७३ ।। धनग्रंथीकेपारनलागे ।। भारद्वःखी
धुनिकाहिलागे ।। प्रमवादकोकरेविधान ।। यानवादकोकरहेहान ।। ७४ ।। स्यस्यग्रामानवजरमानुयो ।। योनेविधनि
षेधसभभानयो ।। कौनस्यसकोसाधकूहये ।। जाकरस्यसतनरनेपये ।। ७५ ।। प्रत्यक्षनसाधकतोकोहोई ।। इंद्रियसाधसा
वंधनकोई ।। संबंधविनानहिंयेंद्रिकज्ञान ।। सवहीभयेमेनियमपरिज्ञान ।। ७६ ।। व्याप्तिविननाहींअनुमान ।। स्यस्यव्याप्ति
कोनहिज्ञान ।। सहचरनियमकोकहेव्याप्ति ।। बुद्धउदारजगतमेप्राप्त ।। ७७ ।। जहांधूमभवभीतरहोई ।। अग्निनहांमाते
सभकोई ।। धूमसमाननहो नहिकोई ।। स्यसभानकहूकोनोहोई ।। ७८ ।। सर्वविलक्षणस्यसतमारो ।। नहिउपमानतो
हिमेधारो ।। शाद्वप्रमाणनतोकेमाही ।। जोतेमानतमानेनाही ।। ७९ ।। याविधमानप्रवेजगजेते ।। स्यसमाहिपयेनहि
तेते ।। मानविनामेयभवजोई ।। त्वरविषाणसमजानोसोई ।। ८० ।। साक्षीकरतिहज्ञानवखाने ।। सर्वस्यसमतहोवेदा
ने ।। इजेनतोषमायउरमान ।। दूषनकोअवकरोंवखान ।। ८१ ।। निर्विशेषजोअहेप्रभाव ।। जेवहूकार्यजननस्वभाव
सभकार्यसभहरोहोइ ।। यत्ननतोहितकरहेकोइ ।। ८२ ।। वितीवणजनकरणोजाइ ।। चारहीमेसभहीफलपाइ ।। धा
दूषप्रयत्नभयोसभव्यर्थ ।। रहयोनतोकोभवमेअर्थ ।। ८३ ।। स्यससर्वकोसालभहूये ।। कार्यसगलतोहितेपये ।। स
वेस्यसकोजोहेज्ञान ।। फलतोकोहेयात्महान ।। ८४ ।। वरीसतेजरमोक्षवखानी ।। फलकाहेवहूयात्महानी ।। उला
टोजनकोभयोअनर्थ ।। तेसिद्धांतेनहिकछुअर्थ ।। ८५ ।। यात्मनाशकमेजनहेष ।। करेसजानेतलहेकलेश ।। तेशास्त्रमे
जनकोहेष ।। वडेसजानेतलहेकलेश ।। ८६ ।। सर्वजनोकाकरेयनिष्ट ।। कयेतोहिजरहोवेदृष्ट ।। नरकपाततोकोद्दुर
भार ।। जाकोनाहियहेकछुपार ।। ८७ ।। शुद्धकछुमतभयोनिराम ।। अवजैनीमतकरोनिरूपन ।। अवेसअपविवसनव
तावे ।। जिउकानिउसिद्धांतदिखावे ।। ८८ ।। जीवयजीवयाश्रवरकमान ।। संवरनिरजरवंधपछान ।। सतममोक्षपा

मो
क्ष
प
१८

दार्थ हूये॥ या विध सम पदारथ पये॥ ४२॥ कारसं ते पवता वे कोई॥ जीव अजीव दोऊ पुनि होई॥ अरु दिखलावे पंच प्रकार॥ सो
मै कहूं सगल विसतार॥ ४३॥ जीव पुदगल है दूजो॥ धर्म पदारथ जानो तीजो॥ अधर्म तुरी पंचम अकास॥ या विध पंच
प्रकार प्रकास॥ ४४॥ जीव कही जे तीन प्रकार॥ अरहंत आदि जे परम उदार॥ तां को निमल सिद्ध पद हि चानो॥ या मै भेद न रंच कि
मानो॥ ४५॥ तां की शिक्ष पंक्ति मे जे है॥ भव मै मुक्त कहावे ते है॥ तिन ते भिन्न जीव है जेते॥ भव मै बंध कहावे तेते॥ ४६॥ भूते
आदि चार घट हूये॥ सुगम स्थावर जंगम मूए ये॥ पहिला वट पुदगल रूप बतावे॥ याते भिन्न धर्म दिखलावे॥ ४७॥ नराजहं
ट॥ सम मोक्ष पथ यो मै सनो अप्रवृत्ति कौ दिखावे॥ है सो जन कर्म भूम मै सधर्म कै कहावै है॥ प्रसिद्ध नादि को लख सदा तु मे यजा
नये॥ प्रवृत्ति दे लख कम मोक्ष पथ को पहिचानये॥ ४८॥ चौपई॥ संसार स्थिति जाते पुनि होइ॥ अधर्म पदारथ भाखे सोइ॥ लो
क अलोक भेद कर भास॥ द्विविध का जानो आकास॥ ४९॥ भव मै बंध जीव है जेते॥ प्रथम आकाश लहे नर तेते॥ भव ते
मुक्त भये नर जे है॥ द्वितीय आकाश लहे जन ते है॥ ५०॥ करण प्रवृत्ति आश्रव जग जान॥ समरस आदि संवर पहिचान॥ पुण्य
पाप जाते लय होई॥ निरजरा रूप पछानो सोई॥ ५१॥ नमशिला आरोहण रूप॥ पुण्य पाप नाशक अनूप॥ घाती कर्म
चतुर विध हूये॥ ता को रूप प्रगट जग मये॥ ५२॥ ज्ञान तान ते नाही मोक्ष॥ आदि विपर्यय भारी होय॥ अरहंत दर्शन न दिप
रमाण॥ बंधन कवे सकि हर विध हान॥ ५३॥ बहु विध ग्रंथ कार है केते॥ तिन दिखलाय मार्ग जेते॥ विशेष अवधारण
नाम जानो है॥ नादि कदाचित न होवे सो है॥ या विध तीन तान जिन जाप॥ घाती कर्म तीनों ते गाप॥ मोक्ष पंथ को जो परवृ
त्ति॥ तांही को जो करे निवृत्ति॥ ५४॥ [illegible] सो विधन हि पर हैं जोरी॥ धर्म ती कर वस्तु दि देखे सो ही॥ [illegible] ज्ञान भाव [illegible] पहिलो [illegible]
दस स्मव र नीद्ध नी परिहे वो [illegible]॥ सो हूतं नाम ती [illegible] हये॥ अजर पर तु तीज [illegible] ये॥ [illegible] सिद्धा को [illegible] सपु हवा॥ ना प्रिय
धन ने धर्ती ज्ञान [illegible] जगत [illegible]॥ प्रगट सिद्ध आवली रूप॥ ऐसा गात्र परम अ॥ १८
[illegible] कर के दूर ये॥ ५

रूप॥५॥तांकेविविवासमुद्दिपावे॥पहिद्रव्यनिसवेजाउपजावे॥सोद्रव्यकर्मउज्जमपहिचानो॥याहिविवेकजुभेदनजा
नो॥६॥जोलोज्ञानउदयपुनिहोई॥तोलोजीवनसाधजोई॥तरीकर्मतेसोपहिरदेय॥नामचहूँकेउकरकहृदेय॥७॥वेदनी
यपहिलेकोमानो॥नामिकनामद्वितीपहिचानो॥गोत्रिकनामतीसरोहुये॥आयुवनामतरीकोपये॥८॥श्रेयअघाती॥
चारोकर्म॥इहीप्रगटनहिकेजेभरम॥संसारमाहिंरूवनोजोई॥वंधपदार्थजानोसोई॥९॥नष्टभयेजाकेकलेस॥तांकी
वासनरहीनलेस॥अनावरणाचनज्ञानस्वरूप॥सवकीसीमापरमअनूप॥१०॥ऐसोआत्मरूपरजावे॥आलोकिकआ
काशहपावे॥तामेइसथितिहोनाजोई॥मोक्षपदार्थजानोसोई॥११॥औरकहेपुनिऔरप्रकार॥सोमेकहोंसगलवि
सतार॥धर्माधर्मवंधयोजोई॥संसारमाहिंरूवेनरसोई॥१२॥तत्वज्ञानजोहिकोहोई॥धर्माधर्मदेयवहुलोई॥तेवका
जलअगाधकेतले॥तांकेपाथरहोवेगले॥१३॥गलितेइटजायवहुजवही॥ऊर्धतेवकजावेतवही॥तिउहीजीवऊ
र्धकोजावे॥सदानिरंतरनहिंटहिरावे॥१४॥ऐसेमोक्षवतावेयोर॥सदागमननहिंपयेठौर॥पूर्वकहेपदार्थजेते॥अ
नेकांतनरहेहिजिउतेते॥१५॥एकएकवस्तुहैजोई॥सप्तप्रकारकहीजेसोई॥सप्तभंगीनयपरमउदार॥साधेसप्तसप्त
प्रकार॥१६॥जोएकांतवस्तुजगमाही॥सदासम्यअसद्भानाही॥सर्वउसर्वरूपकरहोई॥हानप्रदानकरेनहिकोई॥१७
हेनाहीनहिकोरववतावे॥तोविनजनव्यवहारहजावे॥अनेकांतिकरअंगीकार॥मानवसाधेसभव्यवहार॥१८॥का
हूकदाचितहोवेकोई॥हानप्रदानहोहितवहोई॥ऐसेजैनदिगंवरभने॥हावनगाणतेबुधजनहिगने॥१९॥एकअर्थना
हिसप्तप्रकार॥होवेकहेकोनिरधार॥विरुद्धधर्मएककेमाही॥करेप्रवेशसदयोनाही॥२०॥जोविरुद्धएकएक
केमाही॥करेप्रवेशवैरतिहनाही॥तोविरोधभवभीतरजोई॥रूपातिलाज्ञलिनासपोसोई॥२१॥शीतरूपएककहिस
हिहोई॥विरोधीतांहिकहेनहिकोई॥पावककोज्योशीतवखाने॥भ्रांतीतांहिनकोऊमाने॥२२॥हेअरुनाहीधर्मा॥

मो
त
प
१७

रूढ़ ॥ यद्यपि कल्पित भव शसिद्ध ॥ धर्मी एक रूप न हि रहये ॥ निराधार नहि कल्पित पये ॥ २३ ॥ जो रहये निज ग्रात्म रूप ॥ सो ग्रस
मन हि सम स्वरूप ॥ जो लों को ग्रसमब लों वें ॥ होर ग्रसत्य ग्रसमन गावे ॥ २४ ॥ व्यवहार क जगत न रूप है जो ई ॥ ना हि ग्रसमस
मगुनि सो ई ॥ ग्रधिष्ठान ब्रह्म कर समाहये ॥ सनातन सत्ता लों की पये ॥ २५ ॥ नरूजे रहये जग सत्य स्वरूप ॥ ग्रनेकांत न हि मा को
रूप ॥ को ई कहूं कहूं जग रहये ॥ कहूं कहूं को नाही षये ॥ २६ ॥ यह हि जो द्विविध को व्यवहार ॥ दोनो तेने सगल निवार ॥ सत्य
रूप भव भीतर जो ई ॥ सर्व होर सर्वात्म सो ई ॥ २७ ॥ यह हि ग्रशंका ते री जो ई ॥ प्रति से तछ्न माने को ई ॥ व्यवहार क सत्य न संसे ॥
लेस ॥ देश काल संबंध विशेष ॥ २८ ॥ परछिन रूप का कैं ग्रग चाहे ॥ यां ते तेरे दोनो निरवाहे ॥ परछिन्न वस्त जि हहैं होर होर ॥
ईहा है भाव सम को ई ॥ २९ ॥ ग्रहगुनि ना हि जहां वहू होई ॥ ईहा न हि भाव सम को ई ॥ प्रणीरूप होर जग जो ई ॥ नभ जिउ स
वें होर में सो ई ॥ ३० ॥ प्रछिन्न रूप वस्त है जो ई ॥ कहूं कहूं न हि तिंस को ई ॥ या विध हो वे सम व्यवहार ॥ तो ते क र यो सदोष प्र
कार ॥ ३१ ॥ ग्रह परमार्थ दृष्टि निहारे ॥ जगत रहे न हि ब्रह्म विचारे ॥ धर्मी जगत न ही ग्रवजाते ॥ ग्रनेकांत साध ग्रव कांते
॥ ३२ ॥ एक एक वस्त है जो ई ॥ तो गुनि सम सम विध होई ॥ विरोधी सगल परस्पर रहये ॥ ते सगल एक हि मध्हि पये ॥ ३३ ॥ जो ॥
पदार्थ तेने द्विवलाय ॥ द्रवन तामे ग्राप लगाय ॥ सम विधा तामे है जो ई ॥ ग्रनेकांत प द्विचानो सो ई ॥ ३४ ॥ रष्टा पत्नि हू ॥
खन न हि को ई ॥ या विध करहु न तम ने होई ॥ सम क्रिय का होर विधाना ॥ हो हि ग्रनंत नने ग्रवसाना ॥ ३५ ॥ सम प्रति ला दो
ह विरोध ॥ ग्रैसे ग्रगट पिखो उरसोध ॥ जीव ग्रजीव हो र ग्रव जाह ॥ ग्रजीव जीव करना म कहार ॥ ३६ ॥ स्यादस्ति यहि वार तमा
रो ॥ सम भंगी जिह नाम उचारो ॥ सो ग्रवते मत भीतर ग्रायो ॥ ते सिद्धांत को नियम उहायो ॥ ३७ ॥ जो यहि जीव ग्रजीव हो होई ॥ ग्रो
र प्रकार न मानो को ई ॥ तो एकांत वाद यहि ग्रायो ॥ ग्रनेकांत ते हरव हायो ॥ ३८ ॥ दोहरा ॥ जो ग्रैसे न हि मानये निज मत उग्रं
ममान ॥ तो उन्मत्त निरूस नो को सगल को हान ॥ ३९ ॥ चौपई ॥ ग्रनेकांत ही रूप व खाने ॥ प्रवृत्ति निवृत्ति होर न वहाने ॥ १०

शास्त्रग्रंथकारहोइ अनेम ॥ अनेकांत मै सब वेनेन नियम ॥ ४० ॥ अविसवास ते शिष्य तपरे ॥ सो अवज्ञा यगरत मै परे ॥ नरहित शास्त्र की
गति ऐसी ॥ होवे सगल लोक गति तैसी ॥ ४१ ॥ कोई क हूं प्रहूं न नाही ॥ अविसवास सगल मन माही ॥ कोई क हूं प्रहूं न जवा
ही ॥ अनर्थ लहे तां ते बहु न वही ॥ ४२ ॥ धर्माधर्म तां फल रहित अनेम ॥ ताको जांने कहो न नेम ॥ रहदेव को भजन न जाइ ॥ इह क
रि सिद्ह लये बहु लोय ॥ ४३ ॥ भोजन न जगम मे करे न कोई ॥ मरणकारण सो निरचे होई ॥ विष को न भूखे तन जन मान ॥ भोजन क
रे हो इहितथान ॥ ४४ ॥ जल को पान करे नहि कोई ॥ राहदे न जाने इम होई ॥ अवस्था सम्म जगत हू गयो ॥ ते सिद्धांत ते का
ज न भयो ॥ ४५ ॥ अनेकांत करि अंगीकार ॥ साधे सगल लोक ब्यवहार ॥ सो विपरीत होइ अवगयो ॥ ब्यवहार भ्रम लोक स
भ भयो ॥ ४६ ॥ अहो ते शास्त्र सिद्ध तान ॥ संशय है न हि संशय मान ॥ इक धर्मी मे धर्म विरुद्ध ॥ भासे संशय रूप प्रसिद्ध ॥ ४७ ॥
स्याणक कियो परस्मा नु वरहयो ॥ जेसो यहि तैसो सो पयो ॥ अरु भव एवं वंध कहे जोइ ॥ अर्हं ना हि सगल अवते ॥ ४८ ॥ वंधन पाय
न हेडु:ख भार ॥ अनेकांत मत यह विचार ॥ शास्त्र उपाय विना सभ मोह ॥ होवे या मै कछु न सो ॥ ४९ ॥ शास्त्र उपाय करे जे
कोई ॥ तांते ताको वंधन होई ॥ जेन कहू यो परमाणवादु ॥ धर्माधर्मादिक प्रवादु ॥ ५० ॥ अनेकांत कथित न होइ ने ॥ भिन्न नर
ख न तामे गने ॥ मरमा ता भव मै जिउ वोले ॥ मिथ्या सर्व नन विरोले ॥ ५१ ॥ अरु अरहंत को करे प्रवेश ॥ सो गुन करे यथा
यपदेश ॥ तिउ जैनी सिद्धांत वखाने ॥ उन्नमज्जन नहि कोई माने ॥ ५२ ॥ उन्नमस्सागकरे मत जोई ॥ अयथार्थी तिरहण है न कोई ॥
संकोच उ कि मे भाख यो जोई ॥ जैन सिद्धांत हू जो सब सोई ॥ ५३ ॥ परणामी नित्य वखानयो जोई ॥ सूक्ष्म थूल लखे सम कोई ॥
भिन्नाभिन्न जीव के माही ॥ कारण कहे बने सो नाही ॥ ५४ ॥ जो परिणामी कारण होई ॥ खीर समान भरे गोसाई ॥ नित्य वच
न तां भी तर जो है ॥ उम्मन्न शलाप वरो वर सो है ॥ ५५ ॥ जीव अभिन्न वखानयो जोई ॥ किंचित ज्ञान पछानो सोई ॥ सूक्ष्म थूल स
गल न रहि जाने ॥ कि हि विध कारण तांहि वखाने ॥ ५६ ॥ भिन्न जीव ते हू ये जोई ॥ चेतन जिउ हो अचेतन सोई ॥ उक्त दोष गण

मो
तु
प
१८

नेत द्विज्ञास ।। जैन मत नास भयो निरास ।।८७।। दोहरा ।। जैनी मत नो निरास पिख करे मिमांसिक ग्राय ।। देत निखिल संसार को ।
सो सूनवे चितलाय ।।८८।। चौपई ।। सर्वज्ञ ईश महि न द्रिशमान ।। तांते देत न सो पहिचान ।। श्रुति प्रधान क्रिया भव गावे ।। सिद्ध
ग्रंथ मे मान न पावे ।।८९।। कार्य युक्ति ग्रंथ भव जोई ।। शब्द प्रमाण तांहि मे होई ।। वर्तमान पयो श्रुति उचारे ।। बालक तां ढिग आवे ।
तो निहारे ।।९०।। मध्य वृद्ध चर्ट ले पायो ।। तब बालक मन मे से आयो ।। चराचर न पन कार्य दे जोई ।। तादृश ज्ञान सदिछ्य गुनि सोई ।।
९१ ।। देत न और ज्ञान को कोई ।। शब्द देत पहिचाने सोई ।। या विध भयो शक्ति को ज्ञान ।। सिद्ध ग्रंथ मे भयो न मान ।।९२।। कह्ह स ।
लेत शब्द उचारयो ।। वागधे उमस सो निरधारयो ।। वाचं ध उपासे जोई ।। उन्नम फल भव पावे सोई ।।९३।। तांते ईशन कारण दृ
ये ।। कारण और जगत को पये ।। जीव अदृष्ट पर्याणत होई ।। पच्याणे ग भव कारण होई ।।९४।। इति मीमांसिक वैन उचारे ।। सो ग्र ।
सम्मन हि सार विचारे ।। यदि सर्वज्ञ सर्व वित हप ।। तान मयी ज्ञा को तप पये ।।९५।। इस्पादि श्रुति देजे तो ।। ईश्वर माहि प्रमाण
स्ते नेतो ।। विदवत्व ने क्रिया प्रधान ।। सिद्ध ईश्वर मे नहि परमान ।।९६।। ऐसो मत तम आरो जोई ।। करो निरास सनो अव सोई ।। व
र्तमान प्रपहि जिउ प्रमान ।। सिद्ध ग्रंथ मे तिउ पहिचान ।।९७।। शब्द बोध पाहि ते जैसे ।। सिद्ध ग्रंथ मे होवे तैसे ।। तंउ कि दृढ़ोर स
नो हि निहारयो ।। जो तेन मे मान उचारयो ।।९८।। उन्न रक हो ज्ञानो चितलाई ।। ऐसे दोर स टपो हि खोई ।। कार्य न ह्वां करो विन
नाही ।। शब्द प्रमाण ग्रहि तामाही ।।९९।। सवैया ।। नेत्र अरुप तभयो भव मे उन वेश वधावन कारण सोई ।। देनृप आहि सता तम
री भव गर्भ ग हे कुल रीन सलोई ।। होइ प्रसन्न गयो श्रुत वेद सर्व वदु रमलीन भयो दुःख जोई ।। या विध लोक विवेपिख ये श्रुति ।
सिद्ध प्रमाण तथा श्रुति होई ।।१००।। चौपई ।। जीव ब्रह्म एकता जोई ।। या गो प्रगट कहे गो सोई ।। सा श्रुति नित्य सिद्ध पहिचान ।। यौ
होत मे वेद प्रमाण ।।१०१।। वागधेन सम भावन जोई ।। तो न अदृष्ट स्वसगति सोई ।। स्वार्थ माहि न वाधक कोई ।। उपासन पर को
हू केस होई ।।१०२।। ईश्वर माहि वेद परमान ।। एक कहि योग सर अनुमान ।। होइ विचित्र कार्य जोई ।। तथा ज्ञान मत साधन

१८

सोई ॥ ७३ ॥ विचित्र कार्य को हेतु उरधानो ॥ दृष्टांत विचित्र सदस पछानो ॥ प्रमान उतै सब वेद निज गायो ॥ प्रकृत अनुमान प्रगट दिखा
लायो ॥ ७४ ॥ निरगुण प्यारे है स्वर जोई ॥ या विध सिद्ध पछानो सोई ॥ कारण ताते है वे सोई ॥ ते रकर हेन कारण दोई ॥ ७५ ॥ दोह
रा ॥ जड है नैयायिक मत है ने बहु विध युक्ति उदार ॥ अह रूप तामें होन मैं सोई लेहु विचार ॥ ७६ ॥ चौपई ॥ यो मीमांसिक मत ता
हि निवारयो ॥ करयो संक्षेप न बहु विसतारयो ॥ अब शुनि और कहे मन जोई ॥ सो मन पे भालों अब सोई ॥ ७७ ॥ केचित ब्रह्मा
हेत बतावे ॥ श्रुति स्मृति तामे दिखलावे ॥ हिरणगर्भ समवरतत भयो ॥ भूतपती जगतो निरमयो ॥ ७८ ॥ ऐसे श्रुति कहै ।
निरणीत ॥ जगकारण ब्रह्मा धरचीत ॥ भ्रता का कर्ता निज आहि ॥ ब्रह्मा अग्रे है पुनाहि ॥ ७९ ॥ ऐसे स्मृति है तब ब्रमावे सं
स को सभ भंजन मिटावे ॥ ताको दूखन देहि समासी ॥ परमहंस निज ब्रह्म निवासी ॥ ८० ॥ जैसी श्रुति स्मृति रह दूये ॥ तेसी ।
और नहीं कि पायये ॥ ब्रह्मा को जाने उपजायो ॥ निखिल वेद शुनि जो दिपछायो ॥ ८१ ॥ ऐसी श्रुति और शुनि दूये ॥ जा कीआ
तिन हि और पये ॥ ते दिखलाई स्मृति जोई ॥ तो प्रथम सो शान दे लपो कोई ॥ ८२ ॥ प्रथम शरीरी ब्रह्मा दूये ॥ श्रुह घनाम करसो ।
जगकह दिये ॥ ताके प्रथम भाग रह कहियो ॥ सो है जीव न संसर हियो ॥ ८३ ॥ पर रथ हूय ताकी है आउ ॥ याते भी बहु जीव स्वभा
उ ॥ सम वर्तन अह कर्ता आहि ॥ उत्तर कार्य कारण अनाहि ॥ ८४ ॥ तें तु वेद विरुद्ध वार है जे ते ॥ करो निरासया हि सो ते ते ॥ या वि
ध अहे प्रतिज्ञा धारी ॥ सो अब कार हे ता हि विसारी ॥ ८५ ॥ मीमांसिक हे रणगर्भ है जे ई ॥ वैदिक दोन पछानो तेई ॥ ता को मत अ
वतो हि निवारयो ॥ ताते सर्व वचन विसारयो ॥ ८६ ॥ मम वाता नी वैदिक कहोई ॥ नाहि अवैदिक भाव के कोई ॥ वैदिक अंश तांहि
की जेती ॥ नाहि निषेधी या मै नेती ॥ ८७ ॥ याग स्वर्ग दो नो भव जेई ॥ साधन साध्य बतावे नेई ॥ ब्रह्मा कारण भव मे जोई ॥ सो उत्त
र कार्य का होई ॥ ८८ ॥ सो हमना हि निवारण करयो ॥ मिथ्या का हि उलो भाउ वरयो ॥ वेद विरुद्ध अंश यो जेती ॥ वही निषेधी या
मो तेती ॥ ८९ ॥ या विध वे दविरोधी जेते ॥ तर्क ही निषेध करे सभ तेते ॥ या विध वादी के र निरास ॥ अब वैदिक मत है अपकास ॥ ९० ॥

मो
ह
प
५९

मायाशबलब्रह्म है जोई ॥ सम अरु पंच उपावे सोई ॥ निर्गुनब्रह्म असंग न कारण होई ॥ निर्विकार जानै है सोई ॥ ४१ ॥ मायासंयु-
जे तो महदिक कहो ॥ अहंकारादिक सम भलत्तणार हो ॥ लत्तणार हो न कार्य बनै है ॥ एक प्रकार न बहुविध जनै है ॥ ४२ ॥ जो ते प्रकरप
है सोई ॥ बहुविध किउ उपजावे सोई ॥ अकल ते तभव भीतर जहो ॥ अकलो पट उपजावे न हो ॥ ४३ ॥ कार्य बहुरो सट हूं होई ॥ शा-
क्ति विशिष्ट सदा है सोई ॥ शक्ति निराश्रय कहूं न रहे ॥ जयन सो काहू ते पये ॥ ४४ ॥ करा चित कार्य जो कर होई ॥ असमदिका-
दि भा तो को ई ॥ सो उपकार जने के नाही ॥ द्वितीय पद ते तिह मानो का ही ॥ ४५ ॥ कारण महि उपकार प्रधान ॥ प्रथम पत कूटस्था-
ह हान ॥ सम उपायो कार्य जोई ॥ नाहि असम होन अवसों ई ॥ ४६ ॥ सम निषेध न करै है कोई ॥ नाहि निषेध कहो किउ होई ॥ ने-
ति नेति यह श्रुति अर्थ ॥ विना निषेध लहै न हि अर्थ ॥ ४७ ॥ होवे जन न अन मोह असंगा ॥ जो ते न हि भव होवै भंगा ॥ अर्थ भयो अ-
ह पा जग माही ॥ तो को अर्थ न को भव माही ॥ ४८ ॥ इत्यादिक लवन बहु आवे ॥ वैदिक कादि सिद्धान्त दृढावे ॥ हंवन को करहो ।
उद्धार ॥ सावधान मन मै निरधार ॥ ४९ ॥ माया का अध्यासिक संगा ॥ असंग विवेक न हि लत्तणा भंगा ॥ नील गगन जिउ अरे ह असं-
गो ॥ अध्यास अधीन भये ते संगी ॥ ५० ॥ तो असंग ता न हि तिह हान ॥ तैसो ही यह संग पछान ॥ लत्तणार हे सकार्य बनै है ॥ एको
बहुविध को जग जनै है ॥ ॥ निज शक्ति अरूप जिउ कोई ॥ बहुविध रूप उपावे सोई ॥ तिउ ही ईश रचे जगसारा ॥ भव न बन तरट
प्रजा विस्तारा ॥ २ ॥ माया त्रिगुण अपर ह रहे ॥ अकल ते समसो न हि यहे ॥ लोहित शुकल कृसन गुण तीन ॥ बहुविध जगत
रचियो चीन ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ तीन वर्ण की नैन जिउ लोहित शुकल सश्याम ॥ वचित्र उपट उपजाय है देखे जन अभिराम ॥ ४ ॥ चौप-
ई ॥ शुकल ते तरह शान हि जोई ॥ ता ते अरे ह असंग ति सोई ॥ सदिकारी तरवे मात रहे ॥ वासन कर्म रहा ति [illegible]उ पये ॥ ५ ॥ तेस-
हकारी जागे जब ही ॥ भव उपजावे ईश्वर तब ही ॥ अनिर्वचनी उपकार रजने ॥ कूटस्थादिक लत्तणा न हि है ने ॥ ६ ॥ अनिर्वा-
च्य भव कार्य मान ॥ नेति नेति यह श्रुति प्रमान ॥ रजमाहि उरग उरमान ॥ कैसे को होवै भय मान ॥ ७ ॥ आनकेरे सति रहउ।

१९

देश॥ नहीं सर्प पदारि जु विशेष॥ तिउ ही श्रुति अर्थ को पावे॥ ग्रंथ वृती नहि अर्थ कहावे॥८॥ जैसे सोजगु तैसे सोजन बंधा॥ तां को
पायल हे दुःख बंधा॥ बंधन दूर लागु है जग हए॥ अर्थ कह्यो सके से पाए॥९॥ तेग ति को ग्रचार्य कहै॥ या विध श्रुति सगल भ्र
म रहे॥ या विध हरि वन भए उद्धार॥ नित चिन भयो सिद्ध होन हमार॥१०॥ नंत बीजं अंकुर का कारण देखे॥ ब्रह्म सम्म नहि कारण
लेखे॥ घट पट मे गति जानो ऐसी॥ ब्रह्म मा हि कारणता कैसी॥११॥ जा सो कार्य ग्रबिन होई॥ भव मे कारण भाखे सोई॥ बीज
शुक्र नहि अंकुर देखे॥ कारणता को किह विध लेखे॥१२॥ सत्ता शुक्र जन्म सम भए ये॥ कारण नया ता मे चन पाये॥ अनुकूलता
नते सब व बहु है से॥ ब्रह्म हेतु उपपाते न गै से॥१३॥ है अंकुर भासे तिह रूपा॥ प्रति संदर स्वजन ने अनूपा॥ ऐसो जन को अनुभव
कहै है॥ ग्रौर को अनुभव व हूदा वे है॥१४॥ घट पट मे ऐसी गत जानो॥ या मे भेद न रंच कमानो॥ ब्रह्म सत्य जे कारण ग्रइ॥
धाना तो हि न किउ जन गहे॥१५॥ कारण ब्रह्म न संसा कोई॥ धाना ग्रहि न भली विध होई॥ धाना कार्य विवर्त यो जाई॥ ब्रह्मा
कार उपजावे सोई॥१६॥ सम विवर्त नर धाना कारा॥ है वै अंकुर हि नु उर धार॥ तां को गहे न कारण सो है॥ शुकष हेतु नहि संसा॥
सा को है॥१७॥ या विध मूल विचारे जोई॥ शुकष हेतु उर धारे सोई॥ नतुं माया मिल कारण ते कह्यो॥ ऐसा नेम कहा कहिल
ह्यो॥१८॥ सम भंजन देख नहि को कागरो॥ इंद्रजाल न रनी कु पगरो॥ माया कर सम ही व हु जने॥ या मे नहि संसा को गने॥१९॥
इच्छा कर जग जने योगीस्वर॥ जिउ ही तिउ तुम जानो ईस्वर॥ विश्वामित्र जग उपजायो॥ माहि गुणा सगल व हु गा॥
यो॥२०॥ तिउ परमेस्वर रचे संसार॥ या मे नहि संसा कछु धार॥ ग्रवांतर भेद भयो है जेसे॥ भालो ग्रग टम नो ग्रव तेसे॥२१॥
सर्व ये व भूत उपजाय॥ बहुरो पंचीकरण बनाय॥ एक एक भूत है जोई॥ दोय प्रकार विभेद यो सोई॥२२॥ तामे एक भाग
गहि लीनो॥ चार प्रकार व ही कर दीनो॥ याप ग्रापनो छूट ग्र भाग॥ तां को करे सगल ते त्याग॥२३॥ ग्रान ग्रान छूट के मा
ही॥ जाय मिले चारो भव माही॥ एक छूट चार ल युजानो॥ या विध पंचीकरण पछानो॥२४॥ छूट भाग बंचो मे मान॥ न

मो॰ ब्र॰ पं॰ २१

भष्ट्रादिकव्यवहारपछान ॥ आकासमाहिशब्दहैकहये ॥ आयुविषेदोनोगुणपये ॥ २५ ॥ शब्दस्पर्शदोरूपपहिचानो ॥ तेजमाहिती
नतिउजानो ॥ शब्दस्पर्शरूपरहितीन ॥ जलकेमाहिचारहगुनिचीन ॥ २६ ॥ शब्दस्पर्शरूपरसजानो ॥ पृथ्वीमाहिपांचपहिचा
नो ॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधा ॥ पंचोकापयेसनबंधा ॥ २७ ॥ याविधधर्मविभागहिभयो ॥ तांतेअंडउभुनरभवलयो ॥ चौदहलो
कभयेतामांही ॥ तांमेजीवरहेभवमांही ॥ २८ ॥ तीनशरीरवानप्रमाना ॥ ताकोजीवकहेंविख्याना ॥ कारणलिंगसथूल ।
पछानो ॥ तीनसदेहजीवकेजानो ॥ २९ ॥ अंतरमयकोशाश्रेहैभवतोई ॥ कारणदेहकहीजेसोई ॥ व्याष्टिएकजीवकोहये ॥
समष्टितयाईशकोपये ॥ ३० ॥ कोशातीनमयिलिंगशरीरे ॥ व्याष्टिजीवकोजानोधीर ॥ समष्टितयाईश्वरकोआहि ॥ भाखेयो
प्रगटनिबंधनमाहि ॥ ३१ ॥ कर्मइंद्रियपंचपहिचानो ॥ पांचतथाभवप्राणहिजानो ॥ पहिदशभयेएकउजवही ॥ कोशप्रा
णमयजानोतवही ॥ ३२ ॥ कर्मइंद्रियसहितमनजोई ॥ मनोमयकोशपछानोसोई ॥ पांचोज्ञानइंद्रियभवहये ॥ छठीबुद्धि
तामेजवपये ॥ ३३ ॥ पहिविज्ञानकोशपहिचानो ॥ तीनोकोशलिंगतनजानो ॥ अपंचीकृतपंचभवभूत ॥ ताहीतेपहि
भयोप्रसूत ॥ ३४ ॥ पहिस्थूलदेहजगजोई ॥ कोशअन्नमयभाखेयोसोई ॥ व्याष्टिस्थूलजीवकोहये ॥ समष्टिस्थूलईशकोप
ये ॥ ३५ ॥ प्राज्ञजीवकारणतनमाही ॥ तेजसहोइलिंगकेमाही ॥ विश्वस्थूलदेहमैजानो ॥ याविधतीननामपहिचानो ॥ ३६
ईश्वरहिरण्यगर्भपहिचानो ॥ वैश्वानरवैराटहिजानो ॥ क्रमकरतीनउपाधिसमाही ॥ तीनसंज्ञाईश्वरमाही ॥ ३७ ॥ यावि
धउपजयोवहुविधराजा ॥ श्रीमानभाखेयोवेराजा ॥ तामनमैउपजयोवहुकाम ॥ सबकोकहूंनदेखेसम ॥ ३८ ॥ जैसेको ।
कामीभवमाही ॥ युवतीविनातांहिसुखनाही ॥ योविचारकीयोमनमाही ॥ भोगनहेतवयातनमाही ॥ ३९ ॥ तांतेप्रोरदेह
उपजावें ॥ तांकेसंगसुखवहुपावें ॥ योसंकल्पकरयोतिनजवही ॥ द्विधादेहहरयोपुनितवही ॥ ४० ॥ एकपुरुषहूसा
रुपनिनारि ॥ तांतेभयोसगलविसतार ॥ त्रिउलोकीमेकीटकहोई ॥ लोपुरभिन्नकेरभवसोई ॥ ४१ ॥ तिउप्रभाककेदोरूव

२१

नाय ॥ तांकोदेरहरालवरणाय ॥ स्वयंभूमनुपुरुषपहिचानो ॥ शतरूपानारीउरमानो ॥ ४२ ॥ मनुकीसगलसृष्टहैजेती ॥
इनतेभईपछानोतेती ॥ पुरुषनेनिजकमेनअनुसार ॥ नारीमनमहिकीयोविचार ॥ ४३ ॥ मेरापिताकियोयहिआई ॥ मोको
पाकीसारनकाई ॥ इनकेसंगरमोमैकैसे ॥ इणाचारनारीजगजैसे ॥ ४४ ॥ कामग्रसेजांकोउरमाही ॥ पुरुषधर्मकोजानै
नाही ॥ मैंतोधर्मभलीविधजानो ॥ केसेनांविपरीतनहिठानो ॥ ४५ ॥ तांतेमैंउत्तमभवनारि ॥ तवधर्मपरोभवपारि ॥ याविध
धकीयोवहुतविचार ॥ पुरुषनिवारणमैमनुधार ॥ ४६ ॥ निवारणतोंहिग्रशकानिहार ॥ वहुरकीयोमनमाहिविचा
र ॥ अवमैहोवोअंतरधान ॥ तोतेधर्मनहोवैहान ॥ ४७ ॥ तवतिनगोरूपनिर्मयो ॥ वैलपुरुषतेतौहीतणभयो ॥ गोकी
सृष्टितवीपुनिभई ॥ वहुरवेडवाहूरगई ॥ ४८ ॥ पुरुषतेरंगहोरपुनगयो ॥ ग्रस्वसृष्टितांतेभवलयो ॥ याविधनारिग
हेवुंतोरई ॥ पुरुषहोइतणाभीतरसाई ॥ ४९ ॥ नारीपुरुषअपजगजोई ॥ याविधउपजयोसगलोसोई ॥ पृथवीमाहिग्रे
सधीहोवै ॥ तांकोलायवहुतसलजोवे ॥ ५० ॥ पितअहमातउदरकेमाही ॥ भोगयोअद्रूपकेभवमाही ॥ वीरयदेहरूपा
तातनुमाही ॥ श्रोणतहोइमातकेमाही ॥ ५१ ॥ तिनकेसमेलेऊमिलजावे ॥ यौंहीस्थूलदेहउपजावे ॥ स्थूलदेहहैचारप्र
कार ॥ जेरजअंडजस्वेदजधार ॥ ५२ ॥ उदभुजरूपनरीजगहये ॥ याविधचारखानभवपये ॥ गुरुगोविदप्रगटयहि
गायो ॥ सभजनकोसंदेहमिटायो ॥ ५३ ॥ अंडजजेरजसेतजकीनी ॥ उतभुजखानवहुरचदीनी ॥ मानवादिजेरजयहि
जानो ॥ विहंगमादिअंडजउरमानो ॥ ५४ ॥ श्रुकादिकस्वेदजभवहये ॥ त्रिणपादपउदभुजजनपये ॥ याविधभयोसगल
संसार ॥ सोपविविवेरूपैसमधार ॥ ५५ ॥ प्रसंगग्रहिहितीयपरात्मजोई ॥ मायाशवलउपावेसोई ॥ जीवरूपकरिकेप्रवेश
माहिजगतप्रभजोग्रवलेश ॥ ५६ ॥ दोहरा ॥ वादरूपंथिनिवारकैनिजमतकीनउजार ॥ चेतनसतसलपामेमेअनुत
कहियोसंसार ॥ ५७ ॥ दोहरा ॥ हरिगरपादमनापकेपापोग्रंथेसजोर ॥ गुलावसिंघपौभाखोहेसशुक्तिनरहोर ॥ ५८ ॥ २

मो. प्र. २१

इतिश्रीमन्मानसिंघचरणसेवकगुलाबसिंघेनगौरीरायसुतेनविरचते मोक्षपंथप्रकाशे तत्पदवाच्यार्थनिर्णयो नाम प्रथमो निवासः ॥१॥

दोहरा ॥ शिवसुतनाथगणेशजी सिमरो विघनविनाश ॥ घनानंद भवदुखहरन करो सुबुद्धिप्रकाश ॥१॥ नराचछंद ॥ सदासुखं सुवालनं ॥ सुदेवि गोद पालनं ॥ सुशोक शोभ भालनं ॥ विरोधि कोप कालनं ॥२॥ सुभक्तपक्षपालनं ॥ विशाल लोलकाननं ॥ नमामिदं नमामिदं ॥ नमामिदं गजाननं ॥३॥ दोहरा ॥ चितस्वरूप परमातमा मदन मदन श्रीराम ॥ गजगामी जनभयहरण चरणसरण अभिराम ॥४॥ छपै छंद ॥ मदनकदनजनमदन रदनगतजलजवदनवर ॥ सरणहरणभयकरण भरणजनवरदधरणधर ॥ मरणहरण परधरण वरणचनकरण सगलगत ॥ तरनतरन वर धरन धरनधरसरणसगलमत ॥ परपरम परमवर समसरससरनदरनग्रचुग्रजकरन ॥ भगतसगलगतजयतजगजयजयग्रमलग्रमदसरन ॥५॥ सवैया ॥ दीननकेभवतापनिवारणतारणसेवककेगणजोऊ ॥ मोहमतेगनिवारणसिंघसदासरणागतपावतकोऊ ॥ दारुणबंधनिवारणभेदग्रछेदनिदारणकारणसोऊ ॥ हैं गुरुकेपदकंजउदारसुवेदितिहोकरजोरसदोऊ ॥६॥ चौपई ॥ पूर्ववारीकेरनिवास ॥ प्रथमपर्वमेसबलीनिवास ॥ तत्पदवाच्यनिरूपणभयो ॥ सीतापतिउरमउररयो ॥७॥ त्वंपदवाच्यग्रंथइहजोई ॥ करोंनिरूपणतनियेसोई ॥ साक्षीसर्वसदासतरूप ॥ बादविहीनअखंडस्वरूप ॥८॥ प्रेमसोचेतनभासयोजोई ॥ भयोजीवभवभीतरसोई ॥ जाग्रतस्वप्नसुषोपतितीन ॥ पहीअवस्थाउरमेचीन ॥९॥ तीनअवस्थासंगीजोई ॥ त्वंपदवाच्यकहीजेसोई ॥ बुद्धिउपाधिजीवतिहनाम ॥ साक्षीइलीअणर्णककाम ॥१०॥ कर्मकरेफलउरमेधारे ॥ तातिहलोकपरलोकसिधारे ॥ बहुरोनानाविधदुःखसहै ॥ ज्ञानपायसगलेदुःखखोवे ॥११॥ तत्त्वग्रात्मग्रसंगवताय ॥ अवस्थासंगकथंतिनपाय ॥ बुद्धिउपाधिसताटिकजेते ॥ कर्मफलादिकसगलेतेते ॥१२॥ लोकपलोता।

गमनहैतोई ॥ प्रसंगविवेकनहिवनेसकोई ॥ पंडितग्रहंकालमगीजोई ॥ करोंश्रहारसनोग्रवसोई ॥ ३ ॥ प्रसंगविवेकनहिंजात
कसंग ॥ श्रध्यासकहेरसगलप्रसंग ॥ सोपविवेकजितरूपोभास ॥ तिउग्रात्ममेसगलअकास ॥ ४ ॥ नंत्रसोपीकोज्ञानहि
जाने ॥ तोतामेनररजतवखाने ॥ पोग्रज्ञानग्रहेतांमाही ॥ कार्यरजतनहूंतेतांमांही ॥ ५ ॥ ग्रात्मसप्रकाशसमभान ॥ तांहिवि
वेकेसेग्रज्ञान ॥ ताविननहिहोवेग्रध्यास ॥ मिथ्यातेरोवचनविलास ॥ ५ ॥ संप्रकाशग्रात्महैजोई ॥ भानसमाननवैरीसोई ॥
तांहीकोरिभासपोग्रज्ञान ॥ कार्यसगलकरावेभान ॥ ९ ॥ ग्रहशुनिभाननिरंशनजोई ॥ कल्पितमेंप्रतकूलीसोई ॥ तानकत
मकोसविनासोरे ॥ ग्रध्यासिककोनहिपरहारे ॥ १० ॥ पंचिककल्पितजोतमग्रहे ॥ सोसविनाकेभीतररहे ॥ तांतेजोटहांतदि
खायो ॥ सोसिद्धांतग्रनुकूलहूग्रायो ॥ ११ ॥ मेग्रज्ञानीयोग्रज्ञान ॥ ग्रनुभवकोसभकरेवखान ॥ योग्रज्ञानभयोग्रतिभास ॥ रजा
तसमाननजनेग्रध्यास ॥ १२ ॥ तंत्रुग्रविद्यासमसरूप ॥ उतनग्रसम्यकहोतिरूप ॥ प्रथमेवाधनतांकोहोई ॥ समस्वरूपग्रात्मसम
सोई ॥ १३ ॥ द्वितीयेभानकहोकिउहोई ॥ ससमीगसमभावीसोई ॥ ग्रहपहिवंधमूलविनहोई ॥ मूलनग्रोरदिखायोकोइ ॥
उभयस्वरूपविरोधीग्रहे ॥ कोविस्फोरनतांकोकहे ॥ ग्रात्मतेपहिनिग्रारीमानो ॥ उतनग्रात्मग्रभिन्नवखानो ॥ १४ ॥ प्रथमे
ग्रोरहैरनहिरवी ॥ निग्रारीकहोसकिहविधलेखी ॥ तांतेग्रभहैरनहिरूपे ॥ ग्रग्रिउसजिउतातेपपे ॥ १५ ॥ द्वितीयेहोवेनि
जस्वरूप ॥ ग्रात्मभिन्नतांकोरूप ॥ तांकोवाधकहेंजेकोई ॥ ग्रात्मवाधप्रगटतिहहोई ॥ १५ ॥ भिन्नाभिन्नविरोधीग्रहे ॥ पूर्वसम
तांकोउरगहे ॥ ग्रहपहिनिगावयवनमानो ॥ उतसवयवसतोहिवखानो ॥ १६ ॥ प्रथमपक्षपरणामहिहीन ॥ यांकोलि
जउरप्रेतरचीन ॥ ग्रवयवग्रम्थयाजांकोहोवे ॥ तांकोनरपरणामीजोवे ॥ १७ ॥ द्वितीयेकार्यरूपपछानो ॥ क्रियानाशपला
हिउरग्रानो ॥ ग्रनेतग्रवयवकल्पनाकरो ॥ ग्रादिजनकनहिसोउरधरो ॥ १८ ॥ तीसरपंचयनयाउरमान ॥ शुनिकहेमेकरो
वखान ॥ यथाकर्यचितजोउरमानो ॥ तांहिसंवेपकहोकोठानो ॥ १९ ॥ जाकरचिरभीतरसोहोई ॥ मोकोकहोप्रगटनम

सोई॥ संयोगतदात्मताउरमानो॥ उत्तसमवायसनीके दानो॥२०॥ प्रथमे द्रव्यड हूं को मानो॥ तौ संयोगतंउतेभानो॥ क्रियावां
तिउनिहोहिसवयव॥ नहिउरमैधरतेनिरवयव॥२१॥ सगुणविनासीहरवेनजेते॥ आयलगेआत्ममहितेते॥ द्वितीयेतादा
त्मतैहोइ॥ जनजनकजौयामोकोइ॥२२॥ दोनअनादीयौमनतेरो॥ जन्मजनकनहियामैहेरो॥ यामोकोइकजन्यवखानो
श्रुतिविरोधप्रगटतवजानो॥२३॥ अजाअविद्याश्रुतिवखाने॥ तिउअजआत्मकोउरमाने॥ तृतीयेगुणअरुगुणीनकोई॥
तृतीयसंबंधकहोकिउहोइ॥२४॥ जातिसमअर्क्कादिकसभजेते॥ दोनविवेनहिमानेतेते॥ विनासंबंधरहतहैजोई॥ त्वरवि
षाणसमजानोसोई॥२५॥ पूर्वपक्षकीयोतवजेतो॥ दोउसौमोहनहोतेतो॥ नवधामाहिनकोईमाने॥ अनिर्वाच्यहमता
उरठाने॥२६॥ औरसंबंधनकोईअहै॥ अध्यस्ततदात्मकोविदकहै॥ नभअरुनीलमकोजगजैसो॥ तांहिसंबंधपछानो
तैसो॥२७॥ जन्यजनकभावहैजोई॥ सादीमाहिपछानोसोई॥ अनादीमाहिहोइविनताही॥ नभतादात्मजिउनभमाही॥
२८॥ नतूपयपिअविद्याअहै॥ आत्ममहितैसोतूकहै॥ नयपिनहिअध्यासहिहोई॥ सादृशविनवहूवनेनकोई॥२९॥ सी
पीरूपनिदर्शनजोई॥ सादृशविनवहूवनेनकोई॥ वाकविकाकरदोऊसमान॥ याहीतेतहिरजततान॥३०॥ कोलेमो
नहिरजततान॥ सादृशविननीकेपहिचान॥ आत्मऔरअनात्मजोई॥ अहैविलक्षणदोनोसोई॥३१॥ सर्वांगसादृशनहि
कोई॥ यथाकथंचितजहिततहिहोई॥ आत्मअरुअहंकारसमान॥ अंतरत्वकरनीकेमान॥३२॥ पतोगहिहूंकारध्यास॥
आत्ममोहिभयोपरकास॥ वुद्धिमनादिकसगलेऐसे॥ तांअध्यासआत्ममैतैसे॥३३॥ नतुनीलदृष्टिविकोणअभान॥ दृष्टा
मअंशकोहोवेभान॥ तवहीरजतहोइतांमाही॥ औरप्रकारनकोभवमाही॥३४॥ आत्मनेरोअंशविहीन॥ तामेनहिअ
ध्यासहिचीन॥ निरंशपदार्थजोहरभान॥ तौतांकोनहिकछुअभान॥३५॥ वास्तवअंशनतामेकोई॥ अविद्यकसगली
तिहहोई॥ सहयअनात्मेदअत्तान॥ जउस्वसतासीनपछान॥३६॥ अहयानेदअहैविदरूप॥ सत्यरूपआत्मअनूप॥ पूर्णान

अज्ञानविरुद्धअहेतिहअंश॥याकरआतमभयोसअंश॥४७॥अद्वितीयआनंदहकोअज्ञान॥सतअरोचितमात्रपुनिभान॥तो
अध्यासहोइतामाही॥संसेयाहिविवेकछनाही॥४८॥पहुंतातरइकऔरअहे॥बिनअज्ञानऔरनहिचहे॥तांहीकरिहोवे
अध्यास॥भानअभाननकछुप्रकास॥४९॥प्रथमेरहेमात्रपुनिहिभान॥पाछेतेपुनिनिरंजनतान॥योअनुभवनहिकाहूहये॥
तोतेज्ञाननदोतहपपे॥५०॥इहंरंजनतयोअनुभवयक॥ताहीकाअवकरोविवेक॥याअनुभवतेप्रथमअभान॥योसभही
जनकरेबखान॥५१॥अधिष्ठानसमानज्ञाननतुजोई॥अध्यासहेतपहिचानोसोई॥कार्यकरिकल्पयोइमसोइ॥तोविनुन
हिअध्यासहिहोइ॥५२॥बिनुअज्ञानऔरनहिचहे॥तोतेपक्षअसंगतिअहे॥ऐसेकांहेकरेबखान॥सोकारणयामोनहिमा-
न॥५३॥नतुअधिष्ठानसंयोगजैवेनहिहोइ॥जोरजतादिकवनेनहोइ॥इंद्रिययोगहोइपुनिजबही॥ज्ञानसमानजनेवा-
कूतबही॥५४॥दोहरा॥नवपाछेपुनिनिरंजनभ्रमहोवेनरहूअपार॥शहनिरूपतेआदिलघसाधेसभव्यवहार॥५५॥चौपई॥
यहिसत्तामैमानपछान॥मानाभावकिउकरेबखान॥अधिष्ठानसंयोगजोतोहिउचारे॥सोइमकहूंनहिदंडनिवारे॥५६॥तो
नेऐसेइंद्रियसंयोग॥कारणभयोनवर्णनयोग॥ज्ञानसमाननहेतअहे॥सोकाहेपुनिपुनितुंकहे॥५७॥नंतुसादृशवि-
नुनहिअध्यास॥यहिमैकीयोप्रथमप्रकास॥हृदेशापटहयोजोई॥चतहकोगाकरिभाससोई॥५८॥तोनहिहोइकेजबअ-
ध्यास॥कोहनताहिकरेप्रकास॥कतनकोयोवहूपरमसमान॥सोजबहोवेयाकोभान॥५९॥तांपाछेनरपदमउचा-
रे॥सोकारणइमतोतेधारे॥यांहिअंशकापीनीजोई॥होननिराससनोअवसोई॥६०॥सादृशविनहोवेअध्यास॥नभम-
हिनीलरूपपरकास॥पीतशंखअरुनीलोनीर॥लालहोइनीलोनिसचीर॥६१॥चंद्रप्रभामहिसभजननहेरे॥नीलविलोक-
हिसंसेटेरे॥गउमोकटकरसहिअध्यास॥पित्तउपहितिंकरेपरकास॥६२॥इत्यादिसादृशविनुअहे॥प्रगटअध्याससगा-
लजनकहे॥तनरूपरसहिअज्ञान॥तवतैसोहोवैतनहभान॥६३॥तोतेजरहसादृशताहोइ॥अज्ञाकहतकेथनसमसोइ॥न

तेजन

मो
त
पं
२३

रूनेरूगतिपीतमजोई ॥ नरनैननसोंदेखैसोई ॥ ८४ ॥ तांकोकिहूभावखेयोअध्यास ॥ संखविखेपहूमिथ्याभास ॥ नैनविखेजो॥
पीतमग्रहे ॥ ताहिकहोनरकैसेगहे ॥ ८५ ॥ आपननैननैननहिंदेखे ॥ वह्नपीतमकोकिहविधपेखे ॥ अरुवह्नपीतसंखमोदे
वे ॥ जातेपीतसंखपुखदेवे ॥ ८६ ॥ तातेनैनविखेवह्ननाहीं ॥ पीतमग्रहेसंखकेमाहीं ॥ ननजाकेदिगदोषहिहोइ ॥ तारगपी।
तलखेसभकोइ ॥ ८७ ॥ जातेपीतमहैदिगमाहीं ॥ कैसेकहयोसतामोनाहीं ॥ संखअरुदगकिरणपधारे ॥ नवपीतमतासं।
गसिधारे ॥ ८८ ॥ पीतकिरणाकरिव्यापयोसोइ ॥ तातेपीतसगलवह्नहोइ ॥ ताहीतेनरपीतउचारे ॥ याविधहूखनसगलनिवा
रे ॥ ८९ ॥ तातेसत्यपीतताग्रहे ॥ तांअध्यासस्नकिहविधकहे ॥ तंतुजेसत्यग्रहेताहीं ॥ अौरनभानहोइकिउनाहीं ॥ ९० ॥ कां।
चनलिमऊभजिउपीत ॥ पीरोहीसभपरैचीत ॥ इतिशंकाकोनहिउरधारो ॥ उत्तरयामोप्रगटविचारो ॥ ९१ ॥ पित्तजन्मजो।
पीतमहोई ॥ ताकेनिकटगहैनरजोई ॥ सोईताकोंदूरहदेखै ॥ अौरनतांकोकोईपेखै ॥ ९२ ॥ जिउविहंगअतिऊडजावे ॥ नि-
कटदेशजोताकोपावे ॥ तांहीकोनभभीतरभासे ॥ अौरनतांकोकोपरकासे ॥ ९३ ॥ इतिशंकाकोकरोप्रहार ॥ तीकेतेउ।
रग्रंतरधार ॥ ताकेचक्षुनिकटपरदेश ॥ इतरकरेखचक्षुनिवेश ॥ ९४ ॥ तांकोभानग्रहेइउरवार ॥ पहीसमतीकोउरधार
अरुनिजनैनपीतताजोई ॥ पत्तीसमनहिदेरैकोई ॥ ९५ ॥ तातेअौरतर्कप्रसार ॥ संखविखेपीतमनिरधार ॥ सोवह्नपक।
अरुघहीभान ॥ तातेकल्पतरजनसमान ॥ ९६ ॥ पीतादिकजोरूपदिखाए ॥ सोमेकल्पितनीकेगाए ॥ ज्ञानसमाननसा
दृशहूये ॥ गहूअज्ञानपकतेपये ॥ ९७ ॥ रूपविनाननहिंचाक्षुषज्ञान ॥ यहींतुमहैसगलसमान ॥ तहितहिसमरूपदे।
जोई ॥ तांकोप्रथमगहेनहिकोई ॥ ९८ ॥ जेतांकोपहिलेवह्नभान ॥ तोनहिपीतमकानहिज्ञान ॥ सकलविरोधीपीत।
मकेरे ॥ तांभासेनहिसोनहिंहेरे ॥ ९९ ॥ रूपविनानहिहोवेभान ॥ तांतेकैसेज्ञानसमान ॥ प्रकाशपदादिकसगलेजेते ॥
गनेनजाहिग्रहेवहिकेते ॥ १०० ॥ तांअवछिन्नग्रहेचिरजोई ॥ तलअविद्याआश्रयसोई ॥ तांमोइहैदियजबजावें ॥ संगति ॥

२३

पायत्वो भउपजावे॥ ४९॥ त्रभिपयूविद्याका परणाम॥ उपादिकलानानतिहूनाम॥ उपविशिष्ट हो रनुभजवहीं॥ नीलो नभयों
भासे नवहीं॥ ५०॥ तिलनीरचीरगति ऐसे॥ माहियू काश कहीं गति जैसे॥ तांते सारूशहान समान॥ तां विन भयो अध्यास पु
ह्यान॥ ५१॥ याहूपदमें हावन जेते॥ उधृत भये सगल वहूतेते॥ तांते सिद्ध भयो अध्यास॥ सोमें कर सन लश काम॥ ५२॥ अन्ते
हूयो अन्तानाध्यास॥ अहंभयो हूंकाराध्यास॥ मेरो वो परहूं दियाध्यास॥ अहंडवेलपहूशणाध्यास॥ ५३॥ मेले वो यहू क
रकाजानो॥ याविध कर्मेंद्रियपहिचानो॥ मैं नरयहू नरतन अध्यास॥ यां मरस गलकेरे परकाश॥ ५४॥ मेरो धन सभ गयो
विलाय॥ मोको वहूदुख लागोआय॥ यो नर धन अध्यासवखाने॥ धन के हान हानवहू माने॥ ५५॥ मेना रीसुत वांधवद्या
ने॥ वहूदुःख पावे जाहिनगाने॥ यां को जीवन किहविध होइ॥ इउं जन सोच करे सभ कोइ॥ ५६॥ याविध नारी सुत अध्या
स॥ सभ ही जनमुखवकेरे प्रकास॥ नत्रु अन्तानाध्यास जगायो॥ तां को देतनको दिखलायो॥ ५७॥ स्वपरकानिर्वाहिक
सोई॥ तांमा औरनभाखोकोई॥ चिदुभाने जिंउ चेतनकेरे॥ भेदको भेदकभेदहू अदे॥ ५८॥ चट के भेद विविध पट भेद॥ नेदो
नोनेमतहू अभेद॥ धर्मी का भेद करे है सोई॥ भेदको भेदक औरन कोई॥ ५९॥ वाधकसाधक अहेहू समान॥ तांते सोउ रभी
तरमान॥ याविध सिद्ध भयो अध्यास॥ तांलक्षण अव करो प्रकाश॥ ६०॥ अस्मन्नुअस्मत्नहूरभान॥ याही को अध्यास प्र
ह्यान॥ सर्वहूद सगल जेभये॥ तिन यो ही लक्षण निरमये॥ ६१॥ भुजंगप्रयातछंद॥ रहे राम गीता विखे राम भाख्यो॥ ग
ण सर्प के रोहिरहू ह्यान राख्यो॥ क्रिया के वनायो गुणं सिंधनी के॥ जये नाम जाके मिटे दुःख जीके॥ ६२॥ चौपई॥ भा
ष्यकार श्री शंकर नामा॥ सर्व करे जिंहू पदपरणामा॥ तिन भी मुख वेने यो ही गायो॥ शारीरकभाष्य विखे दिखलायो॥
आत्म अहू अनात्म जो ई॥ मिलप रस्पर हो तो सोई॥ अन्यो न्य भयो अध्यास॥ सत्यानृत मिथुन परकास॥ ६३॥ नत्रु मिलप
रस्पर होतो सोइ॥ यां को ग्रंथ कहो तम को इ॥ जो संयोग ग्रंथ तिहू गाहो॥ तो अध्यास न मुखवेन कहो॥ ६४॥ होतो सत्य मि

मो. त. प. २५

लेशनिहोई॥ चरथिरजिउंसंयोगहहोई॥ जडवादात्मसुखतेगावो॥ इहवनदोविधकेतवपावो॥२८॥ तनग्रात्मग्रनात्मजो।
ई॥ परस्परतादात्महोई॥ जोहोयतौभयोग्रनर्थ॥ ग्रध्यासपदमहिनहिकोग्रर्थ॥२९॥ ग्रभिन्नग्रनात्मग्रात्मजोई॥ होइवि।
नासीतदवतसोई॥ ग्रात्ममाहिग्रभिन्नग्रनात्म॥ होइग्रनासीजिउंतिग्रात्म॥३०॥ प्रथमपक्षनिजग्रात्मभंग॥ द्वितीयप।
क्षग्रनमोक्षप्रसंग॥ संयोगपक्षग्रंगीकार॥ द्वितीयेमैकछुग्रहेविचार॥१॥ जोकोभानस्वतंत्रहोई॥ सत्यरूपपहिचानो
सोई॥ पराधीनसत्ताजिहहोई॥ कल्पितरूपपछानोसोई॥२॥ कल्पितकोतादात्महुये॥ संसर्गाध्याससत्यकोपये॥ तो।
तेसत्यस्वतंत्रहोई॥ कल्पितसमनहिनासीसोई॥३॥ ग्ररुग्रनात्महुयेजेतो॥ ग्रात्मभिन्नग्रसाचोतेतो॥ जोग्रात्मग्रभिन्न।
हहोई॥ तौग्रनात्मनातिनखोई॥४॥ उभयप्रकारसमिथ्याहुये॥ भिन्नाभिन्नविरोधीपये॥ रूपोभिन्ननसत्तापावे॥ सोपी
सत्तासगलवतावे॥५॥ तिउंग्रात्मग्रनात्ममाही॥ सधीविचारेनिजमनमाही॥ सर्वत्रग्रनुगतिगुनिजोई॥ ग्रधिष्ठानप।
हिचानोसोई॥६॥ व्यभिचारीभवभीनरजोई॥ कल्पितरूपपछानोसोई॥ टंउमालग्ररुभ्रमरणाय॥ कल्पितरजविखेनिरा।
धार॥७॥ जाग्रतस्वप्नसुखोपतिजेते॥ ग्रनुगतिग्रात्मकल्पिततेते॥ तेहंग्रात्मकोदुःखहाई॥ तीनग्रवस्थाजेगुनिगाई॥८
यौग्रध्याससहितचितजाने॥ दुःखग्रनेतलहेबहुताने॥ यागादिकजेकरेउदार॥ तेफललहैनदुःखकोपार॥९॥ प्रथमेंई।
हातेदुःखपावें॥ बहुतनयत्नकरिद्रव्यमिलावे॥ लखधारसोंग्रंगचरावे॥ तोकछुधनभूपतितेपावे॥१०॥ याविधसगलयत्नके
माही॥ सधीविचारेदुःखमनमाही॥ योंतोग्रर्जनमाहिकलेश॥ रक्षनमेंमनहिसुखकीलेश॥११॥ मेनारीसुतयाहूनदेवे॥ ग्रौ।
रनयाकोकोईपेखे॥ योंहितगहियकेलोचाले॥ ताहूनकोनहिदीपकजाले॥१२॥ तहंभीनसो[illegible]मस्तकफोरे॥ चुपकरिरहेन
कछुमुखबोरे॥ मौनगहेमाटीकोफोरे॥ लगेकुदालपांउकोतोरे॥१३॥ भूमहिबहुदुःखपायगडाय॥ इतहूतनहंतेहंषिवजाय
जैवेजैवेचरमैपगधारे॥ तैवेतैवेबहुहोरनिहारे॥१४॥ भलीप्रकारनभोगेग्राप॥ भूपतिकामनमहिसंताप॥ मतमेरेधनको।

याहिहिरे ॥ याहितमलिनवेसकरफिरे ॥१५॥ याविधसंचितमाहिकलेस ॥ कहूंनपयेसुखकीलेस ॥ तांकोनछुहोइधनजेवा।
ही ॥ आगामेंतदुःखपावेतवही ॥१६॥ खरचिहोइसोमेदशाजवही ॥ बहुतप्रकारसोचमननवही ॥ याविधनरबहुदुःखकोपा
य ॥ यत्नकरेकछुहूखमिलाय ॥१७॥ याविधभयोइकत्रजवही ॥ तांधनकीगतितीनविधतवही ॥ किनहूंकोगाडयोरहिजावे॥
आगनाहिनरयमपुरजावे ॥१८॥ केचितकोविरदपरमउदार ॥ तांसोयत्नकरेंविसतार ॥ यागनमेंबहुविधदुःखपाइ ॥ तिउं।
तिउंकरसुरलोकहिजाय ॥१९॥ तांहिविवेदुःखअहेअपार ॥ विसकारतेवारंवार ॥ निजतेवडोजेवेकोदेखें ॥ तवआपना।
सोदुःखबहुपेखे ॥२०॥ तागहुछुअसूयाजने ॥ मानसदुःखकछुजायनगने ॥ असरकरेदेवनकोपीड़ ॥ भंगहोइदेवनकी।
भीड़ ॥२१॥ यज्ञभागतेकरेउछेद ॥ तांतेलहेदेवबहुखेद ॥ कराचितशत्रुसंगनिवास ॥ शत्रुहरेसतनाहिअवास ॥२२॥ ति।
नकीइछनारिहरलेवे ॥ यादप्रहारसबहुदुःखदेवे ॥ विमानहरेतिनदेयनिकार ॥ सोचकरेसुरवारंवार ॥२३॥ कौनअप
राधशिवनहूंकेरे ॥ गोतमादिकोपकरहेरे ॥ गोतमादिकोपकरहेरे ॥ होइविरूपगयोतनमांही ॥ सुरपतिसोचकरेमन
मांही ॥२४॥ धिगमोकोअपराधीभयो ॥ शिवकेआपरूपमुहिगयो ॥ इंद्रादिककीजोगतिऐसी ॥ औरनकीअवभाखोंकै।
सी ॥२५॥ इंद्रश्वरतेतांकोभयभारी ॥ कोइनशकेसतांनिवारी ॥ जिउंजिउंपुण्यहोहिंतिहखीन ॥ तिउंतिउंसोचकरेमनदी
न ॥२६॥ सतिअरूनारिअध्यमसरिगये ॥ पापअनुसारनरकतिनभये ॥ तांकोहोइबहुतदुःखपावे ॥ देवनकेदुःखगनेनन।
जावे ॥२७॥ तनकोधारजहांजहंजावे ॥ तहांतहांपुनिपुनिदुःखपावे ॥ यहीकहूंयामुखवेदव्यास ॥ अथवहनतेकीयोसमा
स ॥२८॥ तथाच ॥ तदुचनं ॥ इहूलोकेमहदुःखंप्रजापमेतथैवच ॥ विसलोकेचरीरेहूचदुःखमेवविचारतः ॥ चौपई ॥ तांतेगि
रतेमोदुःखपावे। जलमयरेहूसगलगलजावे ॥ पुण्यभोगजिनपापनिखोरे ॥ तेतनहितेनरकपधारे ॥२९॥ पुण्यपापशेष
जोकेकछुहूये। तांकीगतिपुनियाविधपये ॥ वायुभ्रमवादलतेहोइ ॥ वर्षाजलजन्मनकोजोइ ॥३०॥ यवअरूधानजन्म।

कोपावें ॥ भोगेरक्ररेतहूरजावें ॥ वहुरोपोछटिगर्भमहिजाय ॥ नानाविधकेदुःखतहिपाय ॥३१॥ वहुरोजन्मका
लजवग्रावे ॥ प्रसूतवायुतेपीडापावे ॥ मरणसमानदुःखकोपायो ॥ योनिविवरतेवाहरग्रायो ॥३२॥ जन्मग्रंतरदे
दुःखभारे ॥ सभजनरहेजाहिनटारे ॥ समर्थहीनग्रतिवालकहोवे ॥ वहुतप्रकारदुःखनहिजोवे ॥३३॥ खोटविलेमा
तातिहइरे ॥ ग्रहकृतकेरनतोहिचितारे ॥ हँनुकरेवहुलरकाजवही ॥ ग्रावेजननीतोकीनवही ॥३४॥ वाकेमतकृणका
देग्रंगा ॥ मायकहेथनपीयुसग्रंगा ॥ किहविधकेसतथनकोपान ॥ मतकृणहुंमेभुजंगसमान ॥३५॥ जवलरकावहुभू
खोहोवे ॥ तवमातातिसग्रानतजोवे ॥ देयपिग्रावनथनहिपिलावे ॥ तातेलरकावहुदुःखपावे ॥३६॥ याविधकेदुःखग्रहे
ग्रनंता ॥ गनेकहांलोग्रादिनग्रंता ॥ तरुणग्रवस्थामोसुखनाही ॥ वहुविदुःखहेताकेमाही ॥३७॥ तरुणग्रवस्थामेव
हुक्रोध ॥ तातेहोइधर्मकोरोध ॥ ग्रापजलेग्रौरनकोमारे ॥ ग्रालणहूकेप्राणनिकारे ॥३८॥ क्रोधभरयोवहुपापकमावे
ईहांदुःखग्रागेपुनिपावे ॥ तरुणग्रवस्थामेवहुलोभ ॥ धनकोहोइकरेचित्तक्षोभ ॥३९॥ जोकर्मतेवहुदुःखपावे ॥ धनहि
ततेउकर्मकमावे ॥ इच्छाखरचिनमेदुःखजेते ॥ वर्णकरेसगलमेतेते ॥४०॥ ग्रवलाजूपमोमनलागे ॥ कुलकीलज्यास
गलत्यागे ॥ वित्तनाशयांकोहुइजावे ॥ जहितहितेग्रनादरपावे ॥४१॥ शत्रुयाकेकरेग्रपकार ॥ तातेहेदुःखवारंवार ॥ जे
धनवंतितजगतमेग्रहे ॥ तोकेदुःखयाविधकेकहे ॥४२॥ जेधनहीनजगतकेमाही ॥ तोकेखेदगननमोनाही ॥ त्तरस्रोन
हिकछुलरकाखावे ॥ वाहरतेनहिकछुधनपावे ॥४३॥ मरणहूतेतोकोदुःखभारे ॥ प्रकटहिसूमाहिविचारे ॥ वृद्धग्रव
स्थायाभवजोई ॥ वहुदुःखकाग्रालयहैसोई ॥४४॥ सतग्ररुनारितहांमरजावें ॥ तातेवृद्धदुःखवहुपावें ॥ ग्रौरनकेगृहभी
तरहे ॥ मृत्तिकसंवंधीकोदुःखदहे ॥४५॥ वहुपांकोकछुकृत्यवतावें ॥ वृद्धग्रवस्थामोभुलजावे ॥ तेसुखतेयोवोलवेना
मानोवानधरेउरपेना ॥४६॥ ग्रापनेसगलकुटंवीखाय ॥ हमेरहरमेवेठाग्राय ॥ ग्रोरकृत्यमानहिग्रधिकार ॥ रच्छाकरेद

मारे हार ॥४७॥ हाराकी जो तिली न हुइ जावे ॥ संमक को ईन जरन न पावे ॥ सरमा पेट करे रुधि पान ॥ तां ते करे सव हुं अपमा
न ॥४८॥ खाणे कोवे दे जर न वही ॥ अलेन भुखते भाखे कवही ॥ हारे पर जर पाट पसारे ॥ मैन करे सभ काज विगारे ॥४९॥
भुखते तें तन निकर कर जावे ॥ अंन अंट नते वहु दुःख पावे ॥ या विध नाना दुःख को पाय ॥ वहु रोय मकिंकर चर आई ॥५०॥ म
रणविखे दुःख हो वे भारी ॥ कोइ न सके सूतो हि निवारी ॥ सर्व अंग मो प्राणनि कोरै ॥ आन सगल हिरदे मदि हरे ॥५१॥ तां ते दुः
ख तिन हो वे ऐसा ॥ सहस अही ईके काटे जैसो ॥ धनी अधनी होइ न कोई ॥ सगल समान सुय हि दुःख हो ई ॥५२॥ निरधन नरत
न जरि ये जरही ॥ सग आन सगाल खो हि भुनि तहा ॥ धनी पुरुष को मरणो जैसो ॥ भाखो कछुक सुनो अव तैसो ॥५३॥ जिनसो
करे सव वहुत सनेह ॥ तिन की गति सुनी ये अव एह ॥ जां विन [illegible] न न खावे ॥ वहुत भांति दर्शन अकुलावे ॥५४॥ नावि
न वेद सौध के माही ॥ मीटे आसन गहु सुख माही ॥ जां को शय्या सेज के माही ॥ सुभ फूल परे जां माही ॥५५॥ अति सीतल लेपे
अस सुवावे ॥ ताको तन अग्नि मै पावे ॥ अति कोमल जां के कर हूये ॥ वहुत सुगंध जो हि मे पये ॥५६॥ ऐसी नारी यां चर माही
करे सपर्श उरे उर मांही ॥ तील तृणका हूले कर माही ॥ तां को दे रे मर हट माही ॥५७॥ हेरथ गज अश्व पर वैठावे ॥ शिवका मे जां
को लै जावे ॥ वैरी जन उस तन को करे ॥ उपवन को सन मुख अनुसरे ॥५८॥ तां को शर का टके माही ॥ लै जावे मरहट के माही
वांध व सगल थां हरी मारे ॥ निज नैनन हु ते जल को ढरे ॥५९॥ मंगल वाजे जां के संगा ॥ गीत नृत्य हो वे वहु रंगा ॥ या विध
जो ईके पियान ॥ सो अव जावे वैठ विवान ॥६०॥ नारी रुदन करें तासंगा ॥ भल पेटे जो के अंगा ॥ जा के आगे टीध ले जावे
लाजा की वर खावर खावे ॥६१॥ तां के आगे ने अव जा री ॥ धूम सहित पावक कर माही ॥ निज सुत निज नारी को जोई ॥ एवं
तणन हि सागी सो ई ॥६२॥ सगले मारग चलि यो अव जावे ॥ फिर कै वा तन न पक वनावे ॥ जां के पाट कमल ते गिरे ॥ लै जल
छिरसी सि पैथरे ॥६३॥ तासपर्श तें करें सनान ॥ वोले पेत हो हि भय मान ॥ या विध सगल संवधी मा गये ॥ यम हतन के आ

मैलागयो ॥ ८४ ॥ तेगहूनरकविषेलैजावें ॥ जांसोंजीवबहूतदुःखपावें ॥ जोईहांपरधनकोहरे ॥ परनारीगहअपनीकरे ॥
८५ ॥ कालपासनरकमोजाय ॥ यमदूतननतेपीडापाय ॥ खानपानकोहैकछुनाही ॥ ताडेदूतसदिनदिनमाही ॥ ८६ ॥ शूद्रो
होइपरेधरमाही ॥ हायहायबोलेमुखमाही ॥ जोईहांजीवनकोमारे ॥ तेरूरहोइसवतांहिप्रहारे ॥ ८७ ॥ रौरवनरकविषेजन
जावे ॥ रूरूजीवतिहिकरटकरखावे ॥ सर्पहूतेभयानकअहे ॥ नैननसोपावकसमदहे ॥ ८८ ॥ दंडकरेअदंडनमाही ॥ नरा
कपरेसूकरमुखमाही ॥ राजाराजपुत्रघजोकोई ॥ तहिंशरयोयमदूतनसोई ॥ ८९ ॥ मरटनसगलअंगगहूरजावे ॥ शखुय।
छ्रीकीगतिकोपावे ॥ अनरस्वरकरककरेपुकार ॥ अतिवलपीरेवारंवार ॥ ९० ॥ अगम्यनारिकोसेवेजोई ॥ चहूवर्णमोहो।
वैकोई ॥ अथवानारिरमेनरमाही ॥ नरकपरेतेसंसेनाही ॥ ९१ ॥ लोहेकीतहिंनारिवनावे ॥ पावकसोयमकिंकरतावे ॥
नरकेगलमोआनमिलावे ॥ जलजलअंगधरतमोजावे ॥ ९२ ॥ योहीलोहपुरुषवनावे ॥ दुष्टनारिगलिभीतरलावे ॥ हा
हामुखतेकरेपुकार ॥ चावकमारेवारंवार ॥ ९३ ॥ जोनरसभअभिगामीहोइ ॥ योगअयोगनहेरेकोइ ॥ तांकोयमकिं।
करगहलेवे ॥ नरकविषेनानादुःखदेवे ॥ ९४ ॥ शालमलीइकनरकेअहे ॥ वज्रसमतिहकंटककहे ॥ तांकेविषेसवा
कोडारे ॥ करषणकरेकरनसोमारे ॥ ९५ ॥ पूजकदेपितयाभवमाही ॥ विप्रवेदमेंसंसेनाही ॥ इनसोद्रोहकरेनरजोई ॥
कालसूत्रमहिजावेसोई ॥ ९६ ॥ दसहजारयोजनविसतारा ॥ चहूंओरतेमंडलकारा ॥ तांअमयअतितातोअहे ॥ नीचेते·
पावकतिहदहे ॥ ९७ ॥ ऊपरतेरविकरेसताप ॥ तांमोनरवहूलहेसंताप ॥ खुधापियासाभीतरदहे ॥ हायहायमुखतेता।
हिकहे ॥ ९८ ॥ कवहूंदौरचलेतामाही ॥ कवहूंगिरपावेधरमाही ॥ कवहूंमुहमीटकरवहे ॥ इनदूततनदहेपावकदहे ॥
९९ ॥ मैहीनाहिकहीयहवातहूव्यासभाखीव्याख्यात ॥ पंचस्कंधभागवतमाही ॥ भाखीप्रगटसंककछुनाही ॥ इस्मा।
दिदुःखअहेअपारा ॥ कोकविगनेलहेनिहपारा ॥ जदीपंवजिह्ववारंवारा ॥ भ्रमेजीवदुःखलहेअपारा ॥ १०० ॥ कोइकहे

वे म्रगी भाग ॥ या भव ते ग्रह छवैराग ॥ सर्व लेउर दोष विचारे ॥ सर्व विलप ते मन ते टारे ॥४१॥ यह सम विषय मोह दुःखदाई ॥ क
हूं न पये सुख की राई ॥ भारत खंड जन्म को पायो ॥ धिग मो को विषयन मन लायो ॥४२॥ भारत खंड जन्म जे पावे ॥ करउपाय ।
भव को तर जावे ॥ भारत खंड जन्म है जोई ॥ सर समूह सम भवांछे सोई ॥४३॥ तां ते मे सोक करो उपाय ॥ जां ते दुःख सगल मिटजा ।
य ॥ यह सम जगत ॥ कछु थिर नाही ॥ नाश होइ तत्तण तत्तण के माही ॥४४॥ नित्य वस्त को खोजे रहै ॥ जां को वेद निकस सभ क
है ॥ या विध करे विवेक ह जोई ॥ तां को खट संपति शुनि होई ॥४५॥ समदम उपरत तितिक्षा जोई ॥ श्रद्धा समाधान ता दोई ॥
यहि खट संपति कही उदार ॥ जो हि प्रसंग गह भवभार ॥४६॥ वहुर मुमुक्षता यों को होवे ॥ ताविन और वासना खोवे ॥ इनचा ।
रो साधन को पावे ॥ तव सतगुरु की सरणहि जावे ॥४७॥ समिधा कर पर करे प्रणाम ॥ निज कल्याण लखे तिह धाम ॥ मा
न वढ हित गुर मै धरे ॥ मन अरु तन कर तां अनुसरे ॥४८॥ निसदिन करे गुरुन की सेव ॥ मे सरणागत तुम श्री देव ॥ तौ नो ।
ताप त्रके सम अग्र है ॥ मे उर अंतर को अति दहे ॥४९॥ देव दयानिधि परम विशाल ॥ मे को कढन हो उर साल ॥ मे हो कौन जिने ।
दुःख पायो ॥ या भव भीतर कि उकर आयो ॥५०॥ तव गुर यों तिह करे उपदेश ॥ नष्ट होहि सभ तांहि कलेस ॥ अपरछिन्न परिम
णी जोई ॥ जुदा ने रत्ता समन को ई ॥५१॥ तव मसी सेस कछु नाही ॥ आप भुलाय परयो भव माही ॥ पाही ने तहि तीनो ताप ॥
जाने आप मिटे संताप ॥५२॥ सीतापति अरि गन सभ हारी ॥ यही वखान योजन सुख कारी ॥ रामगीता महि प्रगट वतायो ॥
अज्ञान एक भव मूल दिखायो ॥५३॥ तां को नास ज्ञान ते होई ॥ नवम स्लोके भाख्यो सोई ॥ तांते ब्रह्म आप को जान ॥ सगल
करो तम वंधन हान ॥५४॥ नंत खान पान तामो कछु नाही ॥ ज्ञाति वर्ण न हि ताके माही ॥ अपरछिन्न है स्वयं प्रकाश ॥ नि ।
त्य मुक्त सम भव बंधन नाशा ॥५५॥ सत चित आनंद है घन रूप ॥ अमल अदृष्ट तौ अनंत स्वरूप ॥ त्रिधा पिपासा मो को भारी ॥ अति उ
त्तम है जाति हमारी ॥५६॥ ज्ञान लखन वर्ण अपरछिन्न स्वरूप ॥ करण अधीन सज्ञान अनूप ॥ राग द्वेष दोष मुहि अरे हैं मे ॥ उअंतर को

अतिरहेमे ॥ ५५ ॥ कर्मअधीन बंध पुनि हूये ॥ आप विनासी मेरो पये ॥ साक्षी दुःखी परछिन्न सरूप ॥ मेरो अहे सद्वितीस्वरूप ॥ ५६ ॥
ऐसो मेमे निजरूप बतायो ॥ ततमसी अभ किउ करगायो ॥ यदि हि सेसमो को अतिभार ॥ हे प्रभ ता को करो प्रहार ॥ ५७ ॥ तथापि
पासा ध्यान नमाही ॥ जाति वर्ण सभ तन के माही ॥ असंग अद्वितीय सरूप तमारो ॥ ता हि परछिन्न कहा चित धारो ॥ ५८ ॥ वास्तव
रूप तमारो जोई ॥ सप्रकाश पहिचानो सोई ॥ करण अधीन ज्ञान मन माही ॥ सत्व दुःख सगल लखो तिह माही ॥ ५९ ॥ राग
द्वेष मन को सभ हूये ॥ तो को दाहिक हो किउ पये ॥ देश काल भेद जिह नाही ॥ वस्तु परछेद न जा के माही ॥ ६० ॥ ऐसो आप वेद
जो कहे ॥ ततमसी किउ संसे गहे ॥ ननु बहु सर्व सर्व का कर्ता ॥ सभ प्रतिपालक सभ को हर्ता ॥ ६१ ॥ मे अल्प तन सभ को
कर्ता ॥ नहि प्रतिपालो नहि सभ हर्ता ॥ ततमसी अभ तो हि बतायो ॥ सो मेरे मन महि न हि आयो ॥ ६२ ॥ या संका को दूर जोई ॥
करे लक्षणा परित सोई ॥ यो अद्वितीय भयो सवाद ॥ तव आप परि पंथी वाद ॥ ६३ ॥ प्रथमे चारवाक चल आयो ॥ तिन या विधि
को वेन सुनायो ॥ गुरु को सेवन भाव यो जोई ॥ ज्ञान ग्रंथ निरर्थक सोई ॥ ६४ ॥ आत्म देह प्रगट पुनि हूये ॥ ता हि से देह किसी को
पये ॥ प्रमाण प्रत्यक्ष एक ही हूये ॥ भूत चतुष्टय तत्व सु पये ॥ ६५ ॥ प्रकाशन होइ करे प्रमत्त ॥ पाने ता हि न माने दत्त ॥ काम अ
र्थ पुरुषार्थ हूये ॥ मोक्ष मरण विन और न पये ॥ ६६ ॥ ननु भव कर्ता ईश्वर अहे ॥ चार पदार्थ के से कहे ॥ नहि को कर्ता ईश्वर हा
ये ॥ स्वतः स्वप्रणाम भूत जग पये ॥ ६७ ॥ भूमि विखे जो अरे बीजा ॥ ता मे और न कर्ता दूजा ॥ तं नु स्वतः स्वप्रणाम भूत जे हूये ॥ और न
कर्ता ईश्वर पये ॥ ६८ ॥ परलोक विखे फल दे वे कोइ ॥ जो नहि ईश्वर भव मे होइ ॥ परलोक कथा सभ व्यर्थ पछानो ॥ ता हि नि
मित्त न ईश्वर मानो ॥ ६९ ॥ क्रिया कर्ता इच्छ विनाश ॥ तां ते जे हूइ फल प्रकाश ॥ दाता अग्नि रहत सुमजे ई ॥ फल उत्तम पावे प्रवर्ते ई
स ॥ तां ते ईश्वर को इन हूये ॥ चार पदार्थ नीके पये ॥ ऐसे मत सिद्धांत उचारे ॥ को विद ता को दूर निवारे ॥ ७० ॥ देह अनात्म आत्म
नाही ॥ दृश्यत्व जडत्व हे तन माही ॥ अपवत्व नाशत्व पछान ॥ भौतिकत्व नेत्र सम जान ॥ ७१ ॥ ननु ज्ञानी कथ मिले न हल ॥

तेजेउ देला लीका मूल॥ देहाकार मिले तेज वरी॥ चेतनता भूनन मे नवही॥ १६॥ चेतन आत्म यों तन होई॥ जउ तवे देलना।
मो न हि कोई॥ देह विवेज उत्तव दिखावो॥ तेरे सगल कुतर्क मिटावो॥ १७॥ पूर्छी अरु पुनि मरणो माही॥ देहपरी देखे धरमाही
नहि चेतनता तामे पये॥ सो आत्म वह कैसे हूये॥ १८॥ चूना कथ्थु पान तेजेई॥ चेतन विनु मिलते न हीते ई॥ भूतक हो चेतन
विनु कैसे॥ मिले टहोत नहीं को तेसे॥ १९॥ मिलन कर्तो चेतन जोई॥ पंचम एक पदार्थ सोई॥ तांते देहन आत्म हूये॥ आत्म।
चेतन और हूपये॥ २०॥ ननु देह विना जे आत्म होई॥ चाटवन टेखेता को कोई॥ नहि देखे तांते वह नाही॥ तांको जन माने।
अवकाही॥ २१॥ मेछो तामे दीजे वाल॥ मे वृंदा सितमे रे वाल॥ वर्ण आश्रम सभ तन मे धरे॥ ज्ञान कर्म सभ तामे करे॥ २२॥
चिरंजीव यहि देहि असीस॥ देह विवेन हि और अथीस॥ अहंप्रतीति विषय निज आत्म॥ नहि तो कोउ न कहे अनात्म
२३॥ अहंप्रतीति देहमे होई॥ नहि जन भीतर संसा कोई॥ यांते देह आत्म इक अहे॥ ऐसे चारवाक पुनि कहे॥ २४॥ आत्म उ।
पही न वह हूये॥ चटसम रूपनता ते पये॥ मेरो तनु छोटो अति हूये॥ मेरो तनु दीर्घ अति पये॥ २५॥ या विध ममता भीतन
माही॥ तांते आत्म सो तनु नाही॥ देह विवेहं ता अभिमान॥ चिर अध्यास विना नहि मान॥ २६॥ ज्ञान कर्म लो भा विजेते॥
आत्म माहि प्रमाण न तेते॥ जांते आत्म तनु ते निआरो॥ अनुमानन करनी के धारे॥ २७॥ ननु ममता बुद्धि जो रहि मे होई॥ क।
हूं अनात्म देह यो सोई॥ चट अरु पट मंदर के माही॥ ममता बुद्धि हो हि जहि जाही॥ २८॥ नहि तहि सगल अनात्म हेरे॥ नहि।
कदा चित आत्म टेरे॥ ननु अनुमानो करत तनु ते निआरो॥ यद्यपि तव आत्म निरधारो॥ २९॥ तद्यपि ना हम उर मे माने॥ मान प्र।
त्यक्ष एक वखाने॥ प्रत्यक्ष विना नहि और प्रमान॥ ओसो मो हि सिद्धांत पछान॥ ३०॥ अनुमानादिक सभ मान दिखावो॥
शिर सिपार टेते तो हि मानावो॥ जे अनुमान न तनु ज उमाने॥ के सेवाद विवाद हठाने॥ ३१॥ परको आशय जेनो हूये॥ वाक्य शार व
ण करते तो पये॥ जांते पर है वोले इहरीत॥ तांते इन के ऐसे चीत॥ ३२॥ यों अनुमिति कर सगलो जाने॥ तापाछे विवाद सहठा।

ने॥ वाद विवाद हेतु उर धार॥ अवश्य करो अवश्यंगीकार॥ ३६॥ प्रत्यक्ष विना न हि और प्रमान॥ यह तो मानत किम अस प्रमान॥ प्रथ
मे श्रुत प्रमाण इह माने॥ द्वितीये सो उक्ती कर हाने॥ ३७॥ उक्ती हान मानते पये॥ तो हि अभाव कहो कि उहये॥ अनुपलब्ध तृतीये
हाने॥ ३८॥ मेघ गर्जत व पुरह समान॥ उपमान विना किउं करे वखान॥ उपमिति सार वृष ज्ञान वखाने॥ निज सुत ते ता को तन भा
ने॥ ३९॥ मन मे सगल मान कर माने॥ सुत ते किउं अवक्रुद्ध वखाने॥ अनुमान विवेक न भनी केहये॥ सो अस तत कहु कैसे पये॥ ४०॥
अहह केचित या विधन रहये॥ जन्म अनंतर जांव धपये॥ केचित पांच वर्ष लौ हावें॥ केचित वीस वर्ष लखि जावे॥ ४१॥ केचित सौ
हे सब वर्ष पचास॥ बहु विध या को करे प्रकास॥ केचित शत वर्ष लौ रहे॥ बहु विध के उर मे दुःख सहे॥ ४२॥ केचित निखिल
आयु सुख पावें॥ केचित दुःख आयु बितावें॥ देह समान विषम किउं होई॥ तो मे हेतु न भाखे यो कोई॥ ४३॥ सवैया॥ जो निज क
र्म सहेतु कहे॥ जउ तौ तनु ते पहिले उर मानो॥ जो निज आत्म तु पसनातन तौ हि अभाव कथं खल दानो॥ इ छि सहेतु वने कब
हूं न हि॥ एक अदृष्ट सदा चित आनो॥ तो हि अधार उदार सदा निज यातनु ते अप्रति भिन्न पछानो॥ ४४॥ चौपई॥ कर्म अधार देह ते
न्यारे॥ जो आत्म उर अंतर धारे॥ तौ परलोक कथा सभ व्यर्थ॥ यह है तेरो वचन अनर्थ॥ ४५॥ परलोक अभाव कथं जउ देहे॥ मानुप्रा
क प्रत्यक्ष सदेहे॥ भावी विवेक न सो परमान॥ अनुमान प्रभृति न माने मान॥ ४६॥ अनुमानादिक जो मान वखानो॥ तौ परलोक
सदा उर मानो॥ ते सगले तिह भाव अभाव॥ नास्तिक दावित करे अभाव॥ ४७॥ क्रिया अरु गुनि दृश्य विनास॥ इत्यादिक जो कीयो प्र
कास॥ तौ हि उधार सनो चित लाई॥ निखल संदेह तो हि मिट जाई॥ ४८॥ करी रीश न याग जन करे॥ सम अग्नि न हो आग मे जरे॥ विज्ञा
न न जे होवे त हि कोई॥ तौ फल तौ हि लखि सम कोई॥ ४९॥ करी रीव हु वर खो विसनारे॥ यो न याग कर शत्रु विदारे॥ जिउं ईश फल
होवे भारो॥ मा हि अलोक तथा वीचारो॥ ५०॥ दावा दग्ध द्रुम दृष्टांत॥ हो तनिरास सनो प कांत॥ बैन वीज दव अग्नि जलायो॥ ज
ले वीज के लाउ पजायो॥ ५१॥ तो हि विवेक फल कुं उसहाय॥ वीज विजाती बहु फल जाय॥ विध विहीन जे दुख ने लाय॥ इत रह तस

सफल नहि जाय ॥४९॥ विषवत हद्य जन लाय जे ते ॥ वेत बीज सम फल करने ते ॥ फल पर दाता ईस्वर जो ई ॥ यव अवशाक आयो सो
ई ॥५०॥ सो बहू पक देरन हि रूये ॥ फल यां ते सम भटे रे पये ॥ तां ते सो सम भटे रन मारी ॥ थावर जंगम जे जग याही ॥५१॥ भूमे ये अंकुर
सो उपजावे ॥ सत्य ता ते नन टर न आवे ॥ स्वतह पर नाम वखान यो जो ई ॥ गयो जलां जल गहि ग्रव सो ई ॥५२॥ काम अर्थ पुरुषार्थ
जो ई ॥ विना विचार वखाने ते ई ॥ काम विषम भव भीतर जे ते ॥ बहू प्रकार दुःख करने ते ॥५३॥ अर्थ माहि नर जे दुःख पाय ॥ सर्व ते
सभ भाख सनाय ॥ मरण विमोक्ष सिद्धांत तत मारे ॥ उमन्न प्रलाप सभ मान विचारो ॥५४॥ या तनु को नर उरे जब ही ॥ ओर गहे क।
मे न वसन व ही ॥ चारवाक मत हूय जे ते ॥ दुष्ट पछानो सग लो ते ते ॥५५॥ तां ते सत्व ग्रथी नर जो ई ॥ चारवाक मत त्यागे सो ई।
या विध वादी एक निवारे ॥ अब हूं सर पुनि वेन उचारे ॥५६॥ देह न आत्म सत्य वखानी ॥ इंद्रिय आत्म माने ज्ञानी ॥ मे सत नहो मे दे।
खो इप ॥ मे सत चोर सले युअन्य प ॥५७॥ अहं प्रतीति विवित हूये ॥ ता विन आत्म ओर न पये ॥ या विध ये सिद्धांत वखाने ॥ ज्ञानी ता
हि न ता नी माने ॥५८॥ इंद्रिय नहि आत्म परधान ॥ करण हेत ता मे पहिचान ॥ कुठारादि कर दृष्टांत हमान ॥ तां ते आत्म नाति हि
हान ॥५९॥ काना कर के शब्द सुनी जे नै ॥ नैनन सां चटरूप गहीजे नै ॥ या विध करण सगल निरधारे ॥ आत्म का हे तां हि उचा
रे ॥६०॥ एक एक जे आत्म भाये ॥ स्वामि नाना तव दोष तव आयो ॥ तिन को एक मतो न हि हो ई ॥ भिन्न प्रयोजन ज्ञाते सो ई ॥६१॥
मत न गजे इस मव लज्जा को ॥ करली खिर बंधे नर तां को ॥ ते सम भट दिशा दिशा गेर पधारे ॥ करली खिर खंड खंड करडारे ॥६२॥ तिउ पुन
पन आत्म यदि सभ ही ॥ दिशा दिशा गेरे सिद्ध होवे जब ही ॥ देह विदारण ता छिन होवे ॥ तत्स्वामी ज्वर इक खोवे ॥६३॥ तां सम पुर
जे आत्मक दे ॥ अधम भूक न हि जीवत रहे ॥ नैन चरत सम उदाय न हूये ॥ अधम भूक किउं जीवत पये ॥६४॥ जीवत देख सगले तां।
ही ॥ निह कर ते आत्म भव नाही ॥ मूर्छा मरण सलोप निज वही ॥ लीन करण गण होवे तव ही ॥६५॥ मूर्छा मरण विखे इस जै।
सो ॥ मारि सलोपनि होवै ते सो ॥ बहूर समान सवेन हि को ई ॥ जाग्रति माहि दुःख बहू सो ई ॥६६॥ अहं पुनि अहं प्रतीति हसे तो हि ॥ आत्म

साधकभारवीमोहि ॥ ताकोहेतसुनोचितलाई ॥ जांतेतेसंसैमिटजाई ॥६७॥ अहंप्रतीतिइंद्रियजोई ॥ चिदआभासजननहेसोई ॥ अह
प्रतिममतामेहोई ॥ नाहिंसदेहयाहिमेकोई ॥६८॥ मेरोश्रोत्रमेरेनेना ॥ ऐसेसभजनबोलेवेना ॥ यहिअनुभवकेसप्रतिहो
ई ॥ जोनहिंआत्मतांबिनुकोई ॥६९॥ ममप्रतीतिविवेकरदेखे ॥ कर्ताकरणकर्मतांपेखे ॥ जिउंकर्ताइंद्रियतिउहइये ॥ आत्मता
नहितामेपये ॥७०॥ याविधवादीद्वितीयनिवारे ॥ अवतीसरयोवेनउचारे ॥ समकहयोइंद्रियपेनाही ॥ प्राणआत्माहैभवमा
ही ॥७१॥ प्राणगयपतेमृतकवतावें ॥ रहेतांहिजीवनदहरावें ॥ जीवनमरणप्राणअधीना ॥ तांतेप्राणजीवकरचीना ॥७२॥ क्र
मकरइंद्रियगणसभगयो ॥ तोनहिदेहमृतकयहिभयो ॥ प्राणनलगोदेहकोप्राण ॥ इंद्रियगणहोयोभयमान ॥७३॥ देहविव
रणहोइतवगाई ॥ मरणउपकोउत्सुखभई ॥ प्राणकहियोतुममतभयपावो ॥ मेरीशरणसगलमिलआवो ॥७४॥ पंचरूपधारमे
लेवो ॥ तनुराखोसुखतमकोदेवो ॥ प्राणवचनयहिवेदवखायो ॥ चेतनप्राणताहितेजानियो ॥७५॥ प्राणपिआरेसभतेहये ॥ अ
धिकप्रेमआत्ममेपये ॥ धनअहसततेअतिसेपिआरे ॥ आत्मवेदनिरूपउवारे ॥७६॥ मेत्वावोजलकरहोपान ॥ पहिप्रतीतिवडी
बलवान ॥ याविधप्राणधर्मैहैजेते ॥ आपनमाहिलखेजनतेते ॥७७॥ तांतेआत्मप्राणपछानो ॥ समकहीसंसानहिआनो ॥
योकेचितवोलेधरआस ॥ तांकोमतअवहोतनिरास ॥७८॥ प्राणआनात्महैजडरूप ॥ भौतिकलखयहिहेतअनूप ॥ अहप्रतिके
रणस्वामीजोई ॥ वेदवखानेआत्मसोई ॥७९॥ जाग्रतसुपनभोगअमपाय ॥ जीवजवैसतलपतिमोजाय ॥ चनानेंदपरमात्मली
न ॥ विशेषवृत्तितेहोवैहीन ॥८०॥ प्राणविशेषवृत्तिकोपावे ॥ सवनासिकमोआवेजावे ॥ करणविरामकहोकिउहोइ ॥ तांको
देवजवेनहिसोइ ॥८१॥ भूपतिकरमोखउगाउचारे ॥ पुधकरेवेरनसोजाय ॥ मैनिकनहितवकरेविराम ॥ स्वामीसहितकरैसं
ग्राम ॥८२॥ करणलीनदेखेसभकोइ ॥ तातेप्राणपतीनहिहोइ ॥ जीवसंगहोवेतेलीन ॥ प्राणभिन्नस्वामीवडचीन ॥८३॥ तंन
प्राणभिन्नजोस्वामीहये ॥ ऐसेसभमेसनासमपये ॥ जहीहेरवडस्वामीजावे ॥ प्राणसकाहिनतहांसिझावे ॥८४॥ पहिसंकात

मरौहै जो होई ॥ वेद निगम सकरेस निसो रे ॥ प्राण हरता वे अवर रुलाय ॥ खेले आप सपन मो जाय ॥ ८५ ॥ राज भार मंत्री सिर देवे ॥ राज्य
भवनांतर सुख लेवे ॥ तिउं ही देह धरे पर हि प्राण ॥ सुपन रमे प्रत्यक भगवान ॥ ८६ ॥ ऐसे वेद वखाने वानी ॥ प्राण भिन्न माने निह
जानी ॥ प्राण स्रष्टा चल ना होई रहे ॥ अचल आपको सभ जन कहे ॥ ८७ ॥ निहकल निहक्रिय श्रुति वखाने ॥ प्राण भिन्न तां ते जन
माने ॥ जो तै कहि यो प्राण के गए ॥ देहादिक सभ मृतिक भये ॥ ८८ ॥ जीव गए ते मृतिक होई ॥ तां ते जीव जानियै सोई ॥ तां का उ
त्तर करो वखान ॥ सावधान मन भीतर आन ॥ ८९ ॥ परलोक गमन देह तउ रमान ॥ प्राण रचे प्रत्यक भगवान ॥ तां सो मिल जावे प
रलोक ॥ बिधु जन सम करि है सोक ॥ ९० ॥ जीव रहे तनु जीवन होई ॥ न प्रकृति कभा वे सभ कोई ॥ तां ते प्राण तरग सम हुये ॥ तां
ते भिन्न आत्मा पये ॥ ९१ ॥ वेद कही प्रानन की वानी ॥ सो न हि प्राण देवता मानी ॥ प्रानन का अभिमानी जोई ॥ भाखे सगल देवता
सोई ॥ ९२ ॥ अधिक प्रविष्य कर अभेद ॥ प्राण शहू कर भाखे वेद ॥ जो न हि माने ऐसो कोइ ॥ वचनांतर बाधक तिह होइ ॥ ९३ ॥ प्रा
ण मन नहीं न सुआमी ॥ निरमल परम जोति अभिरामी ॥ ऐसे किउ श्रुति वेद वखाने ॥ प्राण भिन्न किउ आत्म हाने ॥ ९४ ॥ देह पिआ
रौ इंद्रिय जैसे ॥ प्राण मे मन जानो सम भै तैसे ॥ चिदानंद को न हि अध्यास ॥ तहां होइ यहि प्रेम प्रकास ॥ ९५ ॥ प्राण मादि हूं ता अभि
मान ॥ भाखे यो सो व्यभिचारी मान ॥ कदा चित सभ जन ऐसे कहे ॥ मेरे प्राण दुःखी वह रहे ॥ ९६ ॥ मम प्रतीति गोचर है जोइ ॥ सट
म सम मान अनात्म सोइ ॥ दी न मान है सरक नियारो ॥ सो आत्म उर अंतर धारो ॥ ९७ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ जबै प्राण वारी मनं तेम आ
ड़ो ॥ नवै आनवारी सबै नेउ चारे ॥ इसी भांति बोले मनो मीत आप ॥ विरोधं विना जातु [illegible] धं दिखाप ॥ ९८ ॥ चौपई ॥ आत्मा अ
नात्म ते जो भाखयो ॥ सम कर यो उर मे दृस राखयो ॥ जो न हि आत्म परिमन होइ ॥ तौ प्रानन को माने कोई ॥ ९९ ॥ संघात विले
मन अहे सत तंत्र ॥ और सगल है तो परतंत्र ॥ सावधान मन होवे जब ही ॥ नानाटिक उपजावे तब ही ॥ १०० ॥ जो यहि सावधान न
हि होइ ॥ तान उपावे कहे न कोइ ॥ या हि युक्ति ते आत्म सोई ॥ और न माने को विद कोई ॥ ॥ प्राण भिन्न अंतर तिहरूप ॥ मन म-

मो॰ द॰ प॰ ३

यआत्मअहैअरूप॥ ऐसेवेदसवरवतेगावे॥ याताभिन्नआत्मदिखलावे॥२॥ मेसंकल्पकीयोअतिभारा॥ ताकोजायसरस्वतीधारा
मनकोधर्मसंकल्पकहावे॥ सोआपनमोसभजनलहे॥३॥ याअनुभवतेआत्मलहे॥ मनसंदेहनपावेमेपर्ये॥ ऐसेकेचितकरेव।
खान॥ दूखनगणमतदुरूपजान॥४॥ मनअनात्मआत्मनाही॥ विकारवनदेहनतामाही॥ होइविकारीभवमेजोई॥ तौरस
मानअनात्मसोई॥५॥ सोआत्ममनकोउपजावे॥ ऐसेवेदप्रगटघुनिगावे॥ उत्पतिवानजगतमेजोई॥ चरजितंअदेअनात्म
सोई॥६॥ जितंइंद्रियहैकरणस्वरूप॥ तितंमनकरणनआत्मरूप॥ स्वतंत्रताजोकरीवखान॥ करणासधारणतेवहमान॥
७॥ मनअधीनजोभाववेखान॥ ताहीतेवहुतैनसमान॥ तैनकरणजैसेभवहैसे॥ तितंमनकरणवेदहीदेसे॥८॥ चान्नुषा।
ज्ञानतैनविननाही॥ इन्द्रियतितंमनविननाही॥ असाधारणकरणनेनजितगायो॥ मनसाधारणतितदिखलायो॥९॥
स्वरूपज्ञानअविरहहोई॥ मनोअधीननहोवेसोई॥ मनकोगतागतीकोजानेस्वप्रकाशतिहश्रुतिवखाने॥१०॥ अरुघु।
निशुद्धअशुद्धहजोई॥ तौरसमानअनात्मसोई॥ मनपरकुशुद्धअशुद्धसरूप॥ कैसेहोइसुआत्मरूप॥११॥ अहारशुद्धतेमनो।
हशुद्ध॥ अहारअशुद्धतेहोइअशुद्ध॥ आत्मसनपाशुद्धस्वरूप॥ सोनदिहोवेयाहिस्वरूप॥१२॥ शुद्धअपापविद्धउदारे॥ ऐ।
सेआत्मश्रुति[illegible]चारे॥ याताभिन्नअतरकरगायो॥ जोमनआत्मश्रुतिदिखायो॥१३॥ अरुंधतीदर्शनन्यायउदार॥ तहां।
श्रुतिउरअंतरधार॥ अंतरआत्मकरेवखान॥ ऐसेनितउरअंतरमान॥१४॥ याहीतेमनअंतरज्ञान॥ माताश्रुतिकरेव
खान॥ अनुभवदिखलायोतेजोई॥ देहादिकसमजानेसोई॥१५॥ दोहरा॥ आत्मकोअध्यासमनजांभीतरघुनिहोइ॥ सुअ।
वलोकअज्ञानसभआत्ममानेसोइ॥१६॥ अरुघुनिममतामनमेहोई॥ ताँतेजानअनात्मसोई॥ मेरोमनरंगमेगयो॥ श
हतमारासनितनभयो॥१७॥ अवकरक्रियाउचारोवेन॥ हेसवदानतकरुणाअेन॥ ऐसेसभजनवैनउचारे॥ ममधीग
चरमेनेनिहारे॥१८॥ सवैया॥ योमनवाददहनेजवहीतवहीइकऔरसवैनउचारे॥ हेरहतेमनवाददसदाउरअंतरमेअन।

३

मोरनधारे ॥ ज्ञानसपकग्रहैनिजरूपपही ॥ उरनीह विचारनिहारे ॥ जाग्रपनीमतग्रधिकिसैग्रनुसारतिसैश्रुतिमानदि
खारे ॥ १९ ॥ चौपई ॥ मनग्रनात्मतोहिवखानियो ॥ ग्रहैसाचुनीकेहमसानियो ॥ मनभीतरजोभावयेज्ञान ॥ सोग्रात्ममानो
विज्ञान ॥ २० ॥ ग्रहंवृत्तिहप्येविज्ञान ॥ इदंवृत्तिमननीकेमान ॥ ग्रहंवृत्तिजैवेनहिहोइ ॥ इदंवृत्तिनहिभावेकोई ॥ २१ ॥ ग्रहंवृत्ति
यहिपहिलेजाने ॥ तांपाछेइदंतवखाने ॥ तांतेप्रथमसिद्धहैजोई ॥ विज्ञानसंग्रात्मजानोसोई ॥ २२ ॥ विज्ञानवाद्मतहूये
जोई ॥ मनमैंइहपछानोसोई ॥ क्षणविज्ञानग्रात्माहूये ॥ उतग्रक्षणकग्रात्मापये ॥ २३ ॥ प्रथमेक्षणविज्ञानहजोई ॥ ग्रात्म
रूपनहोवेसोई ॥ ताहिनिषेधकरत्रवनजेते ॥ प्रथमनिवासवखानेतेते ॥ २४ ॥ बौद्धमतोजहिकोयोनिग्रास ॥ तहिकीने
तेसगलप्रकास ॥ ग्रक्षणज्ञान ग्रात्मजोई ॥ निमेवप्रभुविद्धतिसमसोई ॥ २५ ॥ द्वितीयेसोग्रात्मनहिहोई ॥ मनोसमान
जानीयेसोइ ॥ ग्रंतहकरणकीदोनोवृत्ति ॥ कालपाइकेहोइनिवृत्ति ॥ २६ ॥ ग्रहश्रुतिग्रंतहकरणहजोई ॥ मनविज्ञानपा
छानोसोई ॥ निहचेतेवहुबुद्धकहावे ॥ करेसंकल्पमनोहइजावे ॥ २७ ॥ विज्ञानग्रनात्मनीकेजान ॥ जातेकर्तकश्रुतिव
खाने ॥ नन ॥ ताहिग्रनात्मभावयोकहो ॥ रंचंरूपकदिखलायोजहो ॥ २८ ॥ नंनुरथरूपकवहुभावयोकेसे ॥ प्रगटकहो
तनियेप्रवतैसे ॥ ग्रात्मकोतमरथीपछानो ॥ शरीरपकरथतांकोजानो ॥ २९ ॥ बुद्धिसारथीतांरथमाही ॥ मनहीडोरी
धरउरमाही ॥ इंद्रियगणसभतुरगकहावे ॥ विषयपंथजिहमाहिसिद्धावे ॥ ३० ॥ ग्रात्मइंद्रियमनोसंयुक्त ॥ भोगविवेहै
वेग्रनुरक्त ॥ याविधपकश्रुतिहैजोई ॥ वंधकहेग्रात्मकोसोई ॥ ३१ ॥ द्वइदिपद्धविज्ञान ॥ ग्रात्मवधनहेतपछान ॥ प्र
कश्रुतिद्वितीयश्रुतिहैजोई ॥ ग्रात्ममुक्तिवखानेसोई ॥ ३२ ॥ विज्ञानसारथीजाकोहूये ॥ मनडोरीकरजाकेपये ॥ सोना
इमारगपारेजावे ॥ विस्नपरमपदवीकोपावे ॥ ३३ ॥ शुद्धसारथीदृयेजोई ॥ शक्तिहेतपहिचानोसोई ॥ याविधग्रात्म
रथीवखाण ॥ विज्ञानसारथीतांकेजाण ॥ ३४ ॥ ग्रात्मनेनिग्रारोहैजोई ॥ नीकेहोइग्रनात्मसोई ॥ ग्रपंचीकृतपंचभवभ

मो. सू. टी. ३१

न ॥ अंतःकरणतादिकोभूत ॥ ३५ ॥ तांकीएकअंशहैजोई ॥ वितानकहावेभवमैसोई ॥ पूर्वसिद्धभूतपहिचानो ॥ तांकोआत्मकादिन
मानो ॥ ३६ ॥ तांतेतेरोजोवितान ॥ तांहिअनात्मनीकेमान ॥ मनअंतरजोतांकोगायो ॥ मनआपेतनअवधिदिखायो ॥ ३७ ॥ तां
भीतरअनंदवालानयो ॥ मनअपेक्षतहीहमजानयो ॥ सोअनंदमयआत्मनाही ॥ तांकीगणनाकोशनमाही ॥ ३८ ॥ पूर्ववा
रकोशजिउंहृये ॥ पंचमकोशतथावहुरूपये ॥ इनसभनोतेनिआरोआहि ॥ मनीषीआत्मभाखेताहि ॥ ३९ ॥ भुजंगप्रयातछंद
जवेतानवादीमतंहरकीनें ॥ तवेंजैनिवोलेमतंआपलीने ॥ वहीआदिरूपंनअंशेरदिखारो ॥ समानंतिसेआजनीकेउचारो ॥
४० ॥ चौपई ॥ मध्यमभानतादिकोजानो ॥ तनुसमाननंदिआरेमानो ॥ याविधजैनीअवसरणाय ॥ निजमतकोटीनोदिखला
य ॥ ४१ ॥ तांहिसिद्धांतिहोइजिउहाने ॥ सोविधकोविदप्रगटवखाने ॥ जेंवहुरूपयेमध्यमभान ॥ कर्मअधीनदेहतिहिजान ॥ ४२
होवेप्रथमविजातीओर ॥ तामैकिहविधपावेठोर ॥ प्रथमदेहचिंटीकीअहे ॥ द्वितीयगजेंद्रिकीवहुगहे ॥ ४३ ॥ पूर्णतांको
किहविधकरे ॥ खालीरहेभागतांपरे ॥ अथवागजआत्महैजोई ॥ चिंटीतनकोधारेसोई ॥ ४४ ॥ तामैकैसेजायसमाय ॥ अथक
रयोवाहररहजाय ॥ नंतुअवयवतादिकेजेई ॥ वाहुचाटहोवेसभतेई ॥ ४५ ॥ गजकीदेहधरेवढजावे ॥ चिंटीदेहधरेघटजा
वे ॥ अवयवनिजआत्महोई ॥ घटजुनाशहोइगोसोई ॥ ४६ ॥ नाशपरेनहिहरवनओर ॥ जांतेआपनपावेठोर ॥ तातेमध्यम
माननसोई ॥ औरमानकोतामैहोई ॥ ४७ ॥ जैनिमतोजवयोपरहरयो ॥ अणुवादीनवैनउचरियो ॥ अणुआत्महृयेचिदरूप ॥
देशअंशगुणजानअनूप ॥ ४८ ॥ वालाग्रकेकरशतभाग ॥ वहुरकरेगहिशतविभाग ॥ तामोएकभागजोहोई ॥ तांहिसमान
जानियेसोई ॥ ४९ ॥ अणुतेअणुयोवेदवखाने ॥ यांतेअणुपंडितजनमाने ॥ सोतनुएकदेशमोरहे ॥ शीतउसनसगलेकीगहे ॥ ५० ॥
॥ तनुव्यापकतांकागुणज्ञान ॥ तांकरगहेनदैअज्ञान ॥ जातिचंदनइकदेशलगावे ॥ तनसगलेमैशीतउपावे ॥ ५१ ॥ वस्तुशक्तिअ
चिंतीहोई ॥ यामैशंकावनेनकोई ॥ मंदसमीरआपमैपाय ॥ परमवासदिसदिशकोजाय ॥ ५२ ॥ तिउंगुणज्ञानगुणीविदेश ॥

जावेनहिंसंसेकीलेश॥यांविधसात्वतममवखाने॥वित्रपरखेवेनहिंकोविरमाने॥५३॥हेसात्वतअणुआत्मगावे॥तामैमानश्रु
तिदिखलावे॥सोतैएकश्रुतिदिखलाई॥यहीवेदमैअोरनकाई॥५४॥सोअनंतमहतोमहीआन॥विभूअखंडतगगनसमान॥यो
मीवेदवखानेवानी॥तांतेविभुमानेनिरहतानी॥५५॥उपाधिसंगअणुभीहुइजाइ॥विनाउपाधिअनंतकहाइ॥नातरकहूंकअ
णुपरिमान॥कहूंकहियोअंगुष्टसमान॥५६॥कहूंनखाग्रलोदिखलायो॥कहूंअनंतरूपकरगायो॥कहूंकदेपलुघतसमान
कहूंदिखावेगजकोमान॥५७॥यांविधभाखेमानअनंता॥कहैकवनमानेअवसंता॥युक्तिदृष्टिकरदेखेकोई॥तोअणुरूप
नआत्महोई॥५८॥अणुतनएकदेशमैहोवै॥प्रीतउसमगलेनहिंजोवै॥सगलअंगसंबंधनतांको॥कैसेगहेसगलमैवांको॥
५९॥क्रमकरएकएकमोजावे॥तोयुगपदनहिंतानउपावे॥सरमैमग्नहोइनरजोई॥युगपदशीतलखेसभकोई॥६०॥अणु
आत्मतनअणुमैसंगा॥अणुतैभिन्नभेदअंगा॥आत्मआश्रयजोअणुअहै॥तामोजलकहूकैसेरहै॥६१॥मूर्तिद्रव्यअदेहआ
यजोई॥एकदेशमैरहैनसोई॥जलअवभिन्नदेशमैहोइ॥ताकोअनुभवकैसेहोइ॥६२॥यद्यपिताअणुमोजलमाने॥तद्यपि
ताहिनकोईजाने॥अणुअतिविंकिनजलतदिहोवै॥अणुअतींद्रियतांहिनजोवै॥६३॥जोतैभाख्योतागुणज्ञान॥देहव्या
पकदेहसमान॥सोतौआत्मजोजडहोइ॥तोगुणतानकहेतिहकोइ॥६४॥आत्मचिदअहसोचिद्रूप॥सोनहिंगुणीनसोगु
णरूप॥तस्यधर्मजाकोपुनिहोइ॥गुणअहगुणीनभाखेकोइ॥६५॥रूपनगुणीरूपोनरकेरे॥रसरसांतरकेनहिंदेरे॥अतस्य
धर्मतामैजडमानो॥तोगुणतांकोज्ञाननवखानो॥६६॥आत्मकोजडजेवेवखाने॥होइसिद्धांततोहिनवहाने॥तोभीअणुगुण
अणुमैहोई॥भिन्नदेशनहिंजावेसोई॥६७॥गुणीत्यागजायगुणजोई॥गुणलहानतागुणकोहोई॥परमवासदृष्टांतअसे
गन॥सोकैसेतहिंपावेसंगन॥६८॥पुहुपरेणुअप्रभंजनअवे॥पसरेजहिंतहिंगंधविखेरे॥याहीतेचिरइसथितिजोई॥परम
गंधतनुतामैहोई॥६९॥करअपरपरिमाणअलसहुइजाइ॥देखेसभजननसहजसुभाइ॥अंजनतिउहीकस्तूरीमाही॥अलपरि

मो
ते
प
३३

माण कूरे जन नाही ॥ ७० ॥ ऐसे शंका मन उर धारो ॥ उत्तर या मै प्रगट विचारो ॥ भोग हेतु कर्म जन जेई ॥ पुनि उपजावे तैसो तेई ॥ ७१ ॥ जै-
से ग्रंथनि कसन दिखावे ॥ तैसे कर्म और उपजावे ॥ तांते न दिजन कूरे तांही ॥ हर्ष होइ सगल मन मांही ॥ ७२ ॥ जाती चंदन जो दि-
खलायो ॥ सर्व शीतल न हिता हि उपायो ॥ देह विखे है नीरु विभाग ॥ ह्वै नीभूत है नाहि सजाग ॥ ७३ ॥ चंदन विटप संग को पावे ॥ ते श-
रु द्रु सगल कुर आवे ॥ तिन ही शीतल सगल उपजाई ॥ जाती चंदन भयो सहाई ॥ ७४ ॥ नन्न इसे गा ग्रंथ श्रुति स्मृतिको गायो ॥ सुरपतिको
प्रजंन दिखलायो ॥ विदुर युधिष्ठिर है यम केरे ॥ यो भारत मै ग्रंथ सहे टेरे ॥ ७५ ॥ तांते जीव सु ऐसी धार ॥ ह्वैवन भयो सुनि लिखि उधा-
र ॥ ग्रंथ कर भोगे सब भावे ॥ सर्व ग्रंथ पुन परक्रम सहारे ॥ ७६ ॥ ऐसे जो तव वैन बखाने ॥ सो ग्रंथ सम हम नीके जाने ॥ ग्रंथ कर सु-
ख भोगे भारे ॥ सो दुःख हेनेन जाहि विचारे ॥ ७७ ॥ जैसे जीव न त्या जग ईशा ॥ जीव ग्रंथ ग्रंथी तव ईशा ॥ जीव ग्रंथ सुख तेगायो
ग्रंथी ईश आप दिखलायो ॥ ७८ ॥ पो ही वंध मोक्ष ग्रंथ तान ॥ जीव समा मग्र ईश मै मान ॥ अरु पुनि सांश पदार्थ जे ते ॥ ग्रंथ कार्यस-
गले ते ते ॥ ७९ ॥ तिउ परमेश्वर यारो जोई ॥ जीव जनम होइ गो सोई ॥ यो पुनि सग्रंथ पदार्थ जोई ॥ वीर समान विनासी सोई ॥ ८० ॥ भु-
जंगप्रयात छंद ॥ अहो ग्रंथ वादी न होने विचारं ॥ यतो जीव ग्रंथ शंकरें तेउचारे ॥ जगन्नाथ दाता सुग्रंथी उचारे ॥ ततेरो विखावें न-
तांको निहारे ॥ ८१ ॥ गीता विखे ग्रंथ जीवें बखाने ॥ जगन्नाथ आपे न मोही प्रभाने ॥ नही गूढ संधं लखें ईश केरी ॥ इते रो विहोते ॥
यतो ग्रंथ टेरी ॥ ८२ ॥ दोहरा ॥ पंचदश म अध्याय मै भाखे श्री भगवान ॥ जीव ग्रंथ सुख ते कहे गूढ सधउर मान ॥ ८३ ॥ चौपई ॥ मम
धाम को आस हो वे ॥ वहु रगिरे न दिस्तावसमो वे ॥ षष्ट सलोक विखे यो गाई ॥ सस मै पुनि ग्रंथ बताई ॥ ८४ ॥ अगिर ने मा हि है तदि-
खलावे ॥ जीव ग्रंथ प्रभु सुख ते गावे ॥ प्रतिविंव ग्रंथ नि उविंव हके रे ॥ न ह उपाधि विव वहू हेरे ॥ ८५ ॥ अरु पुनि महाकाश जग-
माही ॥ घटाकाश तिह ग्रंथ कहाही ॥ घट फूटे भव भीतर जवही ॥ महाकाश वहु होवे तवही ॥ ८६ ॥ यो उपाधि जीव को जोई ॥ ना-
श भई परमात्म सोई ॥ यो भगवान सधउर मानी ॥ भाष्यकार बहु प्रगट बखानी ॥ ८७ ॥ उपचारक ग्रंथ जीव उरमान ॥ जांते हव-

न होवै ह्वान ॥ वास्तव अंश बखाने जेई ॥ ह्वलन तो द्विअगाट पुनि होई ॥ ४४ ॥ यो मत अणुवादी को गायो ॥ भट्ट तनय तव बोलन भयो
आत्म के ह्वये द्वय रूप ॥ एक चेतन द्वितीय जड रूप ॥ ४५ ॥ अरु अनीति विषय अभिराम ॥ आत्म इति भावे तिह नाम ॥ विषय अन का ह्वं।
का चिद अंश ॥ विषय होइ ह्वोवे जड अंश ॥ ४६ ॥ आपन आप विषय जे सोई ॥ आत्म आश्रय प्रगटी होई ॥ और चिद तन रमाने कोई ॥।
व आमो अम आश्रय ना होई ॥ ४७ ॥ तृतीय की ये पुनि अंगीकार ॥ चक्र का मन माहि वीचार ॥ चतुर्थ चेतन माने कोई ॥ अन।
वस्था उरधारे सोई ॥ ४८ ॥ निरोधिक परंपरा को जावे ॥ अनवस्था बुद्धि सो ईगावे ॥ जहं जाइ उलटो पुनि फिरे ॥ चक्र का वह्न।
रो उर धारे ॥ ४९ ॥ तो ते चिद को गोचर जोई ॥ एक जडंश मानये सोई ॥ याही ते वह्न उभय स्वरूप ॥ जड चेतन आत्म अभिरूप ॥ ५० ॥
यद्दिने वैन अप्रसार उचारे ॥ भट्ट तनय टेवन के पिआरे ॥ चिन्न जड उभय स्वरूप विरुद्धा ॥ एक विखे नहि कटे प्रसिद्धा ॥ ५१ ॥ ते ज
तिमर जिउ केसे होवे ॥ विरुद्ध स्वरूप कथं जन जोवे ॥ अरु पुनि ते चिद जड जे होई ॥ नर चट जिउ न हिय के होई ॥ ५२ ॥ तो ते।
पुद्गल पके माही ॥ हो आत्म है सो इक नाही ॥ या मै मानन हये कोई ॥ अरु पुनि देह मध्य न जन होई ॥ ५३ ॥ यद्यपि जड तव
अंगीकार ॥ नय पय आत्म विषयन धार ॥ जड इक अंश होइ गीगोचर ॥ चेतन अंश सदा अगोचर ॥ ५४ ॥ उभय अंश न हिद्दे वे।
कोई ॥ आत्म विषय कहा किउ होई ॥ इंड एक दीटे त्वे जोई ॥ जो टद्दी न हि भावे सोई ॥ ५५ ॥ इंड पुरुष टोनो को जाने ॥ तो इंद्री जन
तो हि बखाने ॥ जो चिद अंशाभि गोचर माने ॥ तो जड कस्प न व्यर्थ पखाने ॥ ५६ ॥ आत्म आश्रय द्वषन आयो ॥ अप सिद्धांत अधि
क ने पायो ॥ अरु जड चेतन अंश न दोई ॥ तो हि सवंध कहा को होई ॥ ५७ ॥ संयोग ताद्दात्म विषय विषई ॥ प्रथम अनित्य रूप ताम
ई ॥ द्वितीये चिद जड एक स्वरूप ॥ सो विरुद्ध तद्दि भाखयो रूप ॥ २ ॥ अरु पुनि ताद अंश है जोई ॥ या हि पक्ष मै चेतन सोई ॥ चेतन
अंश होइ जडरूपा ॥ जड ताद्दात्म है ह्वे अनूपा ॥ ३ ॥ तृतीये चाद समसर होइ अनात्म ॥ जो जड अंश न सो है आत्म ॥ अरु पुनि आत्म अ।
गी कौन ॥ अनट कहो वह्न रूपे जौन ॥ ४ ॥ अंशं ते वह्न भिन्न स्वरूप ॥ उत ते अ है आत्म रूप ॥ ने यायिक मत मैं ह्वलन जेई ॥ उभयपक्ष

मो
तु
प
३३

मे आवे नेरै ॥ ५ ॥ आधो जड़ आमो न हि मान ॥ श्रुति बखाने चन विज्ञान ॥ नंतु जड़ चेतन नै मे मान हि लोकं ॥ अर्थापति नाम निहगा क
॥ ६ ॥ ब्रह्म अरू श्रुति हेय न होई ॥ तो न हि कर्ता होवे कोई ॥ इह श्रुति इष्टा मिपरिहार ॥ करे न को तों हित अवहार ॥ ७ ॥ लोकिक
वैदिक कर्म न माही ॥ को अद्वैत याभव माही ॥ ब्रह्मादिक चेतन मोना ही ॥ असंग कहियो जांते श्रुति मांही ॥ ८ ॥ तांते ब्रह्मादि
क आधार ॥ एक जड़ अंश आत्म को धार ॥ नातर यह द्वि अवहार न होई ॥ कर्ता आत्म कहे न कोई ॥ ९ ॥ स्वर्ग काम यागन को करे ॥ औ
र बहु न धर्म न बिस्तरे ॥ इत्यादिक श्रुति अर्थ कर्ता बिना न पावे अर्थ ॥ १० ॥ ऋचे का है करें प्रकार ॥ पांमे प्रगट अहार विचार ॥ ब्र
ह्मादिक नातक निरूक हो ॥ उत अध्यासिक उरमे गहो ॥ ११ ॥ प्रथम से श्रुति हजार बखाने ॥ तात किते तंम हित हिमाने ॥ निरा
नीरह निरंजन अहे ॥ ऐसे श्रुति प्रगट तिरूक रे ॥ १२ ॥ ब्रह्मादिक ते ब्रके गाए ॥ तांते आत्म भिन्न दिखाए ॥ अर्जुन प्रति पद्मा पा
नि दयाल ॥ पार ब्रह्म लसरक मल विसाल ॥ १३ ॥ अध्यासित कहो जे ते ना माही ॥ तो चिदमै असंभव नाही ॥ जड़ता अंशका
हि अब माने ॥ अध्यस्त मगल चिद भीतर जाने ॥ १४ ॥ अवहारिक ब्रह्मा चिद महि मान ॥ स्वर्ग काम पद हि निगम प्रमान ॥ स्फ-
टिक अरुणा सम मनेचिद मांही ॥ ब्रह्मादिक संसे कछु नाही ॥ १५ ॥ अरु श्रुति जो जड़ अंश बनाई ॥ ब्रह्मा को आधार ठहराई ॥ सो तो जो
जड़ है भव माही ॥ चिद सम ब्रह्मा ना मो नाही ॥ १६ ॥ अंतह करण मोन हि अभिचार ॥ चिति छायागहि सो आधार ॥ अहं प्रतीति वि
षय उरमान ॥ चिद महि दूखन करे बखान ॥ १७ ॥ सो ना हूखन एक न हूये ॥ अर्थ प्रलाप नमारोपये ॥ अहं प्रतीति विषय हूका
र ॥ चिति तादात्मता को धार ॥ १८ ॥ अनावरण चिद स्व ते प्रकासे ॥ प्रतीति गम्य अध्यासिक भासे ॥ तांते जड़ चिद आत्म नांही ॥
विनु प्रयोजन कसे काही ॥ १९ ॥ मीमांसिक मत जव परिहरयो ॥ नैयायिक तब वैन उचरयो ॥ जड़ आत्म आकाश समान ॥
विभु न चिज्जड़ सो पहिचान ॥ २० ॥ सुख दुःख को अवस्था जांते ॥ नाना आत्म याभव तांते ॥ चैत्र सुखवे मैत्र सुख नांही ॥ यही अव
स्थाँ दुःख माही ॥ २१ ॥ अणु रूप मन हूये जोई ॥ तो हि से वेध यदा नि होई ॥ बुध्यादिक गुण तो उपजावे ॥ गुण आश्रय ते द्रव्य का

है ३३

होवै ॥ २२ ॥ लोक परलोक विषे मन जावै ॥ आतम कहूं न आवै जावै ॥ पारब्रह्म अधीन लोकांतर रेहा ॥ उपजै सो मन होवै गेहा ॥ २३ ॥ ता
सो आतम मन संयोग ॥ पावै जनु वह होवै तनु भोग ॥ यौं नैयायिक करे बखान ॥ वैशेषिक मत ऐसो जान ॥ २४ ॥ दोनो कहे सिद्धांत ।
असार ॥ ह्वै वन गणते उ इति हास ॥ जो निज आतम ही जड होई ॥ सो इयो उठै न स्मरे कोई ॥ २५ ॥ परम सर्वांमें नीके सोयो ॥ अंगतउः
खसगलो मै खोयो ॥ जम मनु ज्ञान सर्वोपति माही ॥ तिम ज्ञान आतम मो नाही ॥ २६ ॥ ऐसे न वउर अंगीकार ॥ स्मृति का कि उक
रेउ चार ॥ अनुभव विना न स्मृति होई ॥ अनुभव तहां न भाखयो कोई ॥ २७ ॥ ईश्वर का अनुभव है जोई ॥ अधिकरण कहो किउं
कारण होई ॥ तांते स्मृति जाते होई ॥ ज्ञान रूप आतम है सोई ॥ २८ ॥ विभु जु तै आतम दिखलाए ॥ कहा नाते भव भीतर गाए ॥ तां मोका-
ही अवस्था मान ॥ सोई करे स्मृति मन ज्ञान ॥ २९ ॥ मूर्ति द्रव्य सगल है जेते ॥ तांहि संयोग लहे सभ तेते ॥ एके द्रव्य विषे सभ है ।
वै ॥ तां मो सावउः खसगले जावै ॥ ३० ॥ देह प्रयत्न करण है जेते ॥ धर्माधर्मादिक सभ नेते ॥ एसाधारण सभ को होई ॥ या ही-
के यद्दि कहे न कोई ॥ ३१ ॥ नेनु जो मन जां सो संगति पाए ॥ सो आतम गुण तां उपजाए ॥ धर्मादिक सभ तां ही केरे ॥ तो फल और
न कोई हेरे ॥ ३२ ॥ पा ह्वि अवस्था ते कछु नाही ॥ मन पावे संगति सभ माही ॥ आतम या भव भीतर जेते ॥ मूर्ति द्रव्य संयोगी तेते
३३ ॥ मन मूर्ति ते विभु स्वरूप ॥ सगल संयोग होइ अनूप ॥ नेनु जन्मांतर के रे कर्म ॥ तां आतम का होवै धर्म ॥ ३४ ॥ तां ग्रहीत-
मन होवै जोई ॥ ता आतम का कहियै सोई ॥ यों ह्वि अवस्था ते गति नाही ॥ होवै वही जन्मांतर माही ॥ ३५ ॥ मन सापेक्ष तहां भी
कर्म ॥ सो कैसे इक आतम धर्म ॥ मन संबंध सगल मो अहे ॥ कर्म पकके किह विधु कहे ॥ ३६ ॥ जन्मांतर कर्म गह्यो मन जो
ई ॥ सभ आतम का होवै सोई ॥ नेनु यद्दि कर्म करो फल पावों ॥ या फल हित मै कर्म कमावों ॥ ३७ ॥ यद्दि संकल्प करे भव जोई ॥
सो वह कर्म तिसी का होई ॥ यद्दि है कृशा अलेवन तेरो ॥ मन संबंध विना न हि हेरो ॥ ३८ ॥ मन तो सभ सो संगति पावै ॥ तां सु-
धीन संकल्प उपावै ॥ तां संकल्प ते जो है इक कर्म ॥ सो सभ आतम केरो धर्म ॥ ३९ ॥ मूल कृदा वत मारे अहे ॥ शालाप लव कै सेग है

मो द्रू प ३४

नहिकेवलतनमेरमनमाही॥ यहिद्रष्टाचनसमफोमनमाही॥ ४०॥ सोसाक्षीभइप्रभाकरजेई॥ नानात्मभावेजेतेई॥ अरुशुनिश्रु
त्वतेविश्रुवत्वाने॥ तिनमतमेद्रष्टावनयोजाने॥ ४४॥ जेद्रष्टावनइँहेदिखलाय॥ श्रीमतवेदव्याससोगाय॥ द्वितीयाध्यायशारीर
कमाही॥ तृतीयपादमैसंसेनाई॥ ४८॥ तथा चसूत्रं॥ अरुष्टानियमात्॥ अभिसंध्यादिष्वपिचैवं॥ नजयपपिपकेतनुमाही॥ स
भआत्मइकआत्मनाही॥ नयपिचेत्रकासत्वजोई॥ तांप्रतिकारणानतनुहोई॥ ४३॥ मेत्रसत्वकोकारणनाही॥ मेत्रनतकार-
णहेनाही॥ योहीसर्वअवस्थितिहोवे॥ सरवदुःखकोसंकरनहिजोवे॥ ४४॥ इर्वद्रष्टावनकोनउधार॥ होसांतरअवग्रोरनि
हार॥ देहअधीनअवस्थाहोई॥ नानात्ममेमाननकोई॥ ४५॥ सरवदुःखकीअवस्थाजोई॥ नानात्ममेभाखीसोई॥ सोसोत
नुनानाकोमान॥ भईअवस्थानहितिहहान॥ ४६॥ याविनग्रोरउपायनकोई॥ जांतेआत्मनानाहोई॥ तांतेआत्मएकपा
छानो॥ नानाकाहितेदृतेभानो॥ ४७॥ ननुजेआत्मएकोग्रहै॥ उपास्यउपासिककैसेकहै॥ देहभेदकरसगलोहोई॥ याभी
नरसंसानहिकोई॥ ४८॥ उत्तमदेहउपाधिकजोई॥ उपास्यकहीनेभवमेसोई॥ अधमदेहउपाधिकजोहै॥ उपासिकभवभी
तरसुनिसोहै॥ ४९॥ ननुइकआत्मपत्तमाने॥ तामेद्रष्टावनरदछनिरधारो॥ परकीदेहयथाहैनिआरी॥ तिउंपरलोकिकदे
हविचारी॥ ५०॥ कर्मकरेयाननकेमाही॥ भोगेफलपरलोकिकमाही॥ जिउंपरलोकिकतिउंपरदेह॥ सोअवहोवेफलको
गेह॥ ५१॥ यामेउत्तरश्रुतिवखाने॥ करहैहैशंकसगलतेहाने॥ याकोसक्तहोइमननजहां॥ कर्मसमेतलिंगगतितहां॥ ५२॥ लिं
गअवछिन्नजीवहैजोई॥ इहांफहांफलभोगेसोई॥ ग्रैसेवेदअवस्थागावे॥ तेरेनिखिलसंदेहमिटावे॥ ५३॥ लिंगदेहअजनुगति
हैजोई॥ कर्मकरेफलभोगेसोई॥ तांकोभेदप्रगटभवमाही॥ याहीतेफलसंकरनाही॥ ५४॥ परमार्थएकआत्महैजोई॥ का
हनफलकोभोगेसोई॥ मेमतमेद्रष्टावनकोनाही॥ उलदेद्रष्टावनतेमतमाही॥ ५५॥ आत्मसर्वव्यापकग्रहै॥ अरुइतथाआत्म
मेकहै॥ तोयहिदेहसगलहैजेते॥ सगलअदृष्टसंबंधीतेते॥ ५६॥ अदृष्टसगलकेसभकोभोग॥ संकरहोइनकदेवियोग॥ इक तिह

३४

दुःखते भूपति दुःखी ॥ भूप सुखते रंक सुखी ॥ ८७ ॥ पुण्य पाप सभ को सम होइ ॥ ताफल में नहि अंतर कोइ ॥ जो अइ इइ कहै रे हे
सर्वव्यापक ना जड़ कहे ॥ ८८ ॥ लिंग देह न हि मानी ताहि ॥ ता अवछेदक भातो मोहि ॥ स्थूल देह अवछेदक कहे ॥ परलोक विखे
फल के से गहे ॥ ८९ ॥ सो स्थूल देह न इहइ रगयो ॥ अवछेदक अवरन कोइ रहयो ॥ विन अवछेदक ते मर गयो ॥ परलोक विखे फल
के से भयो ॥ ९० ॥ ता सुख दुःख को तनु विनु नहि भोग ॥ तन वियोग ते तांहि वियोग ॥ तनु तनु अवछिन्न देश थो जोई ॥ तां मो पुण्य पाप
ते होई ॥ ९१ ॥ रहे न ते हत फल विन माने ॥ का हतां को नाश वखाने ॥ तौ वहू देश इहां ही रहे ॥ परलोक विखे फल के से गहे ॥ ९२ ॥
देशवान आत्म सावयवा ॥ होवे गन हि ते निरवयवा ॥ अपसिद्धांत अवतां को आयो ॥ जो आत्म सवयव कहि गायो ॥ ९३ ॥ अरु जो
तै मुख तै यौं गायो ॥ अणुरूप मन योग वतायो ॥ तुझ आदि गुणतो उपजावे ॥ गुण आश्रय ते द्रव्य कहावे ॥ ९४ ॥ सो निरगुण किम आ
टतम जानो ॥ वचन प्रतिकूल तर्क पहिचानो ॥ निरावयव आत्म के माही ॥ निरावयव मन संगति नाही ॥ ९५ ॥ संयोग स्वयं कहै आ
श्रा कर होइ ॥ निरावयव मो देश न कोई ॥ विनु संयोग न ते गुण होवे ॥ आत्म द्रव्य कहो किउ होवे ॥ ९६ ॥ आत्म को जे द्रव्य वखा
नो ॥ तौ वहि सम सवयव पछानो ॥ अवयव योग ते होइ अनित्य ॥ नहि सावयव देखयो नित्य ॥ ९७ ॥ नहि को द्रव्य अहै निरवय
व ॥ आत्म द्रव्य होइ सावयव ॥ निरास की यो परमाणु केरो ॥ नभ सावयव प्रगट ही हेरो ॥ ९८ ॥ ऊर्ध अधह देशा नभ केरे ॥ जन
सभ्र हइ अनुभव कर हेरे ॥ याही ते नभ भयो सवयव ॥ का हि वखाने ति हन निरवयव ॥ ९९ ॥ जो नयो उरमै तम माना ॥ तौ इक वाध
प्रगट पछानो ॥ विहंग पक्ष न भभी तर गयो ॥ तौ ही कर वहू भ्रम भयो ॥ १०० ॥ द्वितीय ज्ञान को चाहे औरै ॥ सो नभ मद्धि कहि पा
वे ठोर ॥ एक देश पूर्ण तिह भयो ॥ द्वितीये देश खाली रह गयो ॥ १०१ ॥ तामो द्वितीय विहंग मुजावे ॥ ऐसे ते जड मो हि वतावे ॥ तौ
नव तंड अवयव वखाने ॥ सवयव कहन मो लज्जा माने ॥ १०२ ॥ नभ को नन्न स्वभाव विचित्र ॥ याहि विखे नहि को भव चित्र ॥ या
यपि यक विहंग हि पूर्ण ॥ होवे न भन हि कित हूं ऊर्ण ॥ १०३ ॥ तथपि द्वितीय करे प्रवेस ॥ वस्तु स्वभाव यही निरदेस ॥ तौ इक अस्य-

मो० तं० प० ५

उदरकेमाही॥त्यारीसोमेवैंभवमाही॥७४॥जैसेयहितैसेवक्षरीत॥सोकैसेनिरधारोचीत॥उत्पादिप्रदेशआवछिन्न॥नभअ।
देशातेनहिभिन्न॥७५॥महतत्विशाकाअंगीकार॥तांहीकरसाधेव्यवहार॥अविद्याविदसंवेधहिजोई॥महाकालकहिला
वेसोई॥७६॥जोअणभागअन्नकोआदे॥सोमनप्रगटवेदहीकहे॥मनंअन्नमयसोमयछानो॥श्रुद्धअश्रुद्धप्रगटतिहजानो॥
७७॥दोहरा॥याविधभयेसवयवसभद्रव्यजगतकेमाहि॥निरावयवजिहमानयेरसोनकोभवमाहि॥७८॥चौपई॥अरुज
उआत्मभावयोजोई॥जोगुणबुद्धिनचेतनहोइ॥जडगुणहोइजगतमेजोई॥चिदगुणममनहिचेतनसोई॥७९॥हूत्वनहा
नेकहालोगावो॥ग्रंथवढनतेवहुउरपावो॥वेदविरुद्धवादजजेई॥पोपरिहरेसधीससोई॥८०॥नंनुसगलेमततोहि
निवारे॥नरकांकोउरअंतरधारे॥जामतसोहोवेकल्यान॥तांमतकोउरअंतरआने॥८१॥सोमतअहेनमोहिनिवारे॥तो
हीकोउरअंतरधारे॥ऐसेगोपमतोहेकौन॥मोहिवतावोसोहैजौन॥८२॥दोखविनाअतिउत्तमअहै॥सोमतप्रगटवेदा
हीकहै॥तनुइंद्रियगणप्राणनिआरो॥मनमेधासाहीनिरधारो॥८३॥भावाभावसगलकोजाने॥स्वयंज्योतितिहवेदवा
खाने॥जोअनंतचनत्तानस्वरूप॥वाधहीनजानोतिहरूप॥८४॥अरुपुनिमानविभूतिहजानो॥अणमध्यममेदोखपा
छानो॥मध्यममेहत्वनहैजेते॥जैनिनिषेधहोरमोतेते॥८५॥अणवादीमतजहांविडरे॥अणदोखसतहांउचारे॥तां
नेओरमतोअसार॥वैदिकमतोसभसमतेसार॥८६॥वेदवखानयोआत्मजोई॥जीवरूपपहिचानोसोई॥पुरतीनोमेक्रीडा
करे॥आत्मरामअसंगरिचरे॥८७॥रविशशिवह्निशांतिहैजहां॥इंद्रियगणनहिभासेतहां॥तहासआत्मस्वयंप्रकाश॥स
मविलेअर्थनकोभास॥८८॥वाह्यार्थकरणकरदेवे॥करणसमूहबुद्धिसोपेवे॥जोहिपिवेजोईनिजभासा॥सोआत्मदेस
तेप्रकासा॥८९॥धनसुतनारीप्रियकहे॥आत्मअधिकसगलतेअहे॥जातेइनचारोकोत्याग॥जावेजवअहलागेआग॥
९०॥राजदेउतेसगलेत्याग॥जावेआपइकेलोभाग॥जोहितओरसगलेदेपिआवे॥सोनहिकाहूहितउरधारे॥९१॥ऐसोवेद

वखान न यो जोई ॥ अज्ञान अधीन जीव है सोई ॥ तब ज्ञान सों तां हि निवारे ॥ आतम ब्रह्म सदा निरधारे ॥ ५२ ॥ नत धर्म विरुद्ध दोन हूं ।
केरे ॥ अभेद विरोधी सर्व हेरे ॥ निखिल दोख हरणी जोई ॥ सर्व कही लछण सोई ॥ ५३ ॥ इंधन कीनो कछुक उचार ॥ किहि विध भ
यो विरोध प्रहार ॥ तां को रूप यथा सु निहोई ॥ ततीय निवास कहेंगे सोई ॥ ५४ ॥ दोहरा ॥ अनिर्वाच्य अज्ञान जो सु चेतनि खिल संस
सार ॥ चिदाभास अंतःकरण मिल भोगे दुःख न हि भार ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ नाना जो निज जन्म को पाय ॥ हरी ज्ञे व्यवत आवे जाय ॥ अंतः
करण मिथुन ता पाई ॥ निज आतमता जीव भुलाई ॥ ५६ ॥ सब दुःख पाइ सदा उरमाही ॥ जाग्रत स्वपन सखोपति माही ॥ अवस्था
तीन संगी जोई ॥ त्वंपद वाच्य पछानो सोई ॥ ५७ ॥ दोहरा ॥ निखिल रूप थींहर कर स्वयं ज्योति निरधार ॥ तीन अवस्था सगा ।
सो कीनो जीव उचार ॥ ५८ ॥ दोहरा ॥ सीता वर सत संग भज पायो ग्रंथ उचार ॥ गुलाब सिंह निरधार उर कीनो इहां उचार ॥ ५९ ॥
इति श्रीमन्मानसिंह चरणाश्रित गुलाब सिंहेन गोरी राय आत्मजेन विरचिते मोक्ष पंथ प्रकाशे त्वंपद वाच्य ग्रंथ निर्णयो नाम द्वितीयो
निवासः २ ॥ ॥
ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥ भुजंगछंद ॥ गणो नाथ दाते नमो पादकंजे ॥ सदा सौख्य कारं अले है तभंजे ॥ सदा देव सेवें उरं गोट
जाने ॥ धरें भेद आगे नमो पाद ताने ॥ १ ॥ भुजंग ॥ जिने ना हि ज्ञाने भर्म है तभारी ॥ जिने भान होय मिटे है तसारी ॥ धरे देव रूपं नमो
नाथ रामं ॥ तिसें नीति सेवो सरे सर्व कामं ॥ २ ॥ मदिरा छंद ॥ जागर मे सभ द्वैत दरे अरु पार परे पद के परसे ॥ जो भव मोह सनेग ।
निवारण पकस दापित्व पै हरि से ॥ नाहि च लेक कबहूं भव मे अरु शांति सदा लख ये परसे ॥ सो करजोर नमो पद पंकज तां ।
गुरु के उर मे सरसे ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ दोन पदार्थ शोध के अखंड अर्थ पामाहि ॥ प्रगट होइ नीके सनो निखिल द्वैत मिट जाहि ॥ ४ ॥
चौपई ॥ जब उपजे निज आतम ज्ञान ॥ तबी होइ सभ बंधन हान ॥ जीव ब्रह्म को है अभेद ॥ भागे सगल जगत को खेद ॥ ५ ॥
नतु जीव ब्रह्म अभेद निहारे ॥ जगत खेद को किंविध जारे ॥ निखिल जगत ही मिथ्या हैय ॥ हेरे ब्रह्म ना साचो पय ॥ ६ ॥ तां ते ब्रह्म ।

मो
त
पं
२९

निहारे जोई ॥ निखिल द्वैत को त्यागे सोई ॥ ननु कहते दृष्टा रहै जैसे ॥ याहि द्वैत को त्यागे तैसे ॥ ७ ॥ यां को त्याग न तत्यान होई ॥ त्या
गन को रहे दौरन कोई ॥ ब्रह्म विवेक न रहै द्वैत निहारे ॥ तातें त्याग कहा हि मिटारे ॥ ८ ॥ ब्रह्म विना अधार न कोई ॥ तामैं द्वैत दृष्ट सम हो
ई ॥ तातें यां को त्याग सदैसो ॥ सीप विवेक रूप को जैसो ॥ ९ ॥ ननु रजत मिथ्या तामें दृष्ये ॥ द्वैत सत्य ब्रह्म मे पय्ये ॥ सो कैसें कुनि
रजत समान ॥ सत्य होइ जो सम को भान ॥ १० ॥ सत्य भान भाव पोत म जोई ॥ सम को नाहि कदाचित होई ॥ श्रुति को विदत्भुवमं
इल जेते ॥ मिथ्यात्व लखे द्वैत सम भनेने ॥ ११ ॥ नेति नेति श्रुति वेद वतावे ॥ निखिल द्वैत अभाव दिखावे ॥ तातें द्वैत दोख ये जोई ॥ ब्रह्म मा
हि साचो नहि सोई ॥ १२ ॥ सीप विवेक रूपो है जैसो ॥ मिथ्या सकल ब्रह्म मैं तैसो ॥ ख्याति वादी प्रभाकर जोई ॥ यहि दृष्टांत सहै
न हि सोई ॥ १३ ॥ ननु सीपी महि रजत ज्ञान ॥ भ्रम स्वरूप नहि सो पहिचान ॥ नहि वह रजत भ्रमत दरदये ॥ सीप विवे जाते भ्रम क
हये ॥ १४ ॥ किंतन हा है दोऊ ज्ञान ॥ प्रत्यक्ष स्मरणा रूप पहिचान ॥ प्रत्यक्ष तहां है इदमाकार ॥ रजत ज्ञान स्मृति निर्धार ॥ १५ ॥ प्रत्य
क्ष विषय साचो नहि ग्रहे ॥ इदं ग्रस मन कोई कहे ॥ स्मृति विषय रजत है जोई ॥ काता कर मै साचो सोई ॥ १६ ॥ सीप शुक्लता दे
खि जवही ॥ संस्कार प्रगटे पुनि तवही ॥ दीर्घ दोष तन्ना को हरे ॥ प्रमुष्ट तत्ता स्मृति उचारे ॥ १७ ॥ जे को भ्रांति ज्ञान नहि गावे ॥ वि
षत माहि इंद्र सो पावे ॥ इंद्रिय निखिल जगत मो जोई ॥ यथार्थ ज्ञान उपावे सोई ॥ १८ ॥ याहि निरणीत नियम जग ग्रहे ॥ तो व्या
भिचार न कोई लहे ॥ तो तन जने मिथ्या ज्ञान ॥ तो यहि नियम सकल पुनि हान ॥ १९ ॥ ननु सदोष इंद्रिय है जोई ॥ मिथ्या ज्ञान उपावे
सोई ॥ यहि सुनि मिथ्या वचन निहार ॥ काहे को तिह करेउ चार ॥ २० ॥ दोख प्रहे या जग मो जोई ॥ कार्य का प्रतिबंधक सोई ॥ नहि
कार्य औरे उपजावे ॥ दोख यो नाहि न कोऊ वतावे ॥ २१ ॥ ऐसे जो नहि निज उर मानो ॥ तो उर वाधक प्रगट पछानो ॥ कुष्ट प्रदेय व
धा ना जोई ॥ तो धुर्मं उपजावे सोई ॥ २२ ॥ तातें दोख होई है जहां ॥ कार्य को प्रतिबंध न तहां ॥ तातें औरे प्रकार न कोई ॥ तो न तहां मा
नो अवधोई ॥ २३ ॥ ननु जे न हां रजत न दिह रयो ॥ इदं रजत काहे तिन टरयो ॥ गुरु रूप को वारे जोई ॥ किउ प्रवृत्त ता मो सोई ॥ २४ ॥ २९

नेरंरजतनबाधकिउरहै॥ जोतामोनहिंभासयोसोई॥ तांतेतामेरजतनहेरयो॥ जोंतेईदंरजतनरहेरयो॥२५॥ तोहिंशुक्तारवा
वानेजेने॥ मिथ्यारजतनसाधेतेने॥ रजतईदंकाभेदनहेहै॥ तांतेईदंरजतनरहेहै॥२६॥ भेदग्रग्रहनेहोइप्रवृत्ति॥ सोपीमहै
नहितनतोनिवृत्ति॥ बाधतहांभासयोनेजोई॥ रजतबाधनहिंमानयोसोई॥२७॥ रूपकाजोईग्रवहार॥ बाधतहांताकोनिर
धार॥ तांतेभ्रांतिज्ञाननहिकोई॥ सगलयथार्थज्ञानसजोई॥२८॥ ज्ञानवरूपहीहैतपछानो॥ संमतनवनतहांतस्तजानो
यौंमीमांसिककरेउचार॥ कोविदमानेसगलग्रसार॥२९॥ ईदंरजतजोह्येज्ञान॥ एकविशिष्टरूपपरिचान॥ सोचोतो
हिंविषयनहिंदये॥ तांतेभ्रमसरूपवहूपये॥३०॥ जेग्रेसनहिंमानेकोई॥ कैसेतहांप्रवृत्तेसोई॥ भेदग्रग्रहतेजेतहथावे॥
ग्रभेदग्रग्रहतेउलटोग्रावे॥३१॥ उदासीनसलोपतिमाही॥ भेदग्रग्रहककुकाकोनाही॥ सगलप्रवृत्तेताकेमाही॥ कोऊने
वृत्तिहोइहैनाही॥३२॥ ग्ररूरूपकीस्मृतिजोई॥ भावीतेग्रसत्यससोई॥ कोतांकरमेदेखियोजोई॥ जोतांरजतसिमहेसो
ई॥३३॥ तोकोताकरदेखियोजोई॥ ताकीस्मृतिमोकोहोई॥ ग्रेसोकिउनहिंकरेउचार॥ तातेपकत्तानिरधार॥३४॥ जोतता
ग्रमुख्यबखानो॥ तोस्मृतिकेसेतमजानो॥ नञ्जाग्रंशनभासेजहां॥ स्मृतिनिहचेहोइनतहां॥३५॥ तांतेरजतज्ञानहेजोई॥
स्मृतिभिन्नपछानोसोई॥ नरकोजोईरजतज्ञान॥ पुरोवर्तीविषयकपछान॥३६॥ जोतेतामोजनेप्रवृत्ति॥ सत्यरजततवता
नाहिनिवृत्ति॥ ग्ररूरूपकोइच्छाजोई॥ तोताकोनरधह्वेकोई॥३७॥ कहंरजतमोकोदिखलावो॥ ग्रर्थकहांतमधापजावो
तोताकोइच्छाहेजोई॥ ग्रंगुलकरदिखलावेसोई॥३८॥ पहिदेखावोरजतग्रनूप॥ इहग्रप्रवंजोकोरूप॥ ग्रहशुनिदेखउइप्रहे
जोई॥ कार्यग्रीरउपावेसोई॥३९॥ यामेग्रहेनिदर्शनसार॥ सोसतनयेनीकेनिरधार॥ ग्रग्निदाहदोषकेपाप॥ वैतवीजकेलाउ
पजाई॥४०॥ ग्रहशुनिभस्मकरोगारइष्ट॥ जदग्राग्निहोवेग्रतिरुष्ट॥ वहुतग्रत्रजलदाहसकरे॥ योविपरीतकार्यविस्तरे॥४१॥
इंद्रियदोषउत्पतिउहोई॥ मिथ्याज्ञानउपावेसोई॥ नेमवखानयोतेनेजोई॥ होवहीनइंद्रियमहिसोई॥४२॥ दोषगुक्तमेहेय

भिचार ॥ तांतेवहुउल्लंगिकधार ॥ ग्रहणुनिवाधवखानयोजोई ॥ रजतव्यवहारविषयनहिसोई ॥ ४३ ॥ सत्ववासनाजोनरहये ॥
नहिव्यवहारतांहिकोपये ॥ रजतनिहारवाधपुनिजोई ॥ सीपविलक्षपेकोसोई ॥ ४४ ॥ ग्रहणुनिसगलयथार्थज्ञान ॥ यामे।
जोभावयोग्रनुमान ॥ सोउरवाधितश्रगटपछानो ॥ साधग्रसत्यतांहिकोजानो ॥ ४५ ॥ तिउकोपावकशीतलक्षहोनाप ॥ इयतहे
तलामाहिवलाप ॥ नीरहिकरहांतनहिहये ॥ जेसोयहितेसौंपये ॥ ४६ ॥ योमीमांसिकसमेनिवारयो ॥ तवनैयायिकवेनउचा।
रयो ॥ ग्रसख्यातिग्रहेभ्रममाही ॥ तांतेरजतसीपमेनाही ॥ ४७ ॥ कालाकरमेरूपाजोई ॥ भ्रमतेभासेईहांसोई ॥ इंद्रजतयदि
ग्रनुभवज्ञान ॥ स्मृतिग्रशनकारेमान ॥ ४८ ॥ सोपुनिरंजतनकूदोहये ॥ कालाकरमेसाचोपये ॥ तांतेरूपनिदर्शनजोई ॥ मि।
थ्यामेग्रसंगतिसोई ॥ ४९ ॥ मिथ्यामेसंगतिसोहये ॥ मिथ्यावचननतमारोपये ॥ कालाकरमेरूपाजोहे ॥ इंद्रियसंनिकृष्टनहि।
सोहै ॥ ५० ॥ चाखषद्रष्टिनतांकेमांही ॥ तांतेनिकटदेशवहुनाही ॥ त्वचस्पर्शतामोहेजोई ॥ हरनिरसलहूरमेसोई ॥ ५१ ॥ तांते।
कालाभाननहोई ॥ किहिविधिईहांभाससोई ॥ तंकुदोषतेभाससोई ॥ कालाकरमेरूपाजोई ॥ ५२ ॥ गुणमविकल्पयाहिमोजा।
नो ॥ तांहीकुरूपहिदुहूपछानो ॥ दोषमात्रभवभीतरजोई ॥ रजतभानकोकारणसोई ॥ ५३ ॥ ग्रथवातांहिसदितदृगजोई ॥
देतवखानोतांकोसोई ॥ प्रथमेग्रंधाजोभवमाही ॥ रजतनिहारेसोकिउंनाही ॥ ५४ ॥ द्वितीयमध्यपदार्थजेते ॥ तांकोहोहि।
भानसभतेते ॥ तांतेप्रथमरजतनरभासे ॥ सक्तिज्ञाननतेवहुहोनासे ॥ ५५ ॥ तांतेग्रनिर्वाच्यवहूहये ॥ सत्यग्रसत्यउतीरणपये ॥
कणभक्तग्रत्तचरणग्रनुयाई ॥ तांतेमिथ्यागाथागाई ॥ ५६ ॥ नत्र नैयायिकवातवखानीजोई ॥ साचुकहियोमिथ्याहैसो।
ई ॥ स्वप्रकाशजोईविज्ञान ॥ रजतपदार्थसोईज्ञान ॥ ५७ ॥ विज्ञानभिन्नरजतभवमाही ॥ यामेमानहेरयोनाही ॥ जैसीजहां।
होइप्रतीति ॥ तैसोग्रर्थधरेनरचीति ॥ ५८ ॥ प्रतीतिरूपतांतेवहुहये ॥ विनप्रतीतिरजतनहिपये ॥ वाधकतहांज्ञानहैजोई ॥
इंद्रतांकोवाधोभवसोई ॥ ५९ ॥ तांतेवाहरवाधितहये ॥ तांतेज्ञानरूपवहूपये ॥ ग्रांतरजोहयेविज्ञान ॥ वाहरवतसोहोवेभान ॥

८०॥ यामेसर्वदोषनकोई॥ नैयायिकमतमेमानयोजोई॥ योंवुद्धिविनवोइउचारे॥ तांहिविषेवूवनप्रतिभावे॥८१॥ प्रतिभासि।
कप्रथ्यक्षहेजगजेते॥ ज्ञानसरूपप्रगोनननहितेते॥ यामोकोइदूषेप्रमान॥ विनामाननमिथ्यापहिचान॥८२॥ अनुभवउतवाधकप्र
तीति॥ प्रथमप्रसंगतिधारेचीति॥ अनुभवप्रहेजगतमोजोई॥ वाहररजननजनावेसोई॥८३॥ जोंतेइदंरजतनरधावे॥ अहो
रजतयोंकोइनभावे॥ ज्ञोइपाहोवेनिजज्ञान॥ अहंरजतसमकरेवखान॥८४॥ हितीयेवाधकज्ञानसुजोई॥ रजतविज्ञान।
नभावेसोई॥ भ्रागेयदोदूष्यहेजोई॥ रजतभिन्नदिखलावेसोई॥८५॥ इदंनइपोपोंनरकरे॥ विज्ञानइपनतोकोलहे॥ मेंहो
इपोयोप्रतिभावे॥ जोविज्ञानइपतिहलावे॥८६॥ अरुप्रुनिवुद्धिइपजेहोई॥ सोपोमहिइपाहेजोई॥ तोयुज्ञामहिप्रग्रीजो
ई॥ वुद्धिइपतेमतमहिसोई॥८७॥ वाहरतवहकहीहये॥ साचीप्रग्रिमध्यनेपये॥ साचीप्रग्रिहोइप्रुनिजहां॥ नीकेप्रगटज।
लावेतहां॥८८॥ तोनेदेहतमारोजोई॥ भस्मीभावहोइगोसोई॥ यांतेपरेहानकोइहइहे॥ नेसिद्धांततेतनकोवुइहे॥८९॥ अ
रुप्रुनिजेसीजहिप्रतीति॥ तेसोअर्थ्यधरेनरचीति॥ यदिहिवाधोनीतेनेजोई॥ तापकतेपदिवानोसोई॥९०॥ तापकज्ञानअर्थ्य।
कोहये॥ तांहीतेतेसीविधपये॥ इपोज्ञानइपनिजहये॥ यामोमाननकोइपये॥९१॥ विज्ञानइपजोतेनहिहोवे॥ तांहीतेनरवा
हरजोवे॥ अरुप्रुनिवाधरजतकोहये॥ इदंताजितेकीतितेनहिपये॥९२॥ ननुसोसीपइदंताजोई॥ तांकोवाधकरेनहिकोई॥
ज्ञानमाहिइदंताजोहे॥ वाधितयाभवभीनरसोहे॥९३॥ यदिप्रलापनिरर्थ्यकहये॥ जोंतेयुगमदोषतिहपये॥ ज्ञानमाहिइदं
ताजोई॥ तोसीपीतेग्रावैसोई॥९४॥ अमख्यात्यानितोहिकोग्राई॥ भ्रोरहौरकोयामोगाई॥ ग्रात्मख्यातितमारीजोई॥ इन्नतिल
जतिहोईसोई॥९५॥ अरुजेज्ञानमाहिवहुहये॥ वाहरतेनहियामोपये॥ तोतिहवाधकहेनहिहोई॥ यथाज्ञानतैसेप्रुनिसोई॥
९६॥ वाधप्रगटतोकोप्रुनिहोइ॥ जोंतेज्ञानमाहिनहिसोइ॥ वाधतहोइपेकोहोई॥ जोंतेग्रोरप्रकारनसोई॥९७॥ ग्रांतरजोहये
विज्ञान॥ वाहरवतसोहोवेभान॥ यादिविवेहूवनगताजोई॥ प्रवेसगलववोनयोसोई॥९८॥ नैयायिकमतहवनवि

न ग्यान ॥ याहि विवेक हो वैव बहु भान ॥ इव वनतेय हि उरूप छानो ॥ आतम व्यापी तिन साखी मानो ॥ ७९ ॥ नंनु जे ग्रोर शकार न कोई ॥ असत्य।
व्यापी तिमानो गति सोई ॥ ग्रांतर जो हृदये इक ज्ञान ॥ तां मो एक शक्ति पहिचान ॥ ८० ॥ वा हर सत्य संपूर्ण अर्थ ॥ तां प्रकाशन को सत्य समा
र्थ ॥ अविद्या नाम ताहि को जानो ॥ सगल व्यवहार तांहि ते मानो ॥ ८१ ॥ एक प्रसंग तिते ने गाई ॥ युक्ति याहि सो ग्रहेन काई ॥ कौन शा।
क्या शक्ति रु केरो क्रौ हुयेनी को व हूटे रो ॥ ८२ ॥ ननु असत्य शक्या के रो हुये ॥ सत्य शक्यान हि कोई पये ॥ असत्य शक्ति को
कार्य हुये ॥ अथ वा ताप्य शक्ति को पये ॥ ८३ ॥ कार्य ताप्य देन बहु नाही ॥ जो ते हव न होनो माही ॥ असत्य वस्तु उपजे नहि कोई ॥ स
से सींग निउ जानो सोई ॥ ८४ ॥ है असत्य पुनि उपजे सोई ॥ यहि ग्याता न प्रगट सन होई ॥ अरु पुनि हित ही पत्त है जोई ॥ प्रगट असंग।
ति जानो सोई ॥ ८५ ॥ ज्ञान सत्य अतिशय जो मो धारे ॥ तांही मो प्रकाश विथारे ॥ जो अतिशय के अर्थ अधार ॥ का है असत्य करे उचार ॥ ८६ ॥
अरु पुनि सत्य ज्ञान है जोई ॥ सत्य अर्थ सों छुहेन सोई ॥ सत्य असत्य संबंध न कोई ॥ कैसे तिह प्रकासे सोई ॥ ८७ ॥ ननु संबंधाभाव न ह
ये ॥ प्रगट संबंध तांहि को पये ॥ असत्य अधीन निरूपण जोई ॥ संबंध ज्ञान मो जानो सोई ॥ ८८ ॥ यहि असत्यत मारी वानी ॥ युक्तिहीन।
नहि मानो ज्ञानी ॥ जो असत्य अतिशय न हि जने ॥ ज्ञान विवेकी के से भने ॥ ८९ ॥ असत्य अधीन निरूपण हुये ॥ यहि असत्य तंइ ते प
ये ॥ ज्ञान विवेक अतिशय जो जाए ॥ तो असत्य का हि तिह गाए ॥ ९० ॥ अर्थ क्रिया को कारी जोई ॥ सत्यत मारे मत मै सोई ॥ असत्य व्या।
प्ति को कीयो प्रहार ॥ इव वनगण तेल लखो असार ॥ ९१ ॥ केचित सत्य असत्य बखाने ॥ प्रगट विरोध होइ मत हाने ॥ सत्य विरोधी असेष।
सत्य ॥ ताहि विरोधी जानो सत्य ॥ ९२ ॥ तम प्रकाश सम होनो हुये ॥ युगपद एक ठौर नहि पये ॥ अनिर्वाच्या व्यापी तिरु कहेई ॥ याहि।
न ग्रोर वने न नहि कोई ॥ ९३ ॥ अपो सत्य न सोपी माही ॥ नहि असत्य पुनि ता के माही ॥ सत्य असत्य विरोधी हुये ॥ तां ते रजत मिथ्या प
ये ॥ ९४ ॥ जैसे रजत तथा जग जानो ॥ तां ते है तन मिथ्या मानो ॥ ननु जर है है तन मिथ्या होई ॥ निखिल है त नहि तां ते होई ॥ ९५ ॥ जीव।
ब्रह्म चेतन है जेई ॥ मिथ्या नाहि जगत समतेई ॥ तां कर है तन प्रगट पुनि होई ॥ नाहि है त एक कै है सोई ॥ ९६ ॥ दोहरा ॥ जीव ब्रह्म हो एक

हेयामोमाननकोई॥ मानविनाजोएकतात्वरविषातासमसोई॥ ४०॥ सोरठा॥ तंत्वमसीयहिमानश्रुतिविराजेशिखामणि॥ येचकको
नहिभानकोविरथागारनिहारही॥ ४१॥ चौपई॥ ननुजीवब्रह्मकेधर्मविरुद्धा॥ बहुविधदैभवमहिपरसिद्धा॥ वहुपरमात्मसर्वज्ञा।
ने॥ जीवसुकिंचितग्रथपछाने॥ ४२॥ इत्यादिवहुविधकेजानो॥ सभजनजानेकरंख्यानो॥ धर्मविरुद्धहोहिजिनिकेरे॥ तीरथ्रा।
ग्रिजिउंएकनहरे॥ १॥ तांतेएकरूपनहिगावे॥ महावाक्यकछुऔरवतावे॥ विरुद्धधर्मजेतारनमाही॥ सगलत्यागोदोनोमाही॥
१ सोपदेवंदलगतिजोई॥ महावाक्यमेजानोसोई॥ याविधलक्षणाकरिइनमाही॥ लखिअभेदजेवुद्धभवमाही॥ २॥ नेनुअखंड।
अर्थयामेकछुनाही॥ करोकलेषालक्षणाकोंही॥ महावाक्यसंसर्गवतावे॥ विनालक्षणासोवनजावे॥ ३॥ कंहेकवनसं
सर्गहिअहे॥ जीवब्रह्मकोजोयहिकहे॥ सोंसर्गदमतोहिवतावे॥ करअंगुलिदृष्टांतदिखावे॥ ४॥ करसमअंशीईशपछानो॥
अंशजीवअंगुलिसमजानो॥ मेरीअंशजीवतिदरूप॥ जीवलोकमेअहेअनूप॥ ५॥ यौंभगवानप्रगटतिहगावे॥ शरणागति
सेदेहमितावे॥ अथवाईशविकाररहजानो॥ भ्रुवखरसमजीवपछानो॥ ६॥ पावकविस्फुलिंगसमान॥ ब्रह्मजीवकोतीकेमान॥
याविधश्रुतिविकारवतावे॥ जीवब्रह्मविकारीगावे॥ ७॥ यहिदोनोनेपक्षअसार॥ यामोनहिपयेकछुसार॥ श्रुतियुक्तिनिरंश
वतावे॥ अंशनताकीकोवहिरावे॥ ८॥ वानेरचकरकोयोप्रवेश॥ जीवरूपकरहरणाकलेश॥ नतोअंशोगयोसमाय॥ फोरसी
मंतवरियोतनआय॥ ९॥ जिउंनरपतिमंत्रीकोवेश॥ धारकरेमंदिरपरवेश॥ नरपतिकोयहिमंत्रीअहे॥ सभजनसुखतेयोंहीको
हे॥ १०॥ वस्तविचारकरेजेकोई॥ सोनरपतिविनुऔरनकोई॥ अहुजिउंदोतनभीतरयोगी॥ एकोभीत्तराजकोभोगी॥ ११॥ तिउंही
ईशधारयहिवेश॥ जीवरूपकरकरेप्रवेश॥ जीवअंशमेहूत्वनजेते॥ सर्वकरेयुक्तिसोंतेते॥ १२॥ मायाअरुअविद्याजोई॥ उपा
धिभयेभवमेतेदोई॥ कल्पितजीवब्रह्मकोभेद॥ दोनोकरिनहिस्वतोअभेद॥ १३॥ कल्पितअंशाकृत्सउरमानो॥ येहितवारंवार
वखानो॥ अहुअनंशपदार्थजोई॥ करसमसगलजगमहैसोई॥ १४॥ तिउंहीईशजगमनवहोई॥ तांकोजनककवखानोकोई॥ नि

मो
त
प
३६

रविकारसमुखतेगायो॥ द्वितीयपदतेकृत्समिटायो॥१५॥ छेदहीन अहदाहतेहीन॥ अविकारीवेदोक्तचीन॥ द्वितीयअध्या
यमांहियोंगायो॥ अर्जुनकोसंदेहमिटायो॥१६॥ अरुपुनिश्रुतिवखानीजोई॥ नाहिविकारवनावेसोई॥ अग्निप्रकाशअ्यदैजे।
से॥ विस्फुलिंगपुनिजानोतैसे॥१७॥ दोहरा॥ तिंउपरमात्मजीवकोमानेजोतिस्वरूप॥ अंसंतविलक्षणशंकरहनदेहोसमअभिर
प॥१८॥ चौपई॥ उपाधिकअलपअमानसमाने॥ विस्फुलिंगदृष्टांतवखाने॥ नातरअंसंतरहैजोई॥ प्रगटविरोधतांहिकोहोई॥१९
निरविकारनिरंजनरूप॥ ऐसेश्रुतिसकहेअनूप॥ औरसंसर्गवखानोजेते॥ वनेनमहावाक्यमैतेते॥२०॥ तंहंदतंकरणस।
अहै॥ यासमअर्थकोनहिकहै॥ यहिक्रमारपावकपरिचान॥ यासमसादृशअपरनहिमान॥२१॥ कार्यकारणभावजोअहै॥ वा
स्माहीसमनायहिकहै॥ नायहिजातिव्यक्तिपुनिकहै॥ गोत्वंरुसमतांतेवैदहै॥२२॥ गुणअरुगुणीनभावसोई॥ नीलकमलसा
मकाहैहोई॥ उपासनपरयहिवाक्यनअहै॥ मूर्तिहरिजिउंतांनेनकहै॥२३॥ राजपुरुषराजोयहिहियै॥ तिउंउपचारिकनायहिप्रि
ये॥ क्रमकरसगलपदकेमाही॥ जेहूतवनभावोअवतांही॥२४॥ उसतिहोवेतांकरतहां॥ भेदहोइजांकोपुनिजहां॥ जिउं।
नरकीकोउसतिकरे॥ सुरपतिनामसोहिउचारे॥२५॥ सदेवसोमपकयहिअहै॥ पाविनहूसरकोरनअहै॥ एतदात्मसगल
पछानो॥ याहिविवेससानहियानो॥२६॥ जीवईशनिवलकोभेद॥ श्रुतिनिवारेकहेअभेद॥ भेदवखानेश्रुतिविरोध॥ तोहीं
कोनीकेउरसोध॥२७॥ जांतेभेदनदोनोकेरो॥ तांतेउसतिपरनहिहेरो॥ गुणअवयवक्रियासमान॥ जांकेजांसोसोसमजान
२८॥ गुणअवयवक्रियाकछुनाही॥ वेदवखानेतांकेमाही॥ निरगुणनिरावयववक्तकहै॥ अगुणअप्रिक्रियातांहिनसहै॥२
तांविनसादृशकैसेहोइ॥ तांतेसादृशपरनहिसोइ॥ क्रमारअग्निसमवाक्यसनाही॥ ग्रावंउअर्थहैयांकेमाही॥३०॥ निरावय
वजांतेवक्तहये॥ ग्रंभकत्वतांतेनहिपये॥ एकदेशवासगलोहोइ॥ कहूपरणामीकिहविधसोइ॥३१॥ प्रथमेहोइसवयवी
रूप॥ द्वितीयेशुद्धनतांकोरूप॥ वारसंघातादिकहैजेते॥ सगलअसंगतिभाखेनेते॥३२॥ तांतेकार्यकारणभाव॥ वाक्यनका।

३६

हेयत्वं उस्वभाव ॥ जीव उपाधि क्रि के माही ॥ ईस्वर ज्ञानि कदाचित नाही ॥ ३३ ॥ जेतं कोको ज्ञानि वखाने ॥ गोतस समान जउ तिहठा-
ने ॥ तांते होइ अनीस्वर जावे ॥ ईस्वर नाम न सो कहिलावे ॥ ३४ ॥ ईस्वर सर्व ज्ञाता अहे ॥ गोतस समान कथे तिह कहे ॥ यांते ज्ञातिख्या-
क्रिन हिक है ॥ वाक्य अलेउ अर्थ यहि अहे ॥ ३५ ॥ गुण अरूप गौन वाक्य वखाने ॥ काहे वाक्य क दर्थ यहाने ॥ जीव जवे ईस्वर गु-
ण होई ॥ नव संसारी ईस्वर सोई ॥ ३६ ॥ जीव विशिष्ट होइ असक्त ॥ काहे वेद कहे सर्वज्ञ ॥ जो गुनि ईश जीव गुण होई ॥ तो संसारस्वा-
पो को कोई ॥ ३७ ॥ निमग्र क्रि यहि प्रमाण अर्थ ॥ यां प्रति वेद कहे व्यर्थ ॥ इत्यादि हूं वचन ने हाने ॥ निरगुण स्तुति को पगुनि हाने ॥
३८ ॥ नील कमल सम तांते नाही ॥ अलेउ अर्थ है यां के माही ॥ प्रतिमा को जिउ ईस्वर जान ॥ करे उपासन वहु उरमान ॥ ३९ ॥ ति-
उही जीव ब्रह्म उर माने ॥ करो उपासन यौन वखाने ॥ जो उपासन वेद वतावे ॥ तो अध्यास रूप कता आवे ॥ ४० ॥ ताके है अव दोपर-
कार ॥ दोषज एक आहार्य धार ॥ प्रथम ह्ये भ्रांति स्वरूप ॥ द्वितीय मान स क्रिया अनूप ॥ ४१ ॥ शुक्ति रजत भ्रांति उर आने ॥ भे-
द भान या मो न हि माने ॥ भेद ग्रहण इस मोहो होई ॥ इछाकर उपजावे सोई ॥ ४२ ॥ सो आहार्य तीन प्रकार ॥ शास्त्र कृत सांके ति-
क धार ॥ गौण अध्यास तीसरो ह्ये ॥ लखे को अग्नि निदर्शन पये ॥ ४३ ॥ शास्त्र हे अव दो प्रकार ॥ प्रथम को अवक रो उचार ॥
शास्त्र कृत के दो प्रकार ॥ अव तिन को करो उचार ॥ ४४ ॥ संपति उपास प्रथम महे ॥ प्रतीक उपास दूसर कहे ॥ जिउ गुर मो-
न रवु द्धि लागे ॥ देव ज्ञान न ताके पद लागे ॥ ४५ ॥ जिउ पंचाग्नि भ्रम के माही ॥ अरु पुनि धूम पोषिदा माही ॥ जिउ आदित्य की बु-
द्धि उठावे ॥ अग्नि बुद्धि कर तां को ध्यावे ॥ ४६ ॥ यहि संपति उपासन गाई ॥ अव प्रतीक हि दे सुदिखाई ॥ जिउ यहि सुलक्षणा के
माही ॥ ज्ञान उद्गीथ उपासे तांही ॥ ४७ ॥ जिउ रेखा मे यही ककार ॥ यहि सांकेतिक करे उचार ॥ अध्यास प्रकार अहे पुनि जेते ॥
कहि संक्षेप कहे मैं तेते ॥ ४८ ॥ उपासन पद्ध हु वचन है जोई ॥ अव मैं प्रगट वखानो सोई ॥ वाक्य उपासन पर है जहां ॥ विधा पि-
क शब्द के है श्रुति तहां ॥ ४९ ॥ वाचं धेनु उपासन करे ॥ यहि मन ब्रह्म उपासन धरे ॥ आदित्यो ब्रह्म उपासे नीत ॥ इत्यादिक तां-

मो. प्र. प. ध.

परधाचीत ॥ ५० ॥ विधायिक शाक्तन याके माही ॥ उपासनपर तां ते यहि नाही ॥ उपासन के प्रकरनन माही ॥ महावाक्यय।
हियविदियो नाही ॥ ५१ ॥ जे यामो को भाव ध्यान ॥ सु ने ग्रंथ कां समत ज्ञान ॥ ग्रस ने ग्रंथ का कल्पन करे ॥ इमादिक हू खवनउ।
रपवे ॥ ५२ ॥ दोहरा ॥ आत्मविद्या जहिं कही नहीं न भाव ध्यान ॥ तत्त्वमसी यहि वाकी मैं भई उपासन ज्ञान ॥ ५३ ॥ चौपई ॥ नतु आ
त्म इमेव उपासे ॥ ओन ओतिह वेद प्रकासे ॥ मंत्र ब्रह्म आत्म ग्रहे ॥ पुनि निध्यासन श्रुति कहे ॥ ५४ ॥ यो आत्मविद्या के
माही ॥ ध्यानादिक सभ निषेधे नाही ॥ ग्रसनियोन हि कछु कल्पन कीयो ॥ काहे उपालंभ मुहि दीयो ॥ ५५ ॥ याहि श्रुति का स
नो वीचार ॥ जो हित ध्यान करे सु उचार ॥ द्रष्टव्य रु कु आत्म ग्रहे ॥ याविध श्रुति उदेश हु कहे ॥ ५६ ॥ जो हित साधन करे विधान ॥ श्रा
वन मनन निध्यासन ज्ञान ॥ साधन की विधना सो हू ये ॥ महावाक्य मो न हि विधि पये ॥ ५७ ॥ अरु क्रिया फल होवे जोई ॥ सगल।
अनित्य जगत मो सोई ॥ उपासन मानस क्रिया सु रूप ॥ तां को फल जो मोक्ष अनूप ॥ ५८ ॥ सो अब दोइ अनित्य हु जावे ॥ पुरु
ष पुनि बंधन पावे ॥ बंधन पाय अनर्थ सु जेते ॥ प्राप याहि पक्ष मो तेते ॥ ५९ ॥ तां ते तेरो पक्ष असार ॥ काहे पुनि पुनि करे उचार
यो नहि वाक्य उपासन कहे ॥ अलंकार ग्रंथ विन औरन ग्रहे ॥ ६० ॥ नतु जे यहि भव पक्ष असार ॥ तो उपचारक पक्ष सु सार ॥ वा।
क्य पक्ष ता भावी जोई ॥ राज पुरुष सम जानो सोई ॥ ६१ ॥ उपचारक पक्ष वखानो जोई ॥ अहे असार सु नो जिउ सोई ॥ राज पुरुष
सम जे है ग्रंथ ॥ नव अभ्यास भये तो व्यर्थ ॥ ६२ ॥ वारंवार प्रेरणा संगा ॥ नव वारे अभ्यास प्रसंगा ॥ निज सुत को उद्दालक गावे
उपचारक पक्ष न यां ते आवे ॥ ६३ ॥ उपचार प्रयोगे न हि अलेप ॥ हू खवन को तां ते न हि लेप ॥ काहे नव वारे वह गावे ॥ तां ते अ।
र्थ अलंकृत दिखावे ॥ ६४ ॥ ह्वे तोग विविज्ञेन व अभ्यास ॥ ने संहेपते करों प्रकास ॥ उद्दालक कीयो सुत उपदेश ॥ तत्वमसी तत
हर कलेस ॥ ६५ ॥ स्वेत केत को देख संदेह ॥ प्रथम अभ्यास कहियो तिन पह ॥ सद एव सोम प्रथम यहि अहे ॥ इति उपक्रम अनतमो
कहे ॥ ६६ ॥ सत आपत न सत महि प्रतिष्ठा ॥ याविध सगल जगत की निष्ठा ॥ सो सद रूप तहीं इ कह्यो ॥ सद् एव प्रथम में संधव समप।

यो॥८७॥ पुनि तैसा गली रस हूउ पाई॥ तेजा दिक सभ है दुःख दाई॥ तामो तै की नो अभिमान॥ आत्मा मै अध्यास हि जान॥८८॥ तां
ते तही जो बहु दुःख पायो॥ जां ते या विध को दुःख भयो॥ सद्गुरु मिलि विवेक सत नमो मिल जावे॥ नाम रूप न न दिक छु पावे॥८९॥ यां ते
नाम रूप न दिखे है॥ देहा दिक सभ मिथ्या कहे है॥ देहां न कार्य कर नि है हीरि॥ सम सरूप ते रहा लावो अहू॥९०॥ ज्ञान अहि तीयबोध
जो अहे॥ सम सरूप वेद जिह कहे॥ ऐसे जो सतत अभ्यास उचारे॥ तत्वमसी उरकि ते न हि धारे॥९१॥ हे अभज्जो सतमिल नो गायो॥
सो मेरे मन मो न दिखायो॥ जो सत्व पति मो सत को पावे॥ तो मुख ते जन पा दिखलावे॥९२॥ हम सम सत्य प्राप्त भये॥ ना
म रूप हम रे मिट गये॥ पुनि सत्व पति ते जां गेज व ही॥ सत्य प्राप्ति को सिमरे तव ही॥९३॥ न दिको कहे न सिमरे कोई॥ सो अ
नुभव के से मुहि होई॥ सत्य ब्रह्म तां ते मे नांहीं॥ परिसम जो अपने मन मांहीं॥९४॥ या विध सत्त न के मन न दिखायो॥ हिती
य अभ्यास तवे तिन गायो॥ जिउ सभ फूलन के रस जे ते॥ मधु मो जान मिले सभ ते ते॥९५॥ सद्गुरु मिलि विवेक ते सभ ही जाय॥ स
त्व सो एक रूप ता पाय॥ अविद्या कारि छाये हे जां ते॥ सत्य क जीव न जाने तां ते॥९६॥ भूमे जिउ गाड़ी निध होई॥ तां के ऊपर
विचरे कोई॥ उहां निध रति नाहि न स्तान॥ तां ते तां को हो इ न भान॥९७॥ तिउ ही परिजन न जाने नाही॥ दिन दिन नित्य मिले
तो माही॥ कर्म सवासन के अधीने॥ तां ते उ है दुःख पुनि चीने॥९८॥ सिंह या ज्रस करदे हा॥ मशका दिक सभ दुःख के गे
हा॥ तामो ल दिखा आत्म अध्यास॥ जां ते हो इ जन्म अरु नास॥९९॥ क्षुधा पिपासा के दुःख भारे॥ सभ जन लहे न जां हि निवारे॥
जो विछुरे जन यो दुःख होई॥ अपने निजानंद ना बोई॥१००॥ परमानंद सनातन सार॥ सै पव विलस मे निरधार॥ या विध
को सत न ब्रह्म लस जो ई॥ तत्वमसी त नी के सोई॥१०१॥ नंद जैसे को अहंभी तर सोवे॥ अपनी अहं स्थित न दि जोवे॥ अरु पुनि सा
त्व पति ते जव जागे॥ अहं ते वाहर आवन लागे॥१०२॥ मे अहं ते अव बाहर जोवो॥ नहीं जां उ कछु कृत कमा वो॥ या विध
अहं ते आवन जाने॥ अरु पुनि मुख ते अगन दव लोने॥१०३॥ तिउ परिजन न नि ज्ञा को मूढ॥ सत्व पति मो न हि लवि अगूढ॥

सतस्वरूपनेयहिजनजागे ॥ मात्रनकोजवआवनलागे ॥ ८४ ॥ द्रमसतनेअववादरजांवे ॥ याविधतानक्रतोनहिपावे ॥
यासंकाजांनेमिटजावे ॥ त्रतीयअभ्याससयांहितगावे ॥ ८५ ॥ प्राणिकर्मकरिप्रेरेजलधर ॥ जिउंसागरकोंपीवेवलधर ॥ जा
लधिभावनेदेइगिराय ॥ देशांतरमहिअरेआय ॥ ८६ ॥ नदीभावकोशामहोवे ॥ अपनोउदधिरूपनहिजोवे ॥ होतदभीतरद्रुइक
निवहे ॥ नदीनदीनिहजनक्रलकहे ॥ ८७ ॥ यौंहीतंशयमेसतरूप ॥ उपाधिअधीनधर्योयहिरूप ॥ अविद्याअंताकरणशरीर
यहिउपाधिपछांधीर ॥ ८८ ॥ स्फटकमणीजिउंअधभूयहे ॥ जपाकुसमतेलालीगहे ॥ तिउंहीतंहैसत्यसरूप ॥ उपाधिअधीन
विसारयोरूप ॥ ८९ ॥ याहीतेश्रुतितोहिजनावे ॥ मर्णोअहब्रह्मरूपतेगावे ॥ सतब्रह्मपरिपूर्णजोई ॥ सर्वरूपतमासोसोई ॥ ९० ॥
सर्वभावकोसिमरणकरो ॥ ततमसीउरअंतरधरो ॥ सागरतेसागरकोजावे ॥ नदीओसागररूपसमावे ॥ ९१ ॥ अपनोना
सोरूपनहिजाने ॥ अरुनदीयौंनाहिवखाने ॥ यद्यपिअसेवेदवखाने ॥ उदधिरूपभूलननहिमाने ॥ ९२ ॥ तद्यपिसागरभू
लनजोई ॥ भावयोसम्यकजानोसोई ॥ सर्वभावविसमरणजोई ॥ श्रुतिमाहिविवहतिसोई ॥ ९३ ॥ जिउंसागरपरपूर्ण
रहे ॥ तथाजीवपरपूर्णपरे ॥ जिउंसागरनिजरूपभुलाय ॥ नदीरूपनिजमानेआय ॥ ९४ ॥ तथाजीवनिजब्रह्मनजाने
अरुजीवयौंप्रगटवखाने ॥ सर्वरूपविसिमरणजोई ॥ उदधिनिदर्शनमोश्रुतिसोई ॥ ९५ ॥ दोहरा ॥ सर्वअंशदृष्टांतजोयाही
विधनिरधार ॥ सागररूपभुलावनोतांतेकीनउचार ॥ ९६ ॥ दोहरा ॥ सगाजसिदइनिजग्रंथमेघार्यंजनपरधान ॥ यौंहीगं
गाधरकहेतांतेभयोपरमान ॥ ९७ ॥ चौपई ॥ नंत्रजेजीवसम्पतेआवें ॥ वहुरोसत्यविवेमिलजावे ॥ जिउंसागरतेउठेतरंग ॥ पु
निताहीमाहोवेभंग ॥ ९८ ॥ तिउंहीजीवविनासीहोवे ॥ निजरूपनहिकोविदजोवे ॥ वहुरोदेहादिकहैजेते ॥ सततेउठेंव
गृवरतेते ॥ ९९ ॥ तेहोवेंअवआत्मरूप ॥ भिन्ननहोवेताकोरूप ॥ अहपुनिसत्यविकारीहोइ ॥ सागरसमनीकेउरजोइ ॥ १०० ॥
यासंकाकाहोउउधार ॥ अभ्यासचतुर्थोयाहितधार ॥ सोमवडेतरयहिपुनिपेखो ॥ जीवसमक्रसकोदृगदेखो ॥ १ ॥ का

मकरजीवमागेताको॥ अशकहे१शाखाविउवांको॥ शाखापकमागेजवही॥ तकजायशाखावद्धतवही॥२॥ द्वितीय
पमभीशाखापरा॥ अश्कहेश्सोभीपुनितदा॥ शाखाभिन्नजीवजोग्रहे। एकरमागद्वितीमोरहे॥३॥ दूसरमागतीसरी
रीरहे॥ याविधश्सिथितिकोजिउंगहे॥ तिउंहीतरुकोमागेजवही॥ देहांतरमोस्थिततवही॥४॥ अपनेदेहविखेतिउंजा
नो॥ जीवआत्माभ्रमपछानो॥ जिउंशाखाकोदेवेमाग॥ अथवाशाखापरहेभाग॥५॥ एहतरुजीवननासीहोइ॥ तिम
अनासीताकोजोइ॥ तसभिमरणमोतिउपछिजानो॥ नित्यआत्माअगटपछानो॥६॥ जलतरंगनेविषमेहूये॥ तिमजी
वनासीनछिपये॥ अमगाब्रह्मआत्माजानो॥ एतदब्रूपसगलपछिचानो॥७॥ रज्जुउरगजिउयहिजगग्रहे॥ सागरसमवि
कारनगहे॥ तांतेब्रह्मभिन्नसजोई॥ सगलपछानोमिथ्यासोई॥८॥ पोसतनब्रह्मसनातनजोई॥ ततत्वमसीउपदेसोसोई॥
नंद्रुपतदब्रूपसगलदिखलायो॥ ताविनसगलमिथ्यागायो॥९॥ ब्रह्मसमवायीहोवेजवही॥ तोयदिवातववैगीनवही॥
सोयदिपबुध्रणपछिचानो॥ सूक्ष्मतेअतिसूक्ष्मजानो॥१०॥ याविधश्रुतिब्रह्मदिखलावे॥ सूक्ष्मतेअतिसूक्ष्मगावे॥ सोकै
सेस्थूलउपजावे॥ सगलजगतनमनमैनदिखावे॥११॥ स्थूलश्रुतिकाहोवेजवही॥ तेसोघटउपजावेतवही॥ नहिपरमाण
घटउपजावे॥ भाखयोकिनेनमननमैआवे॥१२॥ कारणरूपसप्रथमेहोई॥ पुनिकारणतेउपजेसोई॥ याविधकार्यप्रवेग्रहे॥
आविर्भावनतोपुनिलहे॥१३॥ अतिसूक्ष्ममहिअतिहंस्थूल॥ पहिसंभवभीग्रहेअमूल॥ तांतेब्रह्मभिन्नसभमिथ्या॥ पहि
[illegible]तहिभासेमिथ्या॥१४॥ पहिसकाजांतेनहिरहे॥ ऐसोपकनिदर्शनग्रहे॥ अभ्यासपंचमोसतप्रतिगावे॥ वटधानाता
तेअनवावे॥१५॥ हेसतनवटधानीलेआवो॥ तामोअतिदीर्घेनरूपावो॥ पहिहेखोअतिसूक्ष्मग्रहे॥ यामोकहूवटकेसरहे॥१६
जिउयामोतिउंब्रह्मकेमाही॥ सूक्ष्ममहिअसंभवनाही॥ जांतेताकेभीतररहे॥ तांहीतेताकेभवलहे॥१७॥ अद्धाजाकोहोरश्र
नूप॥ सोईलखेसतांकोरूप॥ अगातेअगाजांकोश्रुतिगावे॥ सन्नासर्वविखेदरसावे॥१८॥ इमलखतेसूक्ष्मगाप॥ व्यापक।

मो तु पं ४२

तेषु निसर्व दिखाय ॥ ऐसो जो सत ब्रह्म सरूप ॥ तत्वमसी उरगहो अनूप ॥ १९ ॥ तं न जे सर्व विवेक वहु हुये ॥ प्रत्यक ब्रह्म न संसे पये ॥
तो वहु भान न होइ किउ नाही ॥ सर्व विवेजन के मन माही ॥ २० ॥ प्रभु जे वहु प्रतिसत सरूप ॥ भान प्रयोग सतनाहि सरूप ॥ तो नि-
ह दर्शन साधन गाय ॥ सभी विप्र अर्थन कछु फल पाय ॥ २१ ॥ प्रभु होवे श्रवन मो तप्रसंगा ॥ दर्शन विन नाही भव भंगा ॥ देह छांनक-
रे पर हार ॥ या संका गुरु परम उदार ॥ २२ ॥ बहु अभ्यास सत यो हित गावे ॥ शिष्य संदेह सह सभी मिटावे ॥ सैंधव होइ उदक मो लीन ॥ ने-
नो कर न दिखलवे प्रवीन ॥ २३ ॥ यौंही अंतह करण न माही ॥ मिलयो आत्मा भासे नाही ॥ सप्रकाश कर सदा स्फुरणा ॥ पर जन
को न दिखे वेफुरणा ॥ २४ ॥ वाहर मुखवे इंद्रिय गण जेतो ॥ आत्म को न दिखे वे तेतो ॥ जल मो लीन लवन है जो ई ॥ रसना कर जन
जाने सोई ॥ २५ ॥ श्रोत ब्रह्म निष्ठ गुरु जोई ॥ प्रति श्रम चर्य जगत मो सोई ॥ तां उ कंठ कोधर उरमाही ॥ आत्म को देखे सभ माही ॥
२६ ॥ भूषण कंठ विवे जिउ होइ ॥ भूले तो दिज नावे कोइ ॥ तिउ ही आत्म को उपदेस ॥ पाइ सगल जन नरे केलेस ॥ २७ ॥ लवन उपा-
धि उदक न दिसे सोई ॥ तिउ पहि रूपन आत्म होई ॥ रूप निप्रारो तो सत रहे ॥ प्रणों ब्रह्म सनातन पये ॥ २८ ॥ या विध को सत ब्र-
ह्म सरूप ॥ तत्वमसी तज भ्रम तम कूप ॥ सतगुर को उपदेस दृजो ई ॥ संसार वंधनास करे है सोई ॥ २९ ॥ तो के दोस दिकारी हये ॥
शिष्य बुद्धि जिज्ञासा पये ॥ गोपम तो यहि श्रगट दिखावे ॥ अभ्यास सम मो सत न प्रनि गावे ॥ ३० ॥ देसो मनि उपुरुष धंग धार ॥ निजा-
त्र हसो यो कां ति अपार ॥ महारतन तो के गल माही ॥ कर कंकण कुंडल कन माही ॥ ३१ ॥ भुज अंगद पद नूपर पये ॥ या विध के
वहु भूषण हये ॥ चोरन जाय गहियो निश माही ॥ दूर देश ग्रारण्य वन माही ॥ ३२ ॥ वांधे कर पद नेन सवां के ॥ भूषण ला हिल-
ये सभ तो के ॥ उरग व्याघ्र को भय भारी ॥ क्षुधा तृषा तप जाय न वारी ॥ ३३ ॥ कंटक शिला समि धपर संगा ॥ लहे सहो दिवि दीर्ण
अंगा ॥ वंधन मुक्त उपाय न देखे ॥ अपनो देश सकि दवि धपेखे ॥ ३४ ॥ सोच करे वहु विध मन माही ॥ हाय हाय वोले सब मा-
ही ॥ तिउ ही रागादिक जेन सकर ॥ वांधल यो तो को अति वस कर ॥ ३५ ॥ विशुद्ध रूप को वांधे ते ई ॥ रागादिक भावे है जो ई ॥ ता-

तेनिज्ञानंदनहिभासे ॥ रतनहतनहतेतनमपरकासे ॥ ३६ ॥ निजस्वरूपतेदयोगिराय ॥ त्रितनुवनमोभरयोआय ॥ चौरासीला
खयोनिमोजाय ॥ जन्ममरणवहुविधकेपाय ॥ ३७ ॥ बंधनजांतेहोवेनास ॥ निजस्वरूपकोहोइप्रकास ॥ तांउपायकोपावेना
ही ॥ निशदिनशोचकरेमनमाही ॥ ३८ ॥ जिउकोपुरुषघटपाल्यावे ॥ तांकेसभवंधनछुटकावे ॥ गंधारदेशकोमार्गजोई ॥ तां
उपदेशकरेतेसोई ॥ ३९ ॥ सनेसनेवहुचलयोजावे ॥ ग्रामग्रामपुछनिजपुरपावे ॥ पूर्वजिउनिजघरमोजाय ॥ वहुसुखपा
वेसहजसुभाय ॥ ४० ॥ तिंहींतनुगुरुउत्तमपाय ॥ वंधनतेरोदयेछुडाय ॥ अनेकजन्मतेभूलेपाय ॥ तामोजेनेशुणमिलाय ॥
४१ ॥ तांकोपाछमभयोपुनिजवही ॥ ब्रह्मनिष्ठगुरुपायोतवही ॥ तांनेतोकोतत्वप्रकासयो ॥ वंधनतेरोतांनेनासयो ॥ ४२ ॥ आ
ज्ञानवंधनतेरेमिटगयो ॥ निहप्रपंचकोदर्शनभयो ॥ तांतांभूमीकरविसराम ॥ सवीजाहिनिजअपनेधाम ॥ ४३ ॥ शुक्रआ
पसंतब्रह्मस्वरूप ॥ तत्वमसीपरमार्गरूप ॥ जेसेअनतमनकोपावे ॥ क्रमकरकरणलीनहूंजावे ॥ ४४ ॥ सवलपतिजिउ
मरणकेकाल ॥ करणनीलसभहोहिविसाल ॥ वागादिकमनमेमिलजावे ॥ मनप्राननमोजायसमावे ॥ ४५ ॥ प्राणमि
लेपरमात्ममाही ॥ याविधसूक्ष्ममिलेसतमाही ॥ याविधपूर्वदेहत्यागे ॥ कर्मवासनावहुरोजागे ॥ ४६ ॥ तांतेऔरशरीरह
धावे ॥ दुःखवलहेतांतेपुनिभारे ॥ ज्ञानीकोक्रमऐसेहरये ॥ उतकोऔरप्रकारहृदये ॥ ४७ ॥ याहिसंदेहजांतेमिटजावे ॥ अभ्या
सघ्नहमोसतसतिगावे ॥ सतग्राममेलेंऐसोहरये ॥ वहुरोजन्मनज्ञानीलहे ॥ ४८ ॥ याक्रमकरसतपावेजवही ॥ मृत्युकोवं
चेज्ञानीतवही ॥ तांतेप्राणनकतहूंजावे ॥ इहांलीनसगलहूंजावे ॥ ४९ ॥ तांकोतेवहुवंचनकरे ॥ हेतप्रश्नमेगुरुउच
रे ॥ मरणप्रथमहीतत्वज्ञान ॥ पायहरयोभवमूलअज्ञान ॥ ५० ॥ प्रारब्धसोंधृतशरीर ॥ ऐसेहीउरधारोधीर ॥ मृत्युकोवंच
नहयेजोई ॥ मोसोकहोसगलभ्रमसोई ॥ ५१ ॥ मृत्युपाकोलेनेकोआवे ॥ कछुनपाकेततनेपावे ॥ सर्वब्रह्मरूपहूंगयो ॥
यहीमृत्युकोवंचनभयो ॥ ५२ ॥ मृत्युवंचेज्ञानीजिहपाय ॥ सोसतब्रह्मअवंडसभाय ॥ जोऐसोसतब्रह्मस्वरूप ॥ तत्वमसी।

मृतकदेहगतन्रूप ॥ ५३ ॥ इह ज्ञानी ग्याता नो होई ॥ जगतब्यवहारकरेंसमसोई ॥ खानपानमोहोयसमहूये ॥ शयनगमनमोभेदनपाये
५४ ॥ भोगदेहतकर्मसेहजहोई ॥ ज्ञानीकोनहिंबांधेतेई ॥ अज्ञानीकोंतेबंधनपावे ॥ आगेजन्ममरणदिखलावे ॥ ५५ ॥ याहिविवे
कभकारणकोन ॥ भावोमोहिग्रहेजगजोन ॥ संदेहउनकारणदिखलावे ॥ अभ्यासजतमोसनश्रनिगावे ॥ ५६ ॥ हेसोमनर
होभवमाही ॥ इकतसकरइकतसकरनाही ॥ तामोइकतसकरजोग्रहियो ॥ राजपुरुषमिलताकोगहियो ॥ ५७ ॥ सोपुत्र
तेइहैचोरपुकारे ॥ नाहंचोरचोरउचारे ॥ राजपुरुषइकपरशुतपाय ॥ नहीचोरतोलेहिउहाय ॥ ५८ ॥ यहिइकदृष्टांतपरीक्षा
हुये ॥ चोरअचोरयाहितेपये ॥ चोरभावउरमधउरावें ॥ कूटबोलकैपरशुउहावे ॥ ५९ ॥ प्रथमेजलेपरशुसोहाथ ॥ पाछे
बांधेसंगलसाथ ॥ यौंहीमूढमतीजोहोइ ॥ आत्मतत्वउरावैसोइ ॥ ६० ॥ चिदानंदसतब्रह्मस्वरूप ॥ ऐसोहैनिजआत्मरूप ॥
यहिनिजब्रह्मउरावनग्रहे ॥ नाहंब्रह्मयुवोजउकहे ॥ ६१ ॥ देहादिकअनात्मरूप ॥ तोंहिबतावेआत्मरूप ॥ प्रथमसृष्टते
पीडापावे ॥ यहीदाहसमकोविदगावे ॥ ६२ ॥ बहुरोश्रोरतनुकोधारे ॥ संगलसमउडसोइउचारे ॥ अहंजोनिहचेहोइअ
चोर ॥ राजपुरुषभावेतिहचोर ॥ ६३ ॥ नाहंचोरकरेसुखमाही ॥ बहुरोपरशुगहेकरमाही ॥ दाहनताकोरंचकहोइ ॥
जातेसमसंधहैसोइ ॥ ६४ ॥ राजपुरुषनहिंबंधनपावे ॥ उलटेसमीतमाकरावे ॥ अरुराजातिहक्षमाकरावे ॥ परभूषण
तिहभेटचढावे ॥ ६५ ॥ हमअपराधीभूपतिग्रंथ ॥ क्षमाकरोतमहेसतसंध ॥ यौंहीनिजआत्मदृढमान ॥ त्यागेदेहादिकअ
भिमान ॥ ६६ ॥ योसतसंधजगतमेजोई ॥ मृतकतेपीडालहेनसोई ॥ मायाकोजानेजगजोई ॥ मापिकथाज्ञुरहेनसोई ॥ ६७ ॥ दाह
बंधसंकाकछुनाही ॥ ब्रह्मादिकसमपूजेताही ॥ सोसतब्रह्मकेनिहचेभये ॥ ज्ञानीकेसमबंधनगये ॥ ६८ ॥ सतअनंदब्रह्म
हैजोई ॥ ताकमसीसेतनहिकोई ॥ जन्ममरणबंधननहिकोइ ॥ आत्ममरेनजामेसोइ ॥ ६९ ॥ उद्दालकतेयोंसुनिउपदेस ॥
श्वेतकेतसभहरेकलेस ॥ अज्ञाननष्टताकोहुइगयो ॥ आपब्रह्मकोआपभयो ॥ ७० ॥ अहंब्रह्मतिनमुखोउचारयो ॥ गुरुउ

परेसभलीविधिधारियो ॥ उपचारकपटतविविवेनहिवने ॥ नवअभ्यासजोसतनप्रतिभने ॥ ११ ॥ तांतेमततमसोआलेउ ॥ भावभेद
मीमैदेंदउ ॥ ननुनवपकअलेउदृगायो ॥ इहवाक्यकछुओरदिखायो ॥ १२ ॥ यतोवाइमानिभूतानिजायंते ॥ येनजातांनि
जीवंतीसासिवाक्यानिरहूवाक्यानि ॥ १३ ॥ चौपई ॥ जोतिभूतप्रगटपहिभये ॥ तीनभवनपुनिजांनिरमये ॥ सोईब्रह्मउपउरा
धार ॥ पालैपोषुनिकरेंसहार ॥ १४ ॥ जगतादिकतैहकर्मदिखाय ॥ ब्रह्मसत्ताकेकर्तागाय ॥ याविधजगतवशिहहिभयो ॥ ब
ह्मअलेउअर्थनवगयो ॥ १५ ॥ उपजावनपालनसंहार ॥ लछणतास्तिनटस्थहिधार ॥ पहितीनोतिरूष्टहदिखावें ॥ कछुआ
संसर्गनतामेगावें ॥ १६ ॥ यापरएकनिदर्शनसार ॥ सावधानउरधरनरधार ॥ जिउसेनाइकदैरहोउ ॥ तांकोदेखशत्रुहैका
र ॥ १७ ॥ यासेनामोनरपतिकोन ॥ कहोप्रगटमुहिदृयेजोन ॥ राजअभिलपुरुषउचारे ॥ पूजाकेसभमंसेदारे ॥ १८ ॥ मन्नमा
तेगपीदपेजोर्ई ॥ यासेनामोनरपतिसोई ॥ भक्तजालीमधप्रदेश ॥ ससिनिभछत्रछायापाटेश ॥ १९ ॥ निजआभरणकरा
प्रभाअपार ॥ जांकेजसछायोसंसार ॥ तीनभवनकोतिलकसरूप ॥ यौंभूपतिकोभालयोरूप ॥ २० ॥ नवप्रज्ञानेभूपा
तिदेखयो ॥ सगलमागमुडकेपेखयो ॥ सगलराजादिकभावेजेते ॥ नहिप्रज्ञाकछुप्रछेतेते ॥ २१ ॥ वक्तानेजोपुरवलेगा
ए ॥ नरपतिपरचेहेनदिखाए ॥ नासपैनहिताकेमाही ॥ एकजनावेनरपतितांही ॥ २२ ॥ ननुकेवलनरपतितिहभान
केसेलोहिकीयोअनुमान ॥ जांतेओरकालकेमाहीं ॥ ओरप्रकारदेखहेताही ॥ २३ ॥ नावनलगोम्हरसरीतीर ॥ सगलउ
ओरअपनेचीर ॥ तांकोदेखकहेमनमाही ॥ सोनरपतिनावेजलमाही ॥ २४ ॥ यहिप्रतिभिन्नाजातेहोइ ॥ तांतेमुडदेखहै।
सोइ ॥ तिउहीब्रह्ममुडनरभान ॥ कर्ताकर्मनकहतान ॥ २५ ॥ ब्रह्ममाहिनाहीकछुभेद ॥ उक्तियुक्तितेअहेअभेद ॥ जीव-
ब्रह्मकरभालेवेद ॥ तांतेजीवब्रह्मअभेद ॥ २६ ॥ विनालछणाहोवेनाही ॥ तांतेसोहैयाकेमाही ॥ कौनलछणाकहेअ
भेद ॥ महावाक्यनाहीकछुभेद ॥ २७ ॥ ननुकाहेअभेदवखानो ॥ महावाक्यकीगतनहिजानो ॥ अभेदवखानेपुरवलेजोर्ई ॥

सादृशापरयपहिचानोसोई ।। ८७ ।। निरंजनपरमसामकोलहे ।। शुक्लशुकृषशिवकेसमग्रहे ।। याविधश्रुतिस्मृतिहैजेजे ।। ब्रह्म
समानकहेतिहतेनी ।। ८८ ।। निरंजनःपरमसाम्यमुपैतीत्यादिश्रुतेः ।। शुक्लःशिवसमोभवेदितिस्मृतेः ।। नतब्रह्मसमानजीव
नहिहोई ।। केसेवेदवखानेसोई ।। साचककोनहिब्रह्मसमान ।। परसिद्धरूपजोहोवेभान ।। ८९ ।। नयपिपकरूपोनरहये ।। ब्रह्म
समानवहीमनपये ।। ब्रह्मसमानरूपोतरजोई ।। तांकोभानकहूंतोनहिहोई ।। ९० ।। संसारीरूपग्रह्लादयोसोइ ।। तांनेतांहिलवे
नहिकोइ ।। शुक्लकालप्रतिबंधकनाश ।। नवहोवेवहुरूपप्रकास ।। ९१ ।। निरदुःखादिब्रह्मगुणजेते ।। तांहिविलिपयेसभतेते ।।
नमरकीजेगोगीहूनि ।। सोहोवेनामोग्रनुहूनि ।। ९२ ।। तानेब्रह्मसदृशानेग्रहे ।। ग्रैसेननमसीतिहकहे ।। ग्रैसकोइककरेव।
खान ।। मननांकोग्रवहोवेहान ।। ९३ ।। पकशसिद्धजीवकोरूप ।। हसरब्रह्मकहयोग्रनूप ।। इनदोनोतेनिश्चयहोइ ।। संसारीरू
पग्रह्लादयोसोइ ।। ९४ ।। ब्रह्मसमानहितीटकजोई ।। जीवरूपतिहमाननकोई ।। नहिप्रमसहितीकोहोई ।। नहियनुमानस।
तामोकोई ।। ९५ ।। नहियरहूनिजवेदवखाने ।। उलटोतांहिनिषेधहिठाने ।। इनतेग्रमनरूहपाहये ।। पांतेभिन्ननश्रोतापये ।। ९६
ग्रात्मब्रह्मभेदग्रसम ।। तांकोकोनकरेजगसम ।। याविधश्रुतिस्मृतिहजार ।। भेदनिषेधेवारंवार ।। ९७ ।। ब्रह्मसमानरूपतर।
जोई ।। सर्वेसिद्धनहयेसोई ।। विनुश्रमानत्वरसीगसमान ।। कोनसकेग्रवतांहिवखान ।। ९८ ।। ननुशुक्लकालमोउपजेसोई ।। ब्रह्म
समानरूपहेजोई ।। तांमोमानग्रथमदिखलायो ।। शुक्लशुकृषजवशिवसमगायो ।। ९९ ।। भावीहोवेवहीस्वरूप ।। नत्वमसीभा।
वेश्रुतिरूप ।। केचितग्रैसेवाक्यलगावे ।। तांकेमतमोहूत्वनग्रावे ।। १०० ।। भावीरूपभावयोजोई ।। उपदेशसमेनहिपयेसोई ।। नत्व
मसीकेसश्रुतिगावे ।। ननभविष्यसिपोदिखलावे ।। १ ।। श्रुतिस्मृतिमोसमपरजोई ।। कहेग्रभेददुहूकोसोई ।। नतुसमपरग्रहे
जगतमोजोई ।। सादृशपतावखानेसोई ।। २ ।। ग्रसनहिनेमजगतमोग्रहे ।। समपदसादृशहीकोकहे ।। समतीर्थमोदोनोवा।
सी ।। समानउदरमोभयेनिवासी ।। ३ ।। इनदोनोकीसमहेजाति ।। समगोत्रसमकुलविख्यात ।। इत्यादिकदृष्टांतघनेरे ।। ग्र।

भेदप्रथहीसमपददेखे ॥ ४ ॥ श्रुतिवखानीसमपदजोई ॥ भेनप्रभेदद्वैदैकोसोई ॥ तांकेप्रथमभागमोकहियो ॥ दृष्टांतनदी
सागरकोगहियो ॥ ५ ॥ जिउंनदीग्रांसागरमोजावे ॥ भेदमागप्रभेदसमावे ॥ अपनोनामअरूपसभखोइ ॥ सागरमोइकसाग
रहोइ ॥ ६ ॥ भ्रवंभीनेसागरअरूप ॥ जलधरकरपापोवहुअरूप ॥ ततीयप्रभ्यासविवेयहिकथा ॥ जिउंकीतिउभाखीममतथा ॥
७ ॥ भेदनिषेधकश्रुतिहजार ॥ स्मृतिकोकछुवारनपार ॥ तांतेसारदशाकोनहिगाय ॥ महावाक्यप्रखेइहिखाय ॥ भईलख
णाघाकेमाही ॥ विनालखणाभाखेनाही ॥ ननुप्रखेइग्रथंजोभाखयो ॥ सतग्रहेमिथ्यानहिग्राखयो ॥ ८ ॥ पदजोकहीलः
खणायामो ॥ सोग्रसत्यनहिग्रावेतामो ॥ बाधसमानाधिकरणहिमान ॥ वाक्यग्रखेइकहेपहिचान ॥ ९ ॥ स्याणहोइचोरस
मभान ॥ नरहेदेहीवेभयमान ॥ स्याणग्रभितकरेउपदेस ॥ काहूकोतलहेकलेस ॥ १० ॥ चोरग्रयेतस्याणहृथे ॥ ताविनचो
रनंशंविकपये ॥ तसकरकोकरकेग्रनुवाद ॥ स्याणविधिकीनीनिरवाद ॥ ११ ॥ चोरवाधलामोद्वइगयो ॥ पकग्रखेउस्याण
भयो ॥ तिउंहीमहावाक्यमोजानो ॥ इककेबाधग्रखेउपछानो ॥ १२ ॥ समानाधिकरणबाधमोमान ॥ योकेचितजगकरेवखा
न ॥ सोग्रसत्यनहियोकेमाही ॥ ततमसीभाखेतिहनाही ॥ १३ ॥ कहोबाधइनदोनोमाही ॥ कोकोहोइकोहिकोनाही ॥ उ:ख
हीनग्रनंदस्वरूप ॥ ब्रह्मएकयुरुषार्थरूप ॥ १४ ॥ तांहीकोतमबाधवखानो ॥ उ:खीजीवपरिशेखहिमानो ॥ वेदोरससभभा
षोग्रर्थ ॥ कछुनताहिजानायोग्रर्थ ॥ १५ ॥ जोतमजीवहिबाधवखानो ॥ मोखकहोतवकोकोहानो ॥ जोनेग्रपनोदेखेनास
तांतेसभजननेहाहिग्रास ॥ १६ ॥ घटिहैनेमजगतकेमाही ॥ तांव्यभिचारदेखयोनाही ॥ मोखवखानेशास्त्रजोई ॥ जांमोनहिग्र
हनेकोई ॥ १७ ॥ बलहोहेषकरेनामाही ॥ नाशकमाहियहीभवमाही ॥ ननुनाशकभवभीनरग्रपि ॥ सतीहोइनाहीमोमगति
१८ ॥ तांतेनेमश्रुतमारोजोई ॥ हैव्यभिचारीसमनसोई ॥ सत्यनेमव्यभिचारनकोइ ॥ नाशकनारिखखेनहिसोइ ॥ १९ ॥ विनुभा
नोसोईउ:खरूपे ॥ नाशकवहीनारिउरपये ॥ तांहीनेवहुग्रनिभयपावे ॥ पावकोमनमुखचलग्रावे ॥ २० ॥ खणाभग्ररदेहा

मो
तृ
प
५५

करौमैनास ॥ जायगहोंभरतरकोपास ॥ याविधदेहनाशनहदेखे ॥ अपनोनाशनतोंमोपेखे ॥ २२ ॥ याहीतेपैठेतामाही ॥ है।
षनकरेमताकेमाही ॥ तातेमत्यनेमवह्नअहे ॥ तांव्यभिचारनकोईलहे ॥ २३ ॥ याविधऔरमतनकेमांहि ॥ हूवनगनकछुगने
नजांहि ॥ दोषहीनयेजैहेजोई ॥ हृढवखानेशंकरसोई ॥ २४ ॥ नतुवह्मकोनपंथभवअहे ॥ जाकोप्रगटआचार्यकहें ॥ श्रुतिसी।
मतिमणीकेमाहि ॥ प्रगटलक्षणमानीताहि ॥ २५ ॥ नतुलक्षणपक्षउचारयो ॥ अधिकसंदेहविलेशुहिशरयो ॥ गंगामाहि।
दोषइकहूये ॥ याविधजहतस्वार्थपये ॥ २६ ॥ उतपहीकोकरोप्रवेश ॥ भईअवेरनलहेकलेस ॥ अजहतस्वार्थयाविधहूये ॥ ।
तोविशिष्टअर्थीतरलये ॥ २७ ॥ अथवारेवदन्नपहिसोई ॥ याविधभागत्यागहहोई ॥ याविधकोइकअहेसंदेह ॥ तमैनिवेदि।
योकहणगेह ॥ २८ ॥ जौतमभागत्यागहिमानो ॥ तौइकऔरसंदेहपछानो ॥ सोकियाहैनत्पटकेमाही ॥ अथवाकेवलत्वंप।
दमाही ॥ २९ ॥ अथवाउभयविवेवह्नहूये ॥ द्वितीयसंदेहस्तयाविधपये ॥ त्रिकदोनोमेंअंतमसार ॥ यहीसमउरअंतरधार ॥ ३०
तीरसमानततीयनहिकोइ ॥ जहतीसोकह्नकैसेहोइ ॥ विरुद्धविशेषणकेअनुरोध ॥ हैअजहतीमाहिविरोध ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ दो
नोकेपरिहारनेभईतीसरीजान ॥ भागत्यागवखानयेनीकेतांउरमान ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ सोनहिकेवलतत्पदमाहि ॥ तैसेहीत्वंपद।
मोनाहि ॥ जिउनाहीतिउकहोप्रकार ॥ निरविरुद्धउरअंतरधार ॥ ३३ ॥ तत्पदअर्थअहेचिदजोई ॥ तोहित्यागकरेजेकोई ॥ केवल।
जडपरिशेषहिहोइ ॥ चेतनजीवअभिन्नसोइ ॥ ३४ ॥ गहेजेताकोचेतनभाग ॥ केवलजडकोकरेत्याग ॥ तौविशिष्टजीवहै।
जोई ॥ तांसोशुद्धमिलेनहिसोई ॥ ३५ ॥ नतुजीवमांहिचेतनताजोई ॥ तांसोशुद्धमिलेगो सोई ॥ एकदेशअन्वयपुनिहोई ॥ तौ।
थ्येकारनिषेधेसोई ॥ ३६ ॥ पदार्थःपदार्थेनैवान्वेति ॥ नन्नपदार्थेकदेशेनइति ॥ त्वंपदअर्थविवेयहिरीति ॥ शुधीविचारधरे।
निजचीत ॥ तातेउहांमाहिवह्नअहे ॥ भागत्यागसुधीउरगहे ॥ ३७ ॥ सोरठा ॥ यहिमगलीशुनिरीत ॥ श्रीशंकरनिजमुखकही ॥ अ।
वनिरधारोचीत ॥ दोषरहितसमकोसदा ॥ ३८ ॥ चौपई ॥ नतुरसीरीततमभाखीजोई ॥ शंकरकहावखानीसोई ॥ वाक्यवृत्तिमे

भाखीसोई ॥ रीतसगलसंसैनहिकोई ॥ ४९ ॥ तथाचतन्नाक्यं ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्येषुलक्षणाभागलक्षणा ॥ सोयमित्यादिवाक्यस्था।
पदयोरिवनापरा ॥ सवैया ॥ जिनकेपदपंकजलोकभजेग्रहदेवनकेउरूखजांहिनिवारे ॥ कमलासनसेवतजांहिसदाग्रहशो।
करजांपदकंजचितारे ॥ जगजांहिग्रचारउदारसदाग्रहधारनहींभवबंधनडारे ॥ ग्रजनंदनकोसननामवहीगुणपंकजनेय।
हिरीतउचारे ॥ ५० ॥ तथाचतन्नाक्यं ॥ एकालकत्वातजहतीनसंभवेनयाजहल्लक्षणानाविरोधतः ॥ सोयंपदार्थौविवभागला।
क्षणा ॥ युज्येततत्वंपदयोरदोषतः ॥ चौपई ॥ जहांजहांविरोधीजेतो ॥ सधीत्यागेसगलेतेतो ॥ नेतिनेतिकरसगलनिवारे ॥ तत्प
दग्रर्थशुद्धनिरधारे ॥ ५१ ॥ नाहिपरमाणनाहिस्थूल ॥ कार्यनांहिनतांकोमूल ॥ याविधतांविनुदृश्येजोई ॥ तांहिनिषेधलखो।
शुद्धसोई ॥ ५२ ॥ ननिषेधहाराशुद्धज्ञान ॥ लोकविखेनहिदोवेभान ॥ यहिनहिग्रहपुनियहिनहिदोई ॥ याविधशुद्धलखेनहि
कोई ॥ ५३ ॥ निषेधहाराशुद्धज्ञान ॥ जिहविधहोइसकरोवखान ॥ जिउंकोमहाराजभवमाही ॥ वेठेजायवगीचेमाही ॥ ५४ ॥
सबसमानपुरुषबहुतेरे ॥ चारोग्रोरहेंतिहचेरे ॥ छत्रचांमरबहुप्रकार ॥ ढुलेचफेरावारंवार ॥ ५५ ॥ कोइकवालकजानेना।
ही ॥ महाराजकोपावनमाही ॥ नरपतिकोतातानरजोई ॥ तांसोपूछेवालकसोई ॥ ५६ ॥ भूमंडलपरजाप्रतिपाल ॥ राजाको
नकहोयुदिदपाल ॥ उत्तरकोटातानरजोई ॥ निजमनमाहिविचारेसोई ॥ ५७ ॥ जोग्रागेसोनरपतिहूये ॥ ग्रैसोउत्तरयाहिनप
ये ॥ जोग्रैसेमैंकरौंवखान ॥ वालकलपग्रौरकोमान ॥ ५८ ॥ यहिग्रतिमूर्खनांहिनजाने ॥ किहविधनरपतिकोपहिचाने ॥
योविचारउत्तरबहुभावे ॥ ताविनग्रौरहरकरिनावे ॥ ५९ ॥ नहिहुमग्रसगजादिकजेते ॥ रथपादातीग्राहिनतेते ॥ ग्रायुधहीं।
नस्यंदलपास ॥ नरमैनहिनरपतिकीग्रास ॥ ६० ॥ नरीनछत्रचांमरहोई ॥ जिनकरकंजननरपतिसोई ॥ ताकेमध्यवधूगाजे।
तो ॥ नरपतिनाहिपछानोतेतो ॥ ६१ ॥ नीलकंचुकराजानहिहूये ॥ कंचुकपीतनयानहिपये ॥ चित्रपटीनयामोग्रहे ॥ ग्रहनहि
स्वर्णाखड्गकोगहे ॥ ६२ ॥ स्वर्णाधनुषजांकेकरमाही ॥ यानरमैनरपतिसोनाही ॥ याविधमहाराजविनजेते ॥ सगलनिषेधेवा।

ज्ञाते ते ॥ ५३ ॥ परिशेष रहयो ना सो नर जोई ॥ नरपति बालपछानयो सोई ॥ सब वर्ण वर्ण अरु गौ हे जांके ॥ बहुविध भूखण सो भा-
वां के ॥ ५४ ॥ चोंमर चार औरा रे ते फिरे ॥ हंस समान श्वेत ता धरे ॥ वारवधू कर के जन मांहि ॥ चोंमर फिरे सी सभ लि जो हि ॥ ५५ ॥ सो
दृग के ज प्रभा को हेरे ॥ भुज भुजंग सा रना धरे ॥ धर्मरूप राजा जग मांही ॥ बालक जे यों धारे उर मांही ॥ ५६ ॥ अनंतर याहू त्रिक
वाक्य सु जोई ॥ वक्ता जन ना वैंते से तोई ॥ अरु पुनि विध पुलव वाक्य रह जार ॥ श्रोता जन ता वे वारं वार ॥ ५७ ॥ जिन के जाने सर्व ज्ञान ॥ नि-
जगुरु वशु तिकरे सवखान ॥ सत अरु चेतन अनंद रूप ॥ है परमात्म सर्व अनूप ॥ ५८ ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ भयो भ्रम माही व रे जो-
हमारे ॥ तिने लक्षणं ब्रह्म के शोउ चारे ॥ भली रीत सो जा ध माही प्रकासी ॥ सदा सच्चिदानंद सत्ये प्रणासी ॥ ५९ ॥ चौपई ॥ याविधि
निखिल अनात्म टारे ॥ तम पट लक्ष सदा निरधारे ॥ सदानंद परिपूर्ण जोई ॥ तम पट लक्ष पछानो सोई ॥ ८० ॥ अरु पुनि त्वंपद अ-
र्थ सु जोई ॥ याही विधसो ये नर सोई ॥ नहि य हि देह न इंद्रिय रूये ॥ नहि पुनि प्राण मनो नहि पये ॥ ८१ ॥ विज्ञान कोश आत्म-
नहि जानो ॥ आनंद कोश न आत्म मानो ॥ चित अहंकारादिक सभ जे ते ॥ आत्मना हि पछानो ते ते ॥ ८२ ॥ यो अनात्म रूप सु जे तो ॥
सभी त्यागे सगलो ते तो ॥ जिह विध ते नहि आत्म होई ॥ द्वितीय निवासक ही विध सोई ॥ ८३ ॥ देहादि वर्ग प्रकाशक जानो ॥ एक अ-
संग अक्रिय मानो ॥ अकर्तापाप रहित चिद रूप ॥ भोग हीन निज आत्म रूप ॥ ८४ ॥ प्रत्यक बोध सनातन सार ॥ त्वंपद लक्ष सदा निरधा-
र ॥ मनो बुद्धि साक्षी चिद जोई ॥ त्वंपद लक्ष पछानो सोई ॥ ८५ ॥ याविध लक्षण लक्ष विचारे ॥ भली प्रकार चित्त मे धारे ॥ लक्षण को पु-
नि चित्त मे करे ॥ विरोध अंश का को परिहरे ॥ ८६ ॥ प्रत्यक बोध अद्वै चिद जोई ॥ अद्वयानंद पछानो सोई ॥ अद्वयानंद अद्वै चिद जोई ॥
प्रत्यक बोध पिखो उर सोई ॥ ८७ ॥ याविध को चित्त मे है जोई ॥ वाक्य वृत्ति मे भाखे यो सोई ॥ कौनैं वाक्य मे भाखे यो सोई ॥ तीनी ये श्रु-
द्र वाक्य हे जो अ ॥ ८८ ॥ तथा च तत्र वाक्यं ॥ प्रत्यक बोधो य आभाति सो अद्वयानंद लक्षणः ॥ अद्वयानंद रूपश्च प्रत्यग्बोधैक लक्षणः ॥ चौपई ॥
याविध कीनो चित्त मे जब ही ॥ हो य अखंड अर्थ पुनि तब ही ॥ याविध वाक्य विचारे जोई ॥ दृढ विज्ञान तांहि को होई ॥ ८९ ॥ अखंड ब्र-

योउपजेज्ञान॥सोईकरेसगलभवहान॥त्रिविधभेदसभहूरविनासे॥जीवब्रह्मअभेदप्रकासे॥७०॥जीवईशभेदथोजोई॥इहांनिरा
सभयोअवसोई॥अखंडअर्थकोलक्षणाजोई॥अगटवखानोसुनियोसोई॥७१॥कवित॥संसर्गतेजोहीनवाधहीनधीनकाहूकेन
वाक्यमेअखंडअर्थसोईमानीयतुहै॥महतजोप्रकाशहैप्रकाशमेसभाससससिओरसभत्यागविधुतांहिजानीयतुहै॥प्रकर्षा
ओप्रकाशजातिधर्मतेउदासनहियोग॥भेदभासकछुशब्दयोह्मानीयतुहै॥चंदकोअज्ञानकोनचंद्रमाप्रमाननहिओरकछु
कामजोविवादहानीयतुहै॥७२॥चौपई॥जिउकोदेशनिवृत्तउसारे॥वहूरोसुवतेनशब्दउचारे॥कोनचंदहैयांकेमाही॥चंद्राभित्त
उचारेनांही॥७३॥प्रकष्टप्रकाशचंद्रमाहुये॥ताविनओरनकोविधुपये॥चंद्रमभित्तउचारयोजवही॥चंद्बोधभयोतिहतव
ही॥७४॥अखंडशशीकाहोवैवोध॥कछुसंसर्गनहिदेखोसोध॥प्रकर्षप्रकाशादिकहैजेते॥अष्टाकोइनप्रछेतेते॥७५॥
वक्तासुवनेकीनउचार॥चंदपरचैहितनिरधार॥तांतेहोइअखंडज्ञान॥नहिसंसर्गहोइकछुभान॥७६॥तिउंहीब्रह्मअखं
डज्ञान॥उपजेकरेसगलभवहान॥सगलअनर्थअविद्याजोई॥ज्ञाननाशयपहिचानोसोई॥७७॥जवीभयोअखंडज्ञान॥तवी
अविद्याहोवेहान॥तांकोनाशभयोपुनिजवही॥वंधनमुक्तिहोइनरतवही॥७८॥तंनुकर्मकरेनरहोवेमुक्ति॥तांहितकह
हीज्ञाननिरुक्ति॥वंधहानकरमतेकैसे॥प्रगटवखानोहोवैजैसे॥७९॥कामकरमकोनहितनरकरे॥करमनिषिधनत्या
परिहरे॥नित्यनिमित्तकर्महैजेते॥विधवतकरेसगलनरजेते॥८०॥कामकर्मफलदेवशरीर॥तांहीतेनहिपावेधीर॥फा
लनिषिधनरकादिकजेते॥करेपरिहारलहेनहितेते॥८१॥देहआरंभकजेतोकर्म॥धर्मकिधोपुनिहोइअधर्म॥सुखअरु
दुःखफलकोउपजाइ॥देकरभोगनष्टहुइजाइ॥८२॥निष्कर्मकोसेवेजोई॥अधमपापकछुहेनहिकोई॥सर्वकर्मकोभा
योविनाश॥सहजसुभाइमुक्तिप्रकाश॥८३॥पाविधकर्ममोतकोंकरे॥अर्थज्ञानकाहेउरधरे॥वस्तुविचारकरेजेकोई॥ता
नविखेप्रमाननकोई॥८४॥जेतोवेदअहेभवमाहि॥स्मृतिसहितपुराणसमाहि॥सोकर्मनकोकरेविधान॥वारंवारसुखउर

मान ॥ ७५ ॥ तैं उ प्रमाण प्रमाव उचारियो । भली प्रकारन वेद विचारियो ॥ या मैं तैं रोहीं उपगाधु ॥ नै हिन हिय अर्थ प्रलाप उप्रसाधु ॥ ७६ ॥
यत्न सहित मैं वेद विचारयो ॥ स्मृतिको बहु विध हित निहारयो ॥ ज्ञान विधान करे न हिको ई ॥ औ रवि विविश्वास न होई ॥ ७७ ॥ विना
विधान प्रवृत्त ने जोई ॥ ज्ञान विवि मूर्खि है सोई ॥ भस्म माहि ज्यो हुती जैसे ॥ तो हि प्रवृत्ति ज्ञान मोनै से ॥ ७८ ॥ वेदार्थ वित्त जैमिन जोई ॥ भा
खयो कहो सुनो अब सोई ॥ अमनाय सगल है क्रियार्थ ॥ क्रिया विना सो सगल निरर्थ ॥ ७९ ॥ ऐसे जैमिनि करे उचार ॥ वेद व्यास
वेदांत हि धार ॥ करवन कर्म सदा भव माही ॥ जीवे शतं वर्ष जग माही ॥ ८० ॥ ऐसे मंत्र वर्ण उचारे ॥ निखिल प्राणु कर्मन मो डारे ॥
गीता माहि कृष्ण प्रभणाई ॥ जनक सिद्ध कर्मन ते पाई ॥ ८१ ॥ ता ते कर्म करे कल्यान ॥ या गेनां हिव देभव हानि ॥ यो मीमांसिक को
लेवैन ॥ सगल पछानो हृदवने ऐन ॥ ८२ ॥ चार प्रकार क्रिया फल जेतो ॥ मुक्ति मांहि पाये नहि तेतो ॥ अज्ञान हान ते मो तप छानो
कर्मन साधन तां के मानो ॥ ८३ ॥ कर्म अज्ञान दूर नहि करे ॥ तम जिउं तम को नहि परिहरे ॥ अविद्या जम बंध है जोई ॥ कर्म दूर नै
तां को नहि को ई ॥ ८४ ॥ या हि विवेक दृष्टांत उदार ॥ नीके ही उर अंतर धार ॥ रज्ज अज्ञान सर्प उपजायो ॥ तां को देख बहुत भय पा
यो ॥ ८५ ॥ सर्प नाश उपाय वीचार ॥ देव मनाप वारंवार ॥ मंत्र को बहु विध हू उचारे ॥ विधवत औषध तां पर डारे ॥ ८६ ॥ हो कर
जोर करे प्रणाम ॥ अथवा जाव चारो धाम ॥ तौ वहि सर्प नष्ट नहि होवे ॥ बहु दुर पावे तां को जोवे ॥ ८७ ॥ तलाविया हेतक जो
ई ॥ सर्प कर्म तिह दूर नेन को ई ॥ मूलाविया हेतक जोई ॥ बंध कर्म तिह दूर नेन कोई ॥ ८८ ॥ कर्म सगल भव बंधन टारे ॥ यहि
कूटी है भ्रम रूप प्रपारे ॥ जब ही होवे रज ज्ञान ॥ तब ही मिटे तां को अज्ञान ॥ ८९ ॥ रज्ज अज्ञान कार्य है जेतो ॥ अहि कंपादि सगले
हि तेतो ॥ क्रम कर मिटे लखे सभ कोई ॥ और उपायन तां को होई ॥ ९० ॥ तिउं ब्रह्म को ज्ञान ॥ नष्ट होइ पुनि तिह अज्ञान ॥ बं
धादिक अनर्थ सजेते ॥ मिटे सगल तां ते पुनि तेते ॥ ॥ अरु पुनि मो वजनक है जोई ॥ कर्म श्रुति मुखे कहे न कोई ॥ नित्य कर्म
पापन को हरे ॥ काम कर्म स्वर्गादिक जने ॥ ९१ ॥ या विध कर्म जहां लो जेतो ॥ स्व स्व फल उपजावे तेतो ॥ सो फल देह विना नहि व

ने ॥ तांतेकर्मदेहकोजनेने ॥३॥ याविधवंधहेतजेकर्म ॥ मुक्तिहेतभावेकरिभरम ॥ अरुपुनिकर्मजनमफलजोइ ॥ त्रह।
समनाशीजानोसोइ ॥४॥ कर्मजन्ममोक्षजोहोई ॥ नष्टहोइगीनिहचेसोई ॥ अरुपुनिसंचितकर्मअपार ॥ क्रियमानसमेउ ३२
धार ॥५॥ वहुपुनिदेहअनेकसरीर ॥ मुक्तिकहोकिउहोवेधीर ॥ अरुपुनिएकएकदेहजोई ॥ कर्मवहुतनतनदेवेसोई ॥६॥
कार्तिकपूर्णमासिजवही ॥ कृतिकायोगहोइपुनिनवही ॥ तांदिसमेपुहदेवेजोई ॥ सतजन्मपुनिपावेसोई ॥७॥ होवे।
ब्राह्मणधनहिअपार ॥ चारिवेदकोपावेपार ॥ अरुपुनिब्राह्मणमारेजोई ॥ एतेजन्मलहेनरसोई ॥८॥ कूकरसूक।
रखरकोपाइ ॥ उष्ट्रगोवकरीहरजाइ ॥ भेउमृगअरुखगहिंचंडाल ॥ याविधलहेजन्मकीमाल ॥९॥ योस्मृतिनेभा।
खयोजोई ॥ यहेसमझूठोनहिसोई ॥ कर्मकरेनरहोवेमोक्ष ॥ यामेअगटदिखायेदोष ॥१०॥ ज्ञानविवेकप्रमाणनको।
ई ॥ यहिभाखयोसाचोनहिसोई ॥ स्मृतिवेदअनेकपुराण ॥ ज्ञानविवेसगलेप्रमाण ॥११॥ ब्रह्मवेदब्रह्महीहोवे ॥ ता।
नहूनेकेवसपहजोवे ॥ याविधवेदकेरसउचार ॥ साधकज्ञानप्रमाणउदार ॥१२॥ अरुपुनिमोक्षकहियोफलताको
कर्मनसाधनमानोवाको ॥ गीतामाहिअगटभगवान ॥ अर्जुनप्रतिभाखयोहेज्ञान ॥१३॥ उद्धवकोयकादशमाहि॥
तांहि ॥ याहिविवेसंसेकछुनाही ॥ कहूंकहूंजोकर्मउचारयो ॥ चित्तशुद्धहेतनिरधारयो ॥१४॥ वस्तप्रमाणअ।
धीनज्ञान ॥ विधानाभावसहतांतेजान ॥ पुरुषअधीनजगनमोजोई ॥ पाकसमानविधीजेसोई ॥१५॥ अरुपुनिजैमि।
निभाखयोजोई ॥ तेतांअर्थनज्ञानयोकोई ॥ क्रियाप्रधानवेदहैजेतो ॥ क्रियाअर्थवखानेतेतो ॥१६॥ ऐसेजैमिनिपु
खोउचारे ॥ ऋग्वेदसमवेदेतनधारे ॥ गोपमनोजोवेदउचारे ॥ तांकोकोइकपुरुषनिहारे ॥१७॥ कर्मवखानेवेदस
जोई ॥ आत्मजिज्ञासाहितसोई ॥ भलीप्रकारविचारेजोई ॥ कर्मपरायणवेदनकोई ॥१८॥ निजआत्मकोदर्शन।
साय ॥ तांहितवेदनिखिलनिरधार ॥ ज्ञानकेसाधनहैभवजेते ॥ वेदविधानकरेसभतेते ॥१९॥ तांमहनिजगतमो

जो ई ॥ भस्म आहूती तस्स न सोई ॥ जो तम तं को ताम्र मकहो ॥ याग प्रवृत्ति तया पुनि लहो ॥ २० तां को जे फल स्वर्ग अपार ॥ पा
को ज्ञान फल हि निरधार ॥ ज्ञान विवेक प्रवृत्ति निमानी ॥ तां मोह त्यव न देहि अज्ञानी ॥ २१ मैं अवर्णो व लानी जो ई ॥ मंद मती पै जानो
सो ई ॥ ज्ञान रके से करहे संन्यास ॥ श्रुति कर्म ते होइ उदास ॥ २२ जां दिन उपजे दृढ वैराग ॥ तां ही दिन होवे वड भाग ॥ परमहंस
सभ कर्म न डरे ॥ भवसागर के तां वे पारे ॥ २३ जनक सिद्ध कर्म न ते पाई ॥ इक मणी पति पांडव पति गाई ॥ सो वह सिद्ध न
मो लव पछानो ॥ चित्त शुद्धि उर अंतर आनो ॥ २४ कर्म करे बंधन को हान ॥ को इन याहि विवेक प्रमाण ॥ तां ते ओर उपाय न ।
को ई ॥ मोक्ष एक ज्ञान न ते होई ॥ २५ श्रुति सिद्ध जो रूप ज्ञान ॥ सो ई इन ने निखिल अज्ञान ॥ सर्व अनर्थ न स्वरूप ज्ञा ॥ परमानं
द एक न रपाइ ॥ २६ सगल द्वैत को होवे नाश ॥ रहे रूप के ब्रह्म प्रकाश ॥ तंतु जाने सभ द्वैत संहारयो ॥ सो वह ज्ञान करहो
किन मारयो ॥ २७ सभ अनुकूली ब्रह्म प्रकाश ॥ सो न हि करे ज्ञान को नाश ॥ तां हि सम न हि ओरे कोउ ॥ तां ते नाश क ओनु हो
इ ॥ २८ विन नाशक न हि होवे ज्ञान ॥ तां ते द्वितीय ज्ञान रकमान ॥ ताकर होवे द्वैत प्रभास ॥ कथं रूप के ब्रह्म प्रकास ॥ २९ ॥ या
मै उत्तर वहु प्रकार ॥ पंडित जन सभ करे उचार ॥ कतक रज जिउ जल को पाइ ॥ सगल नीर के मल हि मिटाइ ॥ ३० ॥ मल के संग ।
आप मिट जावे ॥ कतक न हि पीछे दृष्टि आवे ॥ यो ही ज्ञान संग चित पाइ ॥ चिदाभास सभ द्वैत मिटाइ ॥ ३१ ॥ कतक जिउ होवे व
हु नाश ॥ रहे रूप के ब्रह्म प्रकाश ॥ यो के चित रह करे उचार ॥ ओर सभा ते ओर प्रकार ॥ ३२ जिउ अग्नि तिन मलो हि सो जाय ॥ नी
र सगल तिह तन म मिटाय ॥ आपन तां ही होवे लीन ॥ यो ही ब्रह्म ज्ञान गत चीन ॥ ३३ ॥ अरु पुनि के चित यो उचराने ॥ तृण अग्नी
दृष्टांत वखाने ॥ जिउ तृण कूट जलावे अग्नि ॥ विन आश्रय होवे तहि मग्न ॥ ३४ ॥ तिउ ही त्रिपुटी सगल जलाय ॥ ब्रह्म ज्ञान आप आ
मिट जाय ॥ ओर कहे पुनि ओर प्रकार ॥ कहो संक्षेप अहे विस्तार ॥ ३५ ॥ ज्ञान एक अज्ञान हि हने ॥ साध्य प्रपंच द्वैष न हि गने ॥
जब अज्ञान नाश होइ गयो ॥ कारण हीन प्रपंच हि भयो ॥ ३६ कारण विन कार्य न हि रहे ॥ यहि भ्रम सभ को विद करे ॥ अथ ।

ਚੇਤਨਾ ਅਗਿਆਨ ਕਾ ਨਾਸਕ ਹੈ ਅਪਰੋਖ ਆਪ ਧੀਨ ਜਾਣੇ

ਅਪੰਥ ਕੇ ਜੇਤੂ

वनाशकोअनुभवभयो ॥ ज्ञानस्वतंत्रअंतरनिरमयो ॥ ३७ ॥ सोभीचलेनाहिकेसाथ ॥ मानोताततातगहिहाथ ॥ ज्ञानसहितप्रपंच
हिनाश ॥ रहेस्वरूपकेब्रह्मप्रकाश ॥ ३८ ॥ अरुमुनिकेचितबुद्धिविशाल ॥ उनेरभावप्रमरसाल ॥ वृत्तिरूपज्ञानहैजोई ॥ ब्रह्मअ
ज्ञानहूनेनहिसोई ॥ ३९ ॥ प्रकाशनाशअज्ञानहिअहै ॥ यहिजरवृत्तिकथंतिरहेहै ॥ नतुजिउलोहिअग्निकेसंग ॥ पावततदात्म्य
तेजअभंग ॥ ४० ॥ भस्मीभावकरेतृणसोय ॥ वृत्तितयाअज्ञानहिमोई ॥ लोहिनिदर्शनभावयोजोई ॥ अहेअसत्यनिदर्शनसो
ई ॥ ४१ ॥ होवेदाहजगतमोजहां ॥ पावकसत्यपिवेंजनतनहां ॥ लोहाजहांजगतमोरहेय ॥ दाहनिरंतरतहांनपये ॥ ४२ ॥ जोपाव
कनेलोहतपायो ॥ तोहीनेतृणकूदजलायो ॥ लोहजलायतृणकेभार ॥ यहिनरज्ञानभ्रमहनिरधार ॥ ४३ ॥ ननुजेवृत्तिहा
तेनहिसोई ॥ तोभावोतिहनाशकजोई ॥ वृत्तिआरूढअहैचिदजोई ॥ ब्रह्मअज्ञानहनेभवसोई ॥ ४४ ॥ यद्यपिचेतनशुद्धस्वरू
प ॥ हनेअविद्याकोनहिरूप ॥ उलटोतासाक्षीहैसोई ॥ नाशकनाहिकदाचितहोई ॥ ४५ ॥ तद्यपिवैठवृत्तिकेमाही ॥ हनेअ
विद्याकोभवमाही ॥ अखंडाकारवृत्तिजगजोई ॥ तामोआरूढहोइचिदसोई ॥ ४६ ॥ निखिलअविद्यादारेमार ॥ याहिविवेकदृष्टा
नउदार ॥ सूर्यकीज्योतिहैजोई ॥ तृणसमदायप्रकासेसोई ॥ ४७ ॥ यद्यपिशुद्धप्रकाशकअहै ॥ तद्यपिअग्निसंगमिलदहै
है ॥ सूर्यकांतमणीकेमाही ॥ होइआरूढजलावेताही ॥ ४८ ॥ नतुयद्यपिहैअविद्यानासी ॥ तद्यपिवृत्तिरहैअवनाशी ॥ तो
कोनाशकअगिरनकोइ ॥ वृत्तिआरूढचिदाश्रयसोइ ॥ ४९ ॥ सोआश्रयकाकरेननाश ॥ किहविधहोइअद्वितीयप्रकाश
वृत्तिआरूढअहैचिदजोई ॥ वृत्तिविनासकरेइहसोई ॥ ५० ॥ किंचितकाष्टहोइआरूढ ॥ पावकहोइजगतमेंगूढ ॥ काष्टवैठज
लावेग्राम ॥ नगरनकोकछुरहेननाम ॥ ५१ ॥ अग्निअधारदाराहैजोई ॥ तोहिजलावेअग्नीसोई ॥ जेसेयहितैसेहीज्ञान ॥ भली
प्रकारसमनमेंआन ॥ ५२ ॥ चरमवृत्तिभवभीनरजोई ॥ तामोआरूढहोइचिदसोई ॥ निखिलद्वैतकोकरेविनास ॥ वृत्तिवि
नाशकवहीप्रकास ॥ ५३ ॥ वृत्तिसमेतद्वैतिकोनास ॥ चेतनानंदचिद्रूपकप्रकास ॥ नतुआत्मामैद्वैतविनासयो ॥ चेतनानं

ਆਗਦਾ ਹੈ

ਚੇਤਨ

ਚੇਤਨਾ

ਚੇਤਨ ਰਗ ਦਾ ਹੈ ਕੂਤਨਗੀ ਬਗਮਜ

रविदपकप्रकासयो ॥७४॥ ज्ञानी देह भस्म ह्वै गयो ॥ ज्ञान रूप जो तेन हि रहयो ॥ जीवन मुक्त वखाने जोई ॥ भयो यथार्थ निगम ध्रुव सोई ॥
॥७५॥ विद्या सं प्रदाय विनासी ॥ ता विन न हुता हि भव पासी ॥ देह स्तंभक भव मे जोई ॥ विना अविद्या श्रौर न कोई ॥७६॥ कर्मादिक जे कार-
ण रूये ॥ विना अविद्या सो न हि पये ॥ उपादान जो को मिटि जावे ॥ सो वहु कार्य न हि टिहि रावे ॥७७॥ याशंका को यहि परिहार ॥ प्रगटवा-
खानो उर मै धार ॥ रज्जु सर्प जिंउ होवे नास ॥ कंपादिक त्राण रहे प्रनास ॥७८॥ जिउ पावक भव मे पट दहे ॥ तां की भस्म तथा त्राण रहे ॥
तिउं ही होउ अविद्या नास ॥ देहादिक त्राण रहे प्रनास ॥७९॥ संचित निखिल कर्म हुइ नाश ॥ जल मो लिपे न पद्म पलास ॥ तिउं ही
क्रियमाण रहे जोई ॥ तां के संग लिपे न हि सोई ॥८०॥ देह आरंभक जो जग रहये ॥ कर्म नास तां को न हि पये ॥ तां ही करत न ज्ञानी के-
रो ॥ रहे जगत मे यो मन हेरो ॥८१॥ न तु तत्त्व ज्ञान भव भीतर जोई ॥ कर्म सगल को नाशक सोई ॥ संचित क्रियमाण को टारे ॥ प्रा-
रब्ध भोग को ना हि निवारे ॥८२॥ या मो को न युक्ति तम पाई ॥ जो ते इसी अवस्था गाई ॥ यां सो परम युक्ति है जोई ॥ भाखो तै मे सुनो-
अव सोई ॥८३॥ प्रारब्ध भोग है ऐ परकार ॥ सो सुन कै उर अंतर धार ॥ प्रारब्ध भोग कर्म इक जोई ॥ सफल हित तनु जाय सोई ॥८४
वहु रोहू सर कर्म प्रधान ॥ तो उपजा पतत्व ज्ञान ॥ तनु इस्थिति को कारण जोई ॥ तां को चाहे कर्म सु सोई ॥८५॥ यहि तनु गावे
किंचित काल ॥ मै उपजावों ज्ञान विसाल ॥ तो उपजायो ज्ञान सु जोई ॥ प्रारब्ध भोग को रहने न सोई ॥८६॥ एक पिता को मीत नि-
हारे ॥ निज इस्थिति कारण निरधारे ॥ मेरो पिता कर्म है जोई ॥ यां को चाहे वहु विध सोई ॥८७॥ ग्रहइ न जाले मे मरजाऊ ॥ यां ते ना-
हि विरोध कमाऊ ॥ संचित क्रियमाण दुय जोई ॥ हमरे ना हि संबंधी तेई ॥८८॥ इन के हने ना हि अपराध ॥ अहइ न हने राजग्रहि
साध ॥ तां ते इन को करो प्रहार ॥ छील न वने करो इह वार ॥८९॥ याविध प्रारब्ध विन जोई ॥ ज्ञान ना पप परि चानो सोई ॥ प्रारब्धवशा-
धीरशरीर ॥ रहे जगत मे सम को धीर ॥९०॥ ज्ञानी को विरतावत रहये ॥ पावत देह पतन न हि पये ॥ तन को पातस्यो इजगाज व ही ॥ हो
इ विदेह मुक्त वहुतन वही ॥९१॥ ऐसे श्रुति देह को कहे ॥ ज्ञानी को तन जगा जन लहे ॥ लेश अविद्या जो भवमांहि ॥ प्रारब्ध प्रतिबंधक

तो है ॥ ७२ ॥ प्रतिभासिक प्रपंच है जोई ॥ ताकी स्थिति को कारण सोई ॥ ताकर होइ निखिल ब्यवहार ॥ ज्ञानी देखत ग्यानि रधार ॥ ७३ ॥ जी-
वन्मुक्त बताने जोई ॥ अब नहि स्वार्थ निगम मत सोई ॥ विद्या संस्कार अनासी ॥ सम्यक नष्ट होइ भवपासी ॥ ७४ ॥ ननु वक्तू लेश अवि-
द्या जोई ॥ ताको रूप कहो किं होई ॥ ताको रूप सर्व बहु प्रकार ॥ सर्व बुध जन करेउ चार ॥ ७५ ॥ मूल अविद्या भाखें जो है ॥ अवरणा विक्षे-
प शक्ति द्वय ता है ॥ ताम्रो द्विनतो शक्ति है जोई ॥ लेश अविद्या भाखी सोई ॥ ७६ ॥ ऐसे केचित ताहि दिखावें ॥ और सु और प्रकार बता-
वे ॥ अत्याल तत लसुन भांड मै जैसे ॥ लसन वासना होवे तैसे ॥ ७७ ॥ अविद्या संस्कार है जोई ॥ लेश अविद्या माने सोई ॥ अरु पुनि के-
चित यों दिखलावे ॥ दग्ध पटादिक सम ठहरावे ॥ ७८ ॥ जिउं पावक मे कपरा जले ॥ ताकी भस्म जवे नहि हले ॥ तौ लौं सो पट को-
सम ग्राहि ॥ चासि को ताको मागे ना है ॥ ७९ ॥ तिउं ही मूल अविद्या जली ॥ तत्व ज्ञान करि जो नहि हली ॥ प्रारब्ध तय पवन न दिपा-
इ ॥ तो लौं तैसे ही दिखलाइ ॥ ८० ॥ सोई लेश अविद्या हुये ॥ ता बिन लेश और न हि पये ॥ अरु पुनि केचित और कहे ॥ अविद्या भाग
तीन उर गहे ॥ ८१ ॥ ब्रह्म असत्व आपादक जोई ॥ ब्रह्म श्रवण ते नासे सोई ॥ ब्रह्म अभानापादक जोई ॥ साक्षात्कार ते नासे सोई ॥ ८२ ॥
तनु इस्थिति को कारण जो है ॥ नाम विक्षेप जगत मो सो है ॥ ज्ञानी देह पतन के काल ॥ उपजे ज्ञान प्रबह्व विशाल ॥ ८३ ॥ ताकर
नाश तौ हि को होइ ॥ या विधि नास त्रिधा ति ह जोइ ॥ अरु पुनि केचित परम अचार्य ॥ यों सिद्धांत भाखें जग आर्य ॥ ८४ ॥ तत्व ज्ञान जा-
वे न रहे होइ ॥ निखिल अविद्या जाले सोइ ॥ यद्दपि केवल कार्य रहि जाय ॥ प्रारब्ध प्रतिबंधक पाय ॥ ८५ ॥ देखो ज्यों अहि लाग यो जबही
भस्मभूत पार्थ रथ तबही ॥ होइ यो गिर यो न भारत माही ॥ कृष्ण शक्ति प्रतिबंधक ताही ॥ ८६ ॥ जैसे यद्दि तैसे परपंच ॥ या मे भेद ।
न हवे रंच ॥ ज्ञानिन अहनिस ब्यवहार ॥ पार्थ सिंधन सम निरधार ॥ ८७ ॥ प्रतिबंध को अपगम जबही ॥ होइ प्रतिबंध नाश पुनि-
तबही ॥ जिउं ब्रह्म को अपगम होइ ॥ छाया ताहि रहे न हि कोइ ॥ ८८ ॥ तिउं ही प्रारब्ध तय जबही ॥ देह पात निहोवे ग्यान तबही ॥ बिना
भोगे नासे नहि सोई ॥ ताते भोग तत्व मे होई ॥ ८९ ॥ ननु ब्रह्म ज्ञान दृढ होये जोई ॥ जग मिथ्या दिखलावे सोई ॥ मिथ्या ते नहि भोग स-

होई ॥ तत्वदुःखकोअनुभवैहैजोई ॥ ८० ॥ मिथ्यावस्तभोगउपजाई ॥ स्वप्नवस्तसमचिंतनकोई ॥ स्वप्नमाहिभूलोजोहोई ॥ स्वप्न।
अन्नतपतातैसोई ॥ ८१ ॥ स्वप्नमाहिसोतननग्राप ॥ स्वप्नपादथर[illegible]मिटाप ॥ स्वप्ननहीभवभीतरजोई ॥ देहदृग्यानरउन्नरेसोई
८२ ॥ जाग्रतलावेटकाचरमाही ॥ स्वप्नठामगाहमोनाही ॥ तौनावकतिहदुखनिवारे ॥ स्वप्नदीनहिपारउतारे ॥ ८३ ॥ तैसजाग्र।
तमाहिसजाना ॥ मिथ्यातेसभभोगपछाना ॥ ननुतवनहिहोवेमिथ्यातान ॥ तौतेकछुकभोगनरभान ॥ ८४ ॥ ईहोतत्तजग।
मिथ्याजाने ॥ कैसेताकोभोगवखाने ॥ इंद्रजालनरमिथ्याजाने ॥ भोगविशेषतोहितेमाने ॥ ८५ ॥ तौतेतानभोगनहिटारे ॥ ज
गसन्नाकोदुखनिवारे ॥ तौतेनिजकर्मनअनुसार ॥ तत्तनकेवहुविधव्यवहार ॥ ८६ ॥ सवैया ॥ इकराजकरेगजवाजचढेइका
भूधरपैरनग्रापचलैहै ॥ इकमोनभजेभवमंडलमेइकईस्वरकोउरजायजपैहै ॥ इकजायपहारनयोगकरेइकभोगकरेच
रमाहिरमैहै ॥ करुणारसपूरणपकरहैइकवीरसिधुरिसंगलरैहै ॥ ८७ ॥ नराजछंद ॥ करेअनेकयागदानमानईशसेवि।
ते ॥ सराजकाजभीतग्रोसनाथसर्वदेवते ॥ इदंकरोमिउद्धिकोसनीदचित्रनधरे ॥ पितेअतेइरूपकोकतेहुसिंधकोतरे ॥ ८८
भुजंगप्रयातछंद ॥ जिनेज्ञानहोपतिनेदुखलोप ॥ नहीलाभज्ञागेनहीहानसोप ॥ नहीपुण्यपापंतिसेपकलागे ॥ हूनेविश।
लावंकरीकोटयागे ॥ ८९ ॥ महाज्ञानजागेनहीरागहोई ॥ नजेपुण्यपापंकरेनाहिकोई ॥ करेजोकछूवेदकेकर्मसोई ॥ अहेया
नकारीनहीवुद्धहोई ॥ ९० ॥ सवैया ॥ हैजनमेंइनतेइनहूतलसतलभरेपितयेरसमाने ॥ मानअमानगिलानविनाइकआत्म।
ममसदारंगराते ॥ हैरविवोधसभीउरमेजगजोकरवंधभयेसभहाने ॥ दुःखसभाकृपाउधारणकोसमतारससिंधुविलेसभ
माते ॥ ९१ ॥ सवैया ॥ जोफलतेथनरकेननकेअवसोफलपुंजसभेहमपाय ॥ जेभवबंधनगाढहुतेअवतेसगलेगरहूरमिटाय ॥
हैअवलेवजहाजसरागुरुकोपदजोभवसिंधुतराय ॥ जोभवबंधनहानवहेनरसोगुरुकेपदकंजमनाय ॥ २ ॥ दोहरा ॥ जीवब्रह्म
रपरमातमायाविपधकसरूप ॥ भावेतनौनिवासमेहेरमिटेतमकूप ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ सौतावरगुरपदक्रियावाक्यअर्थनिरधा

२ गुलावसिंघपोमेकहुयोहेसहहेसंसार ॥ ४ ॥ ॥ इतिश्रीमन्मानसिंघचरणाश्रितगुलाबसिंघेनगोरीरायआत्मजेनवि
रचितेमोक्षपंथप्रकाशेमहावाक्यअर्थनिर्णयोनामतृतीयोनिवासः ॥ ३ ॥ ॥
ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ दोहरा ॥ सदायोगिसुखक
रसदाविघननविनासनजोइ ॥ शंकरसुतसतगुरुभजोंपदवंदोंग्रवदोइ ॥ १ ॥ सवैया ॥ ज्ञानभयेभवबंधनतजेगुरुकृपादितजेजिन
केपदसेऊ ॥ सेससुरेसमहेसभजेमुनिजांहिभजेभवमेसभलोऊ ॥ योगकरेअरुभोगतजेजिनमानभयेनरसोवतसोऊ ॥
सोपरमात्मरामसदाउरमाहिभजोनरहेदुःखकोऊ ॥ १ ॥ दोहरा ॥ जोंगुरवाक्यप्रकाशतेमिटेनिखिलअज्ञान ॥ होइसुजीवसु
कसुखनिरद्वंदोभवभान ॥ २ ॥ सोरठा ॥ श्रुतिअधसततज्ञानहरेनेनिखिलअज्ञानको ॥ जीवनमोक्षसमानप्रगटयाहिमोहोइशी
घ ॥ चौपई ॥ महावाक्यतेउपजयोज्ञान ॥ द्विविधअपरोक्षहरेअज्ञान ॥ जिंहतमपुंजनतेजहरनडारे ॥ तिउअज्ञानज्ञानहठटारे ॥ ५ ॥ नेनुअ
अपरोक्षज्ञानइंद्रियकविदोइ ॥ वाकुजनताहिउपावेकोइ ॥ गोचरनैनअरुहेघटजोई ॥ बहुअपरोक्षनिखिलजनहोई ॥ ६ ॥ नेनअगो
चरसुखरुपजोई ॥ नहिअपरोक्षकरेतिहकोई ॥ यदपिभावेवाक्यहजार ॥ सुखरुपकोमुनिवारंवार ॥ ७ ॥ तदपिचिदसमभासे
नाही ॥ सुखरुपसगललोकमनमाही ॥ प्रतक्षवस्तुतमारोजोई ॥ सोअपरोक्षकहोकिउंहोई ॥ ८ ॥ प्रत्यक्षवस्तुआत्माजोई ॥ सुख
यतिसुखसमहरनसोई ॥ घटसमतांहिसमीपपछानो ॥ पुनिअपरोक्षतांहिसमजानो ॥ ९ ॥ वस्तुविचारकरेजेकोई ॥ घटप्रति
हरनिकटप्रतिसोई ॥ घटअनात्मजड़उपरिछिन्न ॥ प्रत्यकवस्तुसुखप्रापअभिन्न ॥ १० ॥ अरुपुनिघटआदिकहेजेई ॥ गौणअपरोक्ष
पछानोतेई ॥ ब्रह्मसुअहेमुख्यअपरोक्ष ॥ श्रुतिसिद्धमुनिसदाअदोक्ष ॥ तथाचश्रुति ॥ यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म ॥ नतुगौणअ
परोक्षघटादिककैसें ॥ आंखोप्रगटसुनोअबतैसे ॥ त्रिविधकोइकचेतनजानो ॥ उपाधिअधीननसुखसरूपछानो ॥ ११ ॥ प्रमा
ताग्रौरप्रमाणप्रमेय ॥ ज्ञाताज्ञानकहेंमुनिज्ञेय ॥ ध्याताध्यानधेयलोजेते ॥ त्रिपुटीभावेकोविदतेते ॥ १२ ॥ ग्रतहकरणग्र

मो० तृ० प०

वछिन्नसजोई ॥ चिदप्रमाताभासवेसोइ ॥ ज्ञाताध्याताबहीकहीजे ॥ याहिविवेकसंसानहिकीजे ॥ ४ ॥ वृत्तिअवछिन्नअहैचिदजोई ॥
नामप्रमाणकहीजेसोई ॥ घटअवछिन्नअहैचिदजोई ॥ प्रमेयबखानेकोविदसोई ॥ ५ ॥ जडस्वरूपघटपटहैजेई ॥ स्वतन्त्रनभासे
भवमैतेई ॥ चेतनस्वतन्त्रप्रकाशस्वरूप ॥ आपस्फुरणस्फोरकरूप ॥ ६ ॥ नेत्रादिकद्वाराकोपाय ॥ निरावरणचिदबाहरजाय ॥ वृ
त्तिअवछिन्नहोइकरजाय ॥ घटअवछिन्नचिदसंगतपाय ॥ ७ ॥ वृत्तिहोइजोघटआकार ॥ सोचेतनपुनितथाप्रकार ॥ जिउंजग
नीरकसारअपार ॥ कुल्हाराजायकियार ॥ ८ ॥ जिउंजलहोइकियाराकार ॥ तिउंप्रतिवृत्तिघटाकार ॥ घटअवछिन्नचेतना
प्रमान ॥ इनेजायजगजिउंतमभान ॥ ९ ॥ प्रमेयमाहिचेतनथोजोई ॥ निरावरणहोइयोअबसोई ॥ घटअवछिन्नवृत्तिअवछि
न्न ॥ चेतनदोनोभयेअभिन्न ॥ १० ॥ तोअध्यस्तअहैघटजोई ॥ पाछेभानहोइपुनिसोई ॥ योघटहैयोगोणअपरोक्ष ॥ अमकथलसा
णअपरोक्ष ॥ ११ ॥ सोप्रतिपादकवाक्यजोई ॥ तेनेअपरोक्षज्ञानकोसोई ॥ तंत्रप्रतिमतअहैअसंगतथारो ॥ नहिअपरोक्षवाक्य
तेधारो ॥ १२ ॥ वाक्यजज्ञानजहांजहिसोई ॥ धर्माधर्मज्ञानसमसोई ॥ नहिअपरोक्षपरोक्षसमजाने ॥ तोतेनेमपहीसममाने ॥ १३ ॥
यहिहैनेमतमारोजोई ॥ दशममाहिव्यभिचारीसोई ॥ दशमेतेनवपुरुषगणाय ॥ बहुरोतांकोदशमबताय ॥ १४ ॥ तहीदशम
रुग्रेतरथारे ॥ अबसगलेतमशोकनिवारे ॥ योआमजनभावयोजबही ॥ दशमअपरोक्षलगहैबहुतबही ॥ १५ ॥ तिउंहीब्रह्म
आत्माजोई ॥ आमवेदजनावेसोई ॥ दशमपुरुषजिउंसोअपरोक्ष ॥ निखिलउधारभयेअबदोक्ष ॥ १६ ॥ तंत्रदशमअपरोक्षवाक्यते
नाही ॥ यहिसमझोअपनेमनमाही ॥ आमवैनस्नेबहुजबही ॥ इंद्रियकरिहैरेतन्नुतबही ॥ १७ ॥ तबहीवेअपरोक्षज्ञान ॥ वाक्यज
ज्ञाननसोपहिचान ॥ पहिपरिपाटीतमरीजोई ॥ दशमपुरुषपरिहारीसोई ॥ १८ ॥ इंद्रियकरिदशममैपायो ॥ ऐसेनहिसुख
सोहिबतायो ॥ आमजनमुहिवेनसनायो ॥ सोहीकरिदशमोमुहिपायो ॥ १९ ॥ ऐसेदशमसुनिजमुखगावे ॥ इंद्रियकरणना
सोठहिरावे ॥ सोतेनमप्रभावयोजोई ॥ नवकपोलकल्पतहैसोई ॥ २० ॥ तिउंहीमहावाक्यहैजोई ॥ ज्ञानअपरोक्षउपावेसोई ॥ तंत्र

५६

यद्यपि ही यो भयो ज्ञान ॥ तौ न हिन हरे इय ज्ञान ॥ ३१ ॥ बहुत काल को रह्यो ज्ञान ॥ परम बली तां को पहिचान ॥ अब उपजायो जो ।
ई ज्ञान ॥ अति सै निरबल तां हि पछान ॥ ३२ ॥ तां तें तम यो ज्ञान सु जोई ॥ निरय ज्ञान हने गो सोई ॥ बल अरु निरबलता जग जोई ॥ का ।
ल अधीन न मानी सोई ॥ ३३ ॥ सो है वस्तु स्वभाव अधीन ॥ है जग में जन परबीन ॥ पिन ह्वार भूधर की रही ॥ भूधर समेर चीन रही
३४ ॥ बहुत काल को तम तां मारी ॥ यद्यपि रह्यो प्रबल तौ नारी ॥ अब ही तां हि ह्वार उपारे ॥ दीपक ज्वाल करे उजीआरे ॥ ३५ ॥ छण में
निखिल अंधेरो जाय ॥ किंचित काल न सो टहिराय ॥ बहुत काल को तम यो जोई ॥ निरबल भयो जगत में सोई ॥ ३६ ॥ अब उपजयो ।
भव भीतर जोई ॥ तेज प्रबल पेखे सभ कोई ॥ तिउं ही ज्ञान भयो इह जब ही ॥ तेज समान प्रबल बहु तब ही ॥ ३७ ॥ निखिल अज्ञान ह ।
इ निवारे ॥ जिउं तम पुंज तेज हनि डारे ॥ देह आत्म बत आत्म ज्ञान ॥ जब उपजे तब बंधन हान ॥ ३८ ॥ तथा च ॥ श्री शंकराचार्य देहा
त्म ज्ञान वत ज्ञानं ॥ देहात्म ज्ञान बाधकं ॥ आत्मन्येव भवेद्यस्य सो निच्छन्न पि मुच्यते ॥ चौपई ॥ एता दृश ज्ञान भाल यो जोई ॥ बिदेह ।
मुक्ति अब भासिक सोई ॥ चेतन आश्रय विषय अज्ञान ॥ नष्ट भयो जो भयो ज्ञान ॥ ३९ ॥ नं तु कर्म समेत ज्ञान है जोई ॥ मोक्ष उपायक
ही इक सोई ॥ इकेलो ज्ञान हीन बल ऐसे ॥ एक पतंग पतंगन जैसे ॥ ४० ॥ ज्ञान अहे भव भीतर जोई ॥ उपजयो चहे न सह कर सोई ॥
बिन सहिकारी जिउ प्रकाश ॥ निज बल करे अंधेरो नाश ॥ ४१ ॥ तिउं ही अहे ज्ञान जग जोई ॥ निज बल हने अविद्या सोई ॥ अह नि ।
ष्काम कर्म जग जे ते ॥ ज्ञान जन्म हित वारे ते ते ॥ ४२ ॥ जो उपजे तौ भान समान ॥ किंचित कर्म चहे न हिआन ॥ समुझे तेज तिमर
को जैसे ॥ ज्ञान कर्म को जानो तैसे ॥ ४३ ॥ साहंकार कर्म जग होई ॥ निरहंकार ज्ञान जग सोई ॥ अहं हि जन्म ब्रह्मण जाति ॥ भारा ।
ह्मण जगो त विख्याति ॥ ४४ ॥ इंद्रिय विकल न को मुहि हये ॥ द्रव्य सब बहु विध को मुहि पये ॥ हों हो पागरी न अहि कामी ॥ अधिरो चा ।
कुल रीत हमारी ॥ ४५ ॥ या विध कर्म अहे जग जे ते ॥ अहंबुद्धि मूल कहे ते ते ॥ जन्म वर्ण जाति शुद्धि नाही ॥ गोत्र को इन में रमा ही ॥ ७९
चहत न ओरे मो मैं कोई ॥ असंग रूप आत्म मो सोई ॥ या विध ज्ञान जगत मे जोई ॥ कर्म मूल विध्वंसिक सोई ॥ ४६ ॥ बिहंगम [illegible]हो ।

तरह जोई ॥ तांते विषम पद्ध जानो सोई ॥ ज्ञान इके सो बंध निवारे ॥ परमानंद धाम महि डारे ॥ ४८ ॥ ज्ञान पंथ उत्तम जग सार ॥ इःख मे
टन सुख देन उदार ॥ या विध प्रथम बखान्यो जोई ॥ निश्चल ग्रंथ भयो दृढ सोई ॥ ४९ ॥ तंतु ज्ञान पंथ पुनि शुनि तम गायो ॥ ता
मे प्रगट सब हूं खन भायो ॥ मार्ग करपाये जग जोई ॥ वियोग ग्रंत सरूप रस मह्रोई ॥ ५० ॥ तिउं ही ब्रह्म धाम को पावे ॥ सरूप रसमा
वहू रो फिर ग्रावे ॥ ग्रंद्रो भांति तम को प्रतिहो ई ॥ ग्रस मार्ग न हि जानो सोई ॥ ५१ ॥ मार्ग पाइ ज्ञान मे जोई ॥ प्राप्य कते पहिचानो
सोई ॥ जिउं मार्ग कर धावे जोई ॥ विना विदपुर पावे सोई ॥ ५२ ॥ तिउं ही ब्रह्म ज्ञान है जोई ॥ ब्रह्म धाम को प्राप्यक सोई ॥ स्मृति
वेद पुराणन माही ॥ ज्ञान पंथ भाख्यो जहि जांही ॥ ५३ ॥ प्रापक ते मार्ग करगावे ॥ प्रसिद्ध पंथ सम नहि ठहरावें ॥ सरूप पति
पुरसम ब्रह्म न ग्रान ॥ ब्रह्म ग्रदेश स्वकु भगवान ॥ ५४ ॥ वियोग सो ग्राँ वस्तु ते होई ॥ ग्राप विपुक्त ग्रापन हि कोई ॥ तांते ज्ञानी
फेर न ग्रावे ॥ निजानंद निज रूप समावे ॥ ५५ ॥ दोहरा ॥ विदेह मुक्ति नर ज्ञान ते पावे निह चे धार ॥ जीवन्मुक्ति के हेत पुनि सा
धन ग्रोर विचार ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ तंतु जो हित साधन ग्रोर बताबो ॥ जीवन्मुक्ति कौन सो गावो ॥ शांतार हेया नन के माही ॥ इःख ले
श उपजे उर नाही ॥ ५७ ॥ निज स्वरूप को नीके ज्ञान ॥ जीवन्मुक्ति ताहि पहिचान ॥ याहि नर छवै राग सधारे ॥ ग्रोर वासना उर
ते सभ टारे ॥ ५८ ॥ तंत तत्त ज्ञान उपजयो पुनि जांही ॥ तिह कर्तव्य रहे कछु नाही ॥ निज स्वरूप को जोई ज्ञान ॥ तांही ते इःख होवे हा
न ॥ ५९ ॥ जांते निज स्वरूप इःख नाही ॥ सोहं पौं समझ्यो उर माही ॥ ग्रहन हि ग्रोर संग ते ग्रावे ॥ जांते वेद ग्रसंग बतावे ॥ ६० ॥ ग्रा
ध्यात्मिक संग बतावे कोई ॥ तत्त ज्ञान ते नास भयो सोई ॥ तां को रहत ग्रदेह ग्रज्ञान ॥ तत्त ज्ञान ते होइ यो हान ॥ ६१ ॥ कारण विन का
र्य न हि होवे ॥ यहि सम भेन मजगत मे जोवे ॥ ग्रंत हकरण माहि इःख जेतो ॥ भग्न होवे तामो तेतो ॥ ६२ ॥ जांते तास्वभाव इःख
हपे ॥ ग्रग्नि कुल जिउं तामो पये ॥ तांते रछवै राग सधारे ॥ ग्रो वासन उर ते सभ टारे ॥ ६३ ॥ इस्मादि विधि भाखी जोई ॥ यथार्थ वित्त मे
जानो सोई ॥ सांखु कहियो कर्तव्य न कोई ॥ ज्ञानी पुनि भव भीतर होई ॥ ६४ ॥ ज्ञान ग्रंथ तामो वक्तनाही ॥ जांते ज्ञान भयो ता मा

ही ॥ साध्य सिध जां को जग गाहोई ॥ शुनि कर्ने थुन तां हित को ई ॥ ८५ ॥ प्रसिद्ध साध्य जे ते जग हूये । तां हित तिह कर्ते अब हूये ॥ आ

त्म ज्ञान अरे जग जोई ॥ तां अज्ञान हने ... सोई ॥ ८६ ॥ अज्ञान निवंधन जो दुःख हूये ॥ ज्ञान नाश पै सोई भव पाये ॥ दशम अज्ञान भूयो

जिउं तां ही ॥ ता पे शोक लहयो भव माही ॥ ८७ ॥ स्व कर सो शिर ताड़न कीनो ॥ या विध दुःख वहुत न दीनो ॥ हो पद्म गना तन के ।

माही ॥ हृदि रुद अवे पुनि जां के माही ॥ ८८ ॥ आप्त जन को नो उपदेश ॥ तही दशम सम भद्र रो कलेश ॥ तिह नर दशम समफयो जं ।

वही ॥ भय अरु शोक नास यो न वही ॥ ८९ ॥ व्रणपीड़ा तिह मूल न जावे ॥ व्रणपीड़ा ते अति दुःख पावे ॥ जव तां को औखध वहु क

रे ॥ व्रणपीड़ा को तव परिहरे ॥ ९० ॥ तिउं ही ज्ञान पाय सम भद्र रयो ॥ प्रारब्ध को न हि परहरियो ॥ प्रारब्ध मै जो दुःख आवे ॥ सो प्रयत्न ।

विना नहि जावे ॥ ९१ ॥ तनु भोगे विना मिटे नहि सोई ॥ प्रारब्ध भाखो भव मे पुनि जोई ॥ त्रिविध प्रारब्ध भव मे जोई ॥ और न वारक ता

को कोई ॥ ९२ ॥ तीव्र प्रारब्ध रहिओ आई ॥ मृदु तु मिटे प्रयत्न हि पाई ॥ यद्यपि दुःख है मन के माही ॥ तद्यपि ताप आत्म माही ॥ ९३ ॥ जैसे

ताप अग्नि मै हूये ॥ नीर विखे तां ते वहु पेये ॥ तनु पावक जल दोनो संगी ॥ नहि तां मे को अहे असंगी ॥ ९४ ॥ परंपरा ... जल मो वहु

जाय ॥ नीके नीरे देत पाय ॥ आत्म पक असंग हूग्रहे ॥ मन को धर्म कथं वहु गहे ॥ ९५ ॥ जिउं स्फटिक मणि सम न असंगी ॥ भासे

जपा कुसुम सम रंगी ॥ तिउं असंग आत्मा हूये ॥ मन के दुःख दुःखी वहु पेये ॥ ९६ ॥ मणि मंत्र करि के रेमदार ॥ अग्नि शक्ति भव दाहि ।

उदार ॥ जपा कुसुम लाली परिहरे ॥ शुद्ध स्वच्छ के लेपन करे ॥ ९७ ॥ तव न हि नीर ताप को गहे ॥ नहि स्फटिक लाल को कहे ॥ ति

उं ही मन के दुःख मिटाय ॥ आत्म माहि दुःख मिट जाय ॥ ९८ ॥ तनु आतम महि दुःख न हेरे ॥ विन अभ्यास न नीके हेरे ॥ तां को कार

ण तो अज्ञान ॥ सो तो भयो ज्ञान ने हान ॥ ९९ ॥ कारण विना कथं वह होवे ॥ ज्ञानी कहो कथं दुःख जोवे ॥ सां चुक हियो मूल अ

ज्ञान ॥ भयो ज्ञान ते नीके हान ॥ १०० ॥ तद्यपि लेश अविद्या जोई ॥ अवलोके न हन नहि सोई ॥ तां ही करि होवे अभ्यास ॥ सर्व पाछे

दुःख प्रकास ॥ १ ॥ अनुभव दुःख प्रगट तिह होई ॥ तां अपलाप करे न हि सोई ॥ दुःख निवारण साधन जोई ॥ दुःख निवारण पाभव ।

होई ॥ ८२ ॥ तांते साधन की विधि जोई ॥ सार्थ भई अगर अव सोई ॥ ज्ञान अनंतर जो संन्यास ॥ श्रुति करे तां को उपन्यास ॥ ८३ ॥ सर्व आत्म
ज्ञान हि पाय ॥ निखिल अविद्या रचे मिटाय ॥ ऐसो ज्ञान लक्षण पाय भव जोई ॥ इ ज्ञानी न त्यागे सोई ॥ ८४ ॥ पुत्र वित्त लोक यहि तीन ॥
तीनो ईखणा ते हूइ हीन ॥ भिक्षा करे नगर के मांही ॥ वैठौ इस्य उल मांही ॥ ८५ ॥ तथा च श्रुतिः ॥ एतं वैतमात्मानं विदित्वा ब्राह्मणाः
पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्च व्युत्थायाथ भिक्षाचर्यं चरंति ॥ चौपई ॥ नदी पुलिन वास्य अग्रगार ॥ देवभवन ।
मेव सेउ दार ॥ जनानंद आत्म उर धारे ॥ विषय सकल ते मन को टारे ॥ ८६ ॥ काहूं संग वैठ न हि रहे ॥ समता बुद्धि निखिल मो पाये ॥ एक
अनंद सिंधु बहु आहि ॥ दुःख लेश ता मो कछु नाहि ॥ ८७ ॥ यहि अवस्था कारण जोई ॥ दिढ वैराग पछानो सोई ॥ दोष दृष्टि विषय
नमे जोई ॥ दृढ वैराग उपावे सोई ॥ ८८ ॥ सवैया ॥ जिह नागर नारि निहारत ही नर मोह रहे तिह रूप विचारे ॥ मुख श्रु क भरी दृग जो गी
इव देखि अहनाक नते बहु मेल निसारे ॥ सम हार न मेल अवेस रही अब का हि भयो तिह यो च उचारे ॥ भव नारि न संदरई शारवी ।
नरक आगिन की तिह दाह निहारे ॥ ८९ ॥ सवैया ॥ इनि मास समयो इ तिश्रोणा भरी इति हूउन की पुन ली उर धारे ॥ इनि मी ज पिख इ ।
तिना हि लखे इति बाल मयी इह भांति विचारे ॥ दुरगंध मलीन महा पिखये न हि संद रनारि निरूप निहारे ॥ इह भांति सदोख न
खान भई अब तां न न ते उर राग विसारे ॥ ९० ॥ दोहरा ॥ इह भांति विचारे दोख को निखिल पदार्थ मांहि ॥ तवे जिह्वा सां तांहि की उपा ।
जे न र उर मांहि ॥ ९१ ॥ दोहरा ॥ जिह्वासा कहे विराग को सो है तीन प्रकार ॥ तीव्र पुनि तीव्रतर कहे मंद तथा निरधार ॥ ९२ ॥ चौपई ॥
पुत्र दारन सहु इ जब ही ॥ धिग संसार होइ मति तब ही ॥ यहि मंद वैराग कहीजे ॥ तां मो नाहि संन्यास हि लीजे ॥ ९३ ॥ पुत्र दार वि ।
षय जग जेते ॥ या हि जन्म मत होवे तेते ॥ ऐसी इ स्थिर मति है जोई ॥ वैराग सु तीव्र भाखियो सोई ॥ ९४ ॥ पुन रावृत्ति सहित जे लो
क ॥ मत होवे जा मे बहु शोक ॥ ऐसी मति इ स्थित है जोई ॥ तीव्रतर वैराग सु सोई ॥ ९५ ॥ पुनि भोग तेमे दीनन होई ॥ वैराग है त
फल भाखियो सोई ॥ ब्रह्म लोक लौ ह्ये जेते ॥ तृण समान सभ भासे तेते ॥ ९६ ॥ यहि वैराग अवधि पहु धावे ॥ सर्व भाग भये जन ५३

पावे ॥ तीव्र होइ वैराग सु जवही ॥ करे संन्यास भ्रमै मेत तवही ॥ १७ ॥ सो संन्यास है दोइ प्रकार ॥ कुटीचक अरु बहूदक धार ॥ या ज्ञाना
हि शक्ति नहि जवही ॥ करे कुटीचक योगी तवही ॥ १८ ॥ या ज्ञाशक्ति देह न रहे जोई ॥ संन्यास बहूदक धारे सोई ॥ यहि दोनो संन्यास सुखा
जोई ॥ नाम त्रिदंडी भावि तेई ॥ १९ ॥ तीव्रतर वैराग सु जोई ॥ दो संन्यास जनक है सोई ॥ हंस पक को नाम भनीजे ॥ परमहंस सु द्वितीय
कहीजे ॥ २० ॥ ब्रह्मलोक मैं तत्वज्ञान ॥ जा मे होइ सु हंस पछान ॥ परमहंस पुनि दोइ प्रकार ॥ विविदिषा अरु विद्वत निरधार ॥ २१ ॥ या
हि कत ज्ञान ग्रंथ है जोई ॥ विविदिषा या भव भाख्यो सोई ॥ तत्वज्ञान अनंतर जोई ॥ जीवन्मुक्ति देह तहे सोई ॥ २ ॥ वही कही ते विद्वत
संन्यास ॥ जीवन्मुक्ति के द्वै प्रकास ॥ याज्ञवल्क्य लौं तीं यवभारे ॥ तिन हू यहि संन्यास सु धारे ॥ ३ ॥ यहि संन्यास धारे है जवही ॥ यावि
धवर्ते योगी तवही ॥ शुभ वासना पूर्व धारे ॥ मलिन वासना दूर निवारे ॥ ४ ॥ या के शुभ को करे त्याग ॥ ऐसे पुरुष बने वड भा
ग ॥ मलिन वासना तीन प्रकार ॥ सो संक्षेप ने करौं उचार ॥ ५ ॥ लोक वासना प्रथम पछानो ॥ शास्त्र वासना दूसर जानो ॥ देह
वासना तीजी हूये ॥ या विध तीन वासना थये ॥ ६ ॥ सभ जन मे निंदा न हि करें ॥ मैं उस्तति को सभ प्रनु सवे ॥ ऐसी इच्छा जो भव मा
ही ॥ लोक वासना जानो ताही ॥ ७ ॥ शास्त्र वासना तीन प्रकार ॥ पाठ व्यसन प्रथक निरधार ॥ बहु शास्त्र ग्रंथ यन न न ग्रास ॥ दूजी
यहि कीनी उपन्यास ॥ ८ ॥ अनुष्ठान व्यसन तीजी भव माही ॥ या विध तीन ग्रहे जग माही ॥ देह वासना तीन प्रकार ॥ सो पुनि
ये के निरधार ॥ ९ ॥ निज देह मो आत्म ज्ञान ॥ प्रथम वासना यहि यदि चान ॥ गुणाधान दूसरी हूये ॥ दोष निरसन तीसरी थये
१० ॥ गुणाधान है दोइ प्रकार ॥ सो संक्षेप ते करौं उचार ॥ लौकिक गुणाधान इक हूये ॥ द्वितीय शास्त्रीया भव थये ॥ ११ ॥ सुं ... कूल
ग्रह वहु तन सुगंध ॥ यत्न करे तन धारे ग्रंथ ॥ लौकिक गुणाधान यहि जान ॥ शास्त्री को ग्रव करो वखान ॥ १२ ॥ तीर्थ यात्रा है तन सि
धावें ॥ गया जाय कर पिंड करावें ॥ शालग्राम की सेवा करो ॥ बहु प्रकार धर्म विसतरो ॥ १३ ॥ दोष हनन पुनि दुइ प्रकार ॥ लौ
किक अरु वैदिक निरधार ॥ तन मे वहुत अरोध धी धारे ॥ उद्वर्तन सो देह पखारे ॥ १४ ॥ मुल मो अरु अरोष धी धोवे ॥ या विध दोष।

मो
त
प
१५

शुभ के खोवे ॥ शास्त्र विहित न शोच को करे ॥ या विध उर दोष हि पर हरे ॥ १५ ॥ या विध तीन वासना जोई ॥ सब ही त्यागे सगली सोई ॥
इन तीनो का बहु विसतार ॥ जो वसिष्ट मा हि निरधार ॥ १६ ॥ सर्व हूं इस प्रकार करि गायो ॥ बहु विस्तार न तेना हि दिखायो ॥ लोक ।
वासना त्याग उपाइ ॥ कहो संछेप सनो मन लाइ ॥ १७ ॥ इसोउ पायन को भव माही ॥ गुण सागर उर परम दयाल ॥ दोष हीन निज
ज्ञान विशाल ॥ १८ ॥ सभजन के हित को अनुसरे ॥ द्वेष न काहू को उर धरे ॥ या विध गुणा उत्तम अपार ॥ भवभीत रजे गुरु सुखदा ।
र ॥ १९ ॥ तां की निंदा भव मे करें ॥ सभजन न दिउ स्तुति अनुसरे ॥ द्वेष होइ जां जां के माही ॥ तिह निंदे जन या भव माही ॥ २० ॥ ब
ल्यादि कें निंदा करही ॥ बहुत ग्रंथ वाचे वेन उचरही ॥ अरु पुनि राग होइ जां जां ही ॥ नर पर शंसे तां भव माही ॥ २१ ॥ आवे होइ पा
षाण समान ॥ तां ही को उर बहु सनमान ॥ वृद्ध अंगि ना बालन माही ॥ यहि यों ही संसे कछु नाही ॥ २२ ॥ यों सभजन की ग
तिह निहारे ॥ उर ते लोक वासना टारे ॥ इति र वासना त्याग उपाइ ॥ कहो संछेप सनो मन लाइ ॥ २३ ॥ बहुत ग्रंथ का सिखे मेंमा
न ॥ शास्त्र वासना केर प्रदान ॥ संदर पाठ कहो लो करें ॥ कंठादिक न हि वश ग्रन्थ सरे ॥ २४ ॥ यों ही ग्रंथ बहुत विस्तार ॥ ग्रं
थन का किउ पावे पार ॥ बहु प्रकार कर्म विस्तरे ॥ को समर्थ भव मे करे ॥ २५ ॥ यो ग्रंथ का ज्ञान उरमाही ॥ त्याग सगल वासना
तां ही ॥ जउ नहे त ते आत्म नाही ॥ या हित न जोहे रे भव माही ॥ २६ ॥ तन अभिमान ता पर कार ॥ सर्व भाव यो बहु विस्तार ॥ अभि
न मलिन तन या भव हूये ॥ आत्म प्रतीति से निरमल पये ॥ २७ ॥ गुणा धान अहंदोष प्रदान ॥ तन भी न रख ग्रंथ क्यप छान ॥ आत्म
शुद्ध रूप निज हूये ॥ एक अवंसंग यों समपये ॥ २८ ॥ या विध भेद दुहूं को जोवे ॥ मलिन वासना उरते खोवे ॥ शुभ वासना धार
उदारी ॥ त्यागि मलिन वासना सारी ॥ २९ ॥ मनो नाश को उद्दम ठाने ॥ मन को रूप इसो नर जाने ॥ अंतह करण हू या भव माही ॥ स
विपो जगदी स्फुरतन माही ॥ ३० ॥ मन न रूप वृत्ति तिह जोई ॥ मनो कही जे भव मे सोई ॥ मन न रूप वृत्ति परिहरे ॥ निरोध परि
णाम हि को अनुसरे ॥ ३१ ॥ यह ही नाश तां हि को जाने ॥ तां ही हित उद्दम उर ठाने ॥ ता उद्दम के दो परकार ॥ सत्व बोधन ग्रह सदु ।

की

म
न
प

निराधार ॥ ३२ ॥ शत्रु अरु मित्र के मांही । तुल्य बुद्धि जो ई भव मांही ॥ सत्य वो धन यों को पहिचान । इह उपाय को कहो वखान ॥ ३३ ॥
यम अरु नियम प्रमाहार ॥ इम आस्तिक को इह निरधार । गुरु समीप सो वकौ करे । आप हिते न दृढ़ विसरे ॥ ३४ ॥ दोहरा ॥
अहिंसा सम आसेन पुनि ब्रह्मचर्य पहिचान ॥ अपग्रह पुनि जानि ये यम यह पांचो मान ॥ ३५ ॥ शौच अघोर संतोष पुनि तप स्वाध्या-
य वखान ॥ ईश्वर को प्रणिधान पुनि पांचो नियम पछान ॥ ३६ ॥ चौपई ॥ आछे राज धर्म जिन देश । उपद्रव कर न हि होइ क-
लेश ॥ मंदिका तहां इकांत सवारे । धनुष प्रमाण न वहु विस्तारे ॥ ३७ ॥ शिला जल अग्नि तहां न धरे । अल्प द्वार रंध्र पवि दृढ़े ॥ न
अति नीच ऊच न हि होई । गरत न भीतर होवे कोई ॥ ३८ ॥ गोवर सो धर लेपन करे । कुशा मृगछाल चैल विस्तरे ॥ योग करे त-
हि आसन धार ॥ ते आसन कछु क रो उचार ॥ ३९ ॥ दोहरा ॥ जानु के अंतर करे पादो के तल दोइ ॥ रिजु शरीर वैठे जवै स्वस्तिक-
आसन होइ ॥ ४० ॥ उरु न ले इक पाद को दूसर पाद ह जोइ ॥ ऊपरि राखे उरु के वीरासन यहि होइ ॥ ४१ ॥ दोकर धरणी मे धरे अग्र-
के नाभि लगाइ ॥ देह करे सम दंड के मोरासन सुखदाइ ॥ ४२ ॥ ऊंचा सथी भूम पै हाथन मे पग धार ॥ माथो जानु पर धरे पश्चिम-
तान उचार ॥ ४३ ॥ जगत जीव जेते अहै तेते आसन आहि ॥ सभ आसन को नेक हे मुख्य वखानो ताहि ॥ ४४ ॥ सिद्ध पद्म अरु सिं-
हासन भद्रासन मिल चार ॥ सभ आसन के सी समणि आसन चार विचार ॥ ४५ ॥ योनि ठौर पद मूल धर मेढ्र उपरि पद आन ॥
सम शरीर वैठे जवै आसन सिद्ध वखान ॥ ४६ ॥ वाम ऊरु दक्षिण चरण दक्षिण धरे स वाम ॥ दृढ़ अंगूठे पद फरे पद्मासन इ-
हि नाम ॥ ४७ ॥ चौपई ॥ सीम समीप वृषण के तले । पद के गुलफ लगाय भले ॥ दक्षिण वाम गुलफ को धारे । दक्षिण गुलफ-
वाम निरधारे ॥ ४८ ॥ दोकर जानु ऊपरि धार । पांचो अंगुल दये पसार ॥ मुख पसार पेखे नासाग्र । सिंहासन इहि कहे उजागर ॥
४९ ॥ तन के पास पाद के तले । पुग पद कर कर दावे भले ॥ भद्रासन इहि नाम भनीजे । गोरख आसन पुनि याहि कहीजे ॥ ५० ॥
या विध आसन को निरधार । प्राणायाम सु करे उदार ॥ प्राणायाम है तीन प्रकार । सो सुन यो उर अंतर धार ॥ ५१ ॥ रेचिक प्रथ-

प्रकटुयजानो ॥ कुंभक ऋषपतीसरो मानो ॥ विशेषवायुतन भीतर जेती ॥ बाहर सगल निकाले तेती ॥ ५२ ॥ पां को रेचिक जग।
में कहिये ॥ पूरक को गति औरे लहिये ॥ उमल नालि उरघ पुलमाही ॥ सिसजल लैचे जिउं भवमाही ॥ ५३ ॥ तिउं ही वायु गहे पु।
लमाही ॥ पूरक तां हि कहै भवमाही ॥ ऊर्धअधह सम सास न नहि होई ॥ अहपुनि गात्र चलेन कोई ॥ ५४ ॥ ऐसी भांति जु रहै भव जा।
वही ॥ कुंभक तां हि वखानेत वही ॥ सो कुंभक है दुय प्रकार ॥ बाहर अरु भीतर निरधार ॥ ५५ ॥ बाहर पौन निकाल यो जोई ॥ ता।
ही ठौर ठां रोव कू होई ॥ जौ लौ ठा रो बाहर रूपे ॥ जौ लौ बाहर कुंभक पये ॥ ५६ ॥ अरु जो प्राण अपानन माही ॥ जाय मिले यात।
नु के माही ॥ जो पुनि बाहर को नहि आवे ॥ भीतर कुंभक तवै कहावे ॥ ५७ ॥ प्राणायाम भेद दिखलायो ॥ फल या को पावें ज।
लिगायो ॥ निश्चल सरूप जावे जोई ॥ सत्वावरण कही जे सोई ॥ ५८ ॥ सो सब भक्षीण होय रहि जावे ॥ यौं या तें जलि शगट दिखावे ॥
अरु पुनि योग धारणा माही ॥ मन समर्थ होय तत्र माही ॥ ५९ ॥ प्रत्याहार रूप है जोई ॥ अगट पतंजलि गायो सोई ॥ शब्द स्पर्श
रूप रस जानो ॥ रस अरु गंध पांच पहिचानो ॥ ६० ॥ औ ताहि प्राणायाम प्रत्याहार ॥ मांहि पतंजलि वरू विस्तार ॥ प्रत्याहा
र करे नर जवही ॥ इंद्रिय सव वश होवे तवही ॥ ६१ ॥ दोहरा ॥ प्रत्याहार फल यहि कहियो सु नो धारणा रूप ॥ जां के कीये ते मि
टे पाप महां नम कूप ॥ ६१ ॥ दोहरा ॥ पद्मासन ने आदि ले यथा योग निरमाइ ॥ कहुं कमन अस थायने धारणा नाम कहाइ ॥ ६२ ॥
चौपई ॥ अधारादि देशन के माही ॥ अथवा आत्म विरचन माही ॥ चित्त को बांधनो भव मैं जोई ॥ धारणा या भव भावी सोई ॥ ६३ ॥ तां मे
प्रत्यय धारा जवही ॥ ध्यान वखाने तां को तवही ॥ सो धारा है दुइ प्रकार ॥ से प्रकार सुनियें निरधार ॥ ६४ ॥ विजाती प्रत्यय जा मे।
होई ॥ ऐसे पक पछानो सोई ॥ सो धारा ही ध्यान कही जे ॥ ॥ सरको अव रूप सनीजे ॥ ६५ ॥ लहत विवेश प्रत्यय प्रवाह ॥ चले निरं।
तर अंतर नाह ॥ ता धारा को कहे समाधि ॥ भव भीतर जे पुरुष अगाधि ॥ ६६ ॥ सो समाधि है दो प्रकार ॥ एक अंग अंगी निरधा
र ॥ ध्याता ध्यान फुरे जां माही ॥ अंग समाधि पछानो ताही ॥ ६७ ॥ दो के भान बिना है जोई ॥ अंगी अद्वय पछानो सोई ॥ सम प्रज्ञात।

उरपहीपछान॥ज्ञानविवेदोनोआभान॥६८॥परमसमाधिअसंप्रज्ञात॥सोमनिपेनीकेविख्यात॥निखिलचित्तवृत्तिमिटजा
वे॥केवलएकचिन्नरहजावे॥६९॥संस्कारशेषपहिहोई॥असंप्रज्ञातकहीजेसोई॥वृत्तिउपरमयत्नहैजोई॥ताकोहेतुपछा
नोसोई॥७०॥जोजोउपजेमनकीवृत्ति॥ताहीतनणसोकरनिवृत्ति॥वारंवारइसोअभ्यास॥तांतेहोइसमाधिप्रकास॥७१॥यदि
समाधियोगतेभई॥अथवानतत्त्वज्ञाननिरमई॥यामैनियमनकोईहये॥साधनयुगमतांहिकेपये॥७२॥जांतेदोअधिका
रीपाए॥तांहीतेमार्गद्वयगाए॥योगविवेकदो[illegible]वकरे॥भक्तजनाकेसंसेहरे॥७३॥अर्जुनकेसंसेकोहर्ता॥माधवश
तरकहेसुखकर्ता॥सांतीजोपावेअसथान॥योगीपावेवहीअसथान॥७४॥तत्त्वज्ञानवासनानाश॥मनोनासत्रिहुभयो
प्रकाश॥सोनरजीवन्मुक्तकहीजे॥तांकेदर्शनतेभयछीजे॥७५॥तानाभूमीकेअनुसार॥जीवन्मुक्तभेदनिरधार॥तंत्रभू
मिकौनजिनकेअनुसार॥भेदकीयोतममोहिउचार॥७६॥सप्तभूमिरूपहैजोई॥भाखोप्रगटसुनोअवसोई॥प्रथमशुभे
छाभूमिपछानो॥विचारणानामदूसरीजानो॥७७॥तनुमानसातीसरीहये॥चौथीसत्त्वापत्तिसपये॥असंसक्तिनामपं
चमीजान॥पदार्थभावनीछटीपछान॥७८॥तरयगनामसप्तमीहये॥याविधसप्तभूमिरूपपये॥मूरखरीकादेरहिजावो
प्राप्तप्रेसतसंगतिपावो॥७९॥वैरागसहितपहिइछाजोई॥नामशुभेछाभाखोसोई॥प्राप्तप्रेसंतनकोसंगा॥वैरा
गहोउउरमाहिअभंगा॥८०॥सतविचारप्रवृत्तिसुजोई॥तीनोसहितविचारणासोई॥इंद्रियअर्थरक्तताजोई॥विचारशुभेछा
करजववोई॥८१॥पाहिअवस्थाभवमैजोई॥तनुमानसभाखीसोई॥तीनभूमिअभ्यासप्रधीन॥विषयनमाहिप्रीतितिनहीन॥
८२॥सत्त्वात्मैइस्थितपावे॥सत्त्वापत्तिभवसोइकहावे॥भूमिचारकोवहुअभ्यास॥शुद्धहोइउरसत्त्वप्रकास॥८३॥फलकेमां
हिसक्तिनहिहोई॥असंसक्तिनामभूमिकासोई॥पंचमभूमिनिवासीजोई॥स्वपरउभयातुहोवेसोई॥८४॥दोहरा॥पंचभूमि
अभ्यासतेआतमरामस्वभाइ॥निखिलपदार्थभावनाहिरदेतेउठजाइ॥८५॥चौपई॥परप्रवृत्तिपत्तवहुपाइ॥कटीकहोउउस्या

नसुभाइ॥ याविधकीग्रवस्थाजोई। पदार्थाभावनीभाखीसोई॥ ८८॥ त्रटभूमकादृढग्रभ्यास॥ कहीनहोइसुभेदप्रकास॥ निज
स्वभावमैइस्थितजोई॥ नाहिउथ्यानकदाचितहोई॥ ८९॥ तुरयगनामभूमिकासोई॥ जिलभेदवभोगीभवजोई॥ तीनभूमिग्रथा
मसुजोई॥ तत्वज्ञानकोसाधनसोई॥ ९०॥ चतरथभूमीज्ञानीहोवे॥ ग्रागामीजन्मदुखसभखोवे॥ पंचमछटीसप्तमीजोई॥ जीवा
न्मुक्तभेदहैसोई॥ ९१॥ याविधकोसुनकैउपदेस॥ जनग्रधिकारीहरेकलेस॥ जीवन्मुक्तिग्रवस्थाहोई॥ परमार्थभेदइहियोना
हिकोई॥ ९२॥ दूसनकाहूसंगकमावे॥ मैत्रीकरणामोमनलावे॥ मुमाभेग्रनुमोदनधरही॥ पामरमाहिउपेक्षाकरही॥ ९३॥
निरमलनिरहंकारउदारे॥ इंदनमाहिनसोचविचारे॥ जातेलोगनकोभयनाही॥ लोगनतेनहिताउरमाही॥ ९४॥ नराजछं
द॥ नसंगकोकरेकहूंग्रलेउधामध्यायैहै॥ ग्रगाधदुःखमेटकैग्रनंदएकपायैहै॥ सलोकतापनासनीग्रभेदवाकगावई॥
सदीनदुःखहरकैदयालताजनावई॥ ९५॥ सजोग्रचारधारकैहरेग्रपारभारको॥ सवंधनासजोचहैलहैग्रनंदसारको॥ इ
सोग्रचारताहिकोग्रनंतपीडमैफिरे॥ पुनीतपारहूरकैसग्रंगपावनीकरे॥ ९६॥ भुजंगप्रयातछंद॥ कहूंधरपरोकहूंसच्छ
ग्रंगा॥ कहूंभूमसज्जोकहूंपाटग्रंगा॥ कहूंभीखमांगेकहूंबैठधावे॥ घनानंदमूकोकहूंऊचगावे॥ ९७॥ फिरेदेसमाहीकरे
सनग्रासा॥ पिवेताहिकोईमिटेपापरासा॥ सनेवाकवानीमिटेग्रंधकारे॥ तटेगंदपीडाहरेभीमभारे॥ ९८॥ भलेभोगदीने
नहीहर्षमाने॥ सभिख्याविहीनोनहीक्रोधठाने॥ विनारागदोखंफिरेभूमिमाही॥ नहीहानतांकोनयालाभनाही॥ ९९॥
सवैया॥ सभलोगनकेतमहारएाकोभवटारनकोवुधवैनवखाने॥ जगमोहमिटापलहेपरकोवुधवैननकोउरभीतरमाने॥
हिगलोगनकोतमदूरहरेसविताकरसेवुधवैनग्रह्लाने॥ वुधवैननकोभवधावनसोभवप्ररवपाजिनपुएयकमाने॥ १००॥
चौपई॥ ग्रसकलानग्रनंतसुजोई॥ सदाग्रसंगछुटेहनहिसोई॥ ताहिविवेकेसेसंसारा॥ किमइस्थितकैसेसंसारा॥ १०१॥ सर्वग्रा
कारमिथ्याहोई॥ सत्यविवेकतनहिकोई॥ निरंकारवैघवग्रनूप॥ इछारीनग्रचलतिहरूप॥ १०२॥ एकग्रहितीसमग्रीनाही॥

कैसे जग न तेहो इरतो माही ॥ दिनकर कोट वेगो वर देपे ॥ तम ग्रविद्या ताहि न पेपे ॥ १ ॥ सवैया ॥ जो हिलि देवत मभार मिटे पुनि कानन नसी
न हे रेत ण मा ही ॥ तो रविमे तम को न कहे इक पेचक फूट करे जग माही ॥ चेतन भान मिटे तम चामर हे वहु काल सुजो चिर मा
ही ॥ को विर कोन कहे चिट मे इक ग्रतग्र लीक कहे भव माही ॥ २ ॥ पहिमा न पिता सुत न थे जग मे किन थे जग भीतर जे गुर भारे ॥ पहि
तीर्थ पुण्य कि व्रत न थे किन थे भव मंडल वेद सचारे ॥ सुभ संतन के जग फूट न थे किन थे रघुवीर कि जाप उदारे ॥ ग्रब ही मम बंध
न टूट परे ग्रव लो मम बांधन किउं जग धारे ॥ ३ ॥ सवैया ॥ गुर वेद सु तीर्थ नियम महा व्रत संयम जे पित मात हमारे ॥ हरि भूमि
सु नीर सुमीर वली पुनि पावक ग्रोर ग्रकास उदारे ॥ तुम रेउ पकार सुज्ञान लहे दृढ बंधन थे सभ मूर निवारे ॥ सभ को ग्रभिवंद
न हे हमरी हम हूं परमात्म धाम सिधारे ॥ ४ ॥ चौपई ॥ जो ग्रज्ञान रचयो संसारा ॥ कहो गयो कछु ग्रहे ने सारा ॥ राग द्वेष ग्रव ग्रभव जो
है ॥ कहो गयो ग्रव पिखो न कोई ॥ ५ ॥ ग्रात्म प्रकाश भयो मुहि भान ॥ जो विन लखो न रंचिक प्रान ॥ हरि नर देव ग्रदेव न भेद ॥ कहो
गयो ग्रव पिखो ग्रभेद ॥ ६ ॥ पांच कोश मय पंच कि वाड़ ॥ ग्रात्म के को गयो उघाड़ ॥ ग्रहो निरंजन दर्शन पाए ॥ बहुत काल के
दुःख मिटाए ॥ ७ ॥ मो विन नाहि निरंजन ग्रान ॥ ग्रात्म रूप भयो मुहि भान ॥ ग्रहो ग्रचर्य की गति नियारी ॥ जो के दर्श मिटे भव
भारी ॥ ८ ॥ उत्तम गुरु भाग ते पायो ॥ जिन मेरो ग्रज्ञान मिटायो ॥ सुख पुण्य शुद्ध जिह होई ॥ उत्तम गुरु लहे भव सोई ॥ ९ ॥ बहु रोग
द मली विध सेवे ॥ तो ते उत्तम ज्ञान हि लेवे ॥ लोक न ज्ञान दहे भव सारा ॥ भव सागर के जावे पारा ॥ १० ॥ सभ ही लोक सुखी जग
होवें ॥ दुःख न कव हू कोई जोवे ॥ या विध सर्व दुःख को हरणी ॥ वाणी प्रगट करे सुख करणी ॥ ११ ॥ नराज छंद ॥ सुज्ञान भान सों
लसे न वार को करे कहूं ॥ न यो ग्रपार धार के सुरूप वेद है कहूं ॥ सु दुःख भार डार के सुखे ग्रपार पावई ॥ नि वास सर्व वासना ग्र
नेद रूप ध्यावई ॥ १२ ॥ चौपई ॥ या विध वर्ते भव मे योगी ॥ ब्रह्मानंद सदा रस भोगी ॥ बहु धा ता गति ग्रैसी जानो ॥ पड़ मन माहि
ग्रलख पछानो ॥ १३ ॥ सवैया ॥ मीनन की गति नीर विखे नभ माहि विहंगन की गति जैसी ॥ विडति की घन माहि लखे तन

मो॰ ल॰ प॰ ८०

माहिलखेमनकीगतिकैसी॥लोकविखेसभयोगिनकीउरलखग्रहेभवभीतरखैसी॥देहउरलखग्रलखसदागहिकोनप्रका
रकहेगतिग्रैसी॥१४॥सवैया॥धन्यधर्मवंतिनकोजननीकुलपावनतांहिकरीजगसारी॥भूमसपुण्यवनीकरिसोसभहीसुरका
ग्ररवाविसथारी॥ब्रह्मसनातनहेतिजिनेउरनेसभवासनदूरनिवारी॥वेदनकीगतिजेतकथीसभतेतकतांहिउदारसवारी
॥१५॥सवैया॥तपकोनिरवासनहोइकरेनधरेउरमेफलरंचिकसोई॥ग्रटदेशनपावनदेशकरेसुफिरेतहिटोरजहांरुचिहोई
निरपेक्षसदाउरशांतरहेकरुणाकरकेतिहुंगेरसुजोई॥बहुपावनयाभवमाहिभयोउरमाहिरहेतिहपापनकोई॥१६॥चौ
पई॥लोकसंग्रहहेतउदार॥धारेतपजगबहुप्रकार॥तिहेलोकसुतीनप्रकार॥शिष्यभक्ततादृष्टिविचार॥१७॥तामोशिष्यग्र
हेजगजोई॥ग्रंतरसूखगुरहेरससोई॥पामाणिकतांकोउरमैमाने॥तावैननमेनिहचाहाने॥१८॥तांकोग्रर्थविचारेसोई॥सी
ग्रवंधमोक्षवहुहोई॥बहुरभक्तभवभीतरजोई॥ततनिहुकोसेवेसोई॥ग्रन्नपानग्रोवासग्रसथान॥वस्त्रवंसनवहुसन
मान॥याविधतांकोसेवेजोऊ॥तांकेपुण्यगहेभवसोऊ॥२०॥तटस्थग्रहेपुनिदोपरकार॥ग्रास्तिकग्रोरसुनास्तिकधार॥
योगीकीसुभक्रियानिहार॥ग्रास्तिककरेसुसुभग्राचार॥२१॥नास्तिकहैभवभीतरजोई॥योगीदृष्टिविषयजबहोई॥तब
हीतांकेपापविनासे॥शुभइछाउरमाहिप्रकासे॥२२॥याविधलोकनकोउपकार॥योगीकरेसुबहुप्रकार॥ग्ररुपुनिकेव
लद्वेषीजोई॥पापगहेयोगीकेसोई॥२३॥याविधकर्मविभागहिहोई॥क्रियमाणशेषयोजोई॥पारब्धकर्मयोजेतो॥भो
गविनाशयोसगलोतेतो॥२४॥विदेहमुक्तिकोसन्मुखहोइ॥योग्रमभवभारसगलतिनखोइ॥योतांकोसुतभवभीत
रजोई॥तापग्रहीताहोवेसोई॥२५॥दोहरा॥साधनधारउदारउरद्वंद्वगनेनहिकोई॥मोक्षपंथमुसोचलेसोग्राधिकारीहोई॥२६
सवैया॥जगमोहदुःखपीनहिंइंद्रसहेनगहेउरखेदसदैवनिहारे॥विनभोगमिटेनकरेजगजोफलदायिककर्मसुफलउ
दारे॥तिनकेतनकेदहरहेजगमेगहिपुण्यग्रपारसुपापविसारे॥नलग्रचवग्रोनृपपांडवकीगतिकोउरवीचसुनीतन॥

विचारे ॥ २० ॥ सोरठा ॥ गहिश्रुपदेतत्वज्ञानमनोनाशतपवासना ॥ जीवन्मुक्तसज्ञानहोवेभावीश्रवणदृढयदि ॥ २१ ॥ ससाध ।
नजीवन्मुक्तिजोहरिगुरपादमनाय ॥ गुलाबसिंहयां ॥ १८ ॥ ॥ इतिश्रीमत्मानसिंहचरणशिष्यितगुलाबसिंहेन ।
गौरीरायप्रात्मजेनाविरचितेमोक्षपंथप्रकाशेससाधनजीवन्मुक्तिनिर्णयोनामचतुर्थोनिवासः ॥ ४ ॥ ६ ॥ ८ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ सवैया ॥ पदजांहिभजेकृतकारयहोइसमूलविभोसमहावगयहै ॥ सभलोकनमेजसमुरहेकु ।
लसमुझभईजिहमांहिजपैहै ॥ ननश्रीमनचीनउपाधिविनाघनमेसंधवमेचिदरूपभयोहै ॥ हमतांगणनाथिककेकरजोरस
मीसनिवायकिप्रणमैहै ॥ सवैया ॥ भेदविहीनअखंडरसदानिरखेदकहेजिहकोश्रुतिचारी ॥ भातसमानपरेजिनके ।
गुणपावतजांहियतीशुभकारी ॥ ज्ञानभयेननुदारतहीविदरूपभयेककुग्राहिनवारी ॥ तारघुनाथशिरोमणिकेप
दमंजलकोसदवंदहमारी ॥ २ ॥ सोरठा ॥ श्रीगुरुपादउदारवंदोसीसनिवायके ॥ भवसागरनिसतारसेवतसेवकगणस
दा ॥ ३ ॥ चौपई ॥ नमरवाच्यअर्थयोजोई ॥ प्रथमनिवासवखानयोसोई ॥ तंपदवाच्यअर्थयोजेतो ॥ [illegible]तीयनिवासवखान
योतेतो ॥ ४ ॥ लक्ष्यअर्थग्रहप्रेकज्ञान ॥ ततीयनिवासकीयोसवखान ॥ ससाधनजीवन्मुक्तसजोई ॥ चतुरथेमाहिवखा
नीसोई ॥ ५ ॥ विदेहमुक्तिअहयअनाम ॥ भवहोवेनींकेप्रकास ॥ जीवन्मुक्तपुरुषजगमार ॥ प्रारब्धफलभोगउदार ॥ ६ ॥
यातनुकोउरेभवजुवही ॥ होउविदेहमुक्तवहनवही ॥ नजीवन्मुक्तपुरुषयोजोई ॥ वहीविदेहमुक्तिइहहोई ॥ ७ ॥ त
तवज्ञानीकेवलजोहै ॥ तांकीगतिभावोअवकोहै ॥ केवलतत्वज्ञानीजोई ॥ विदेहमुक्तितांससमसोहोई ॥ ८ ॥ तांकोकार ।
णतत्वज्ञान ॥ सोहयेइहहूहूसामान ॥ यहितवातअरएवंनाही ॥ वांरवारकहीयामाही ॥ ९ ॥ तत्वज्ञानहीनजगजेते ॥
पावेकौनगतीकोतेते ॥ तेतेंनिजकर्मनअनुसार ॥ आवेपुनिपुनियासंसार ॥ १० ॥ पापकरेभवभीतरजेते ॥ नरकमाहिउ

मो
त्त
प
५८

पजे इह नेते ॥ थान थान ग्रह हो मग्र पार ॥ जे जन भव मै करे उदार ॥११॥ होवे देव सरग के माही ॥ बहु विध भोग ग्रहे जां माही ॥ ग्रह्॥
जे पुण्य पाप सम करे ॥ मानव तन कौ ते जग धरे ॥१२॥ या विध तां की गति है जेती ॥ वेद पुराण कहे सभ तेती ॥ तंत्रु शुभ अशुभ
कर्म त्याग कर दोई ॥ आत्म श्रवण करे इह जोई ॥१३॥ आतम तत्व ज्ञान नहि होयो ॥ काल अधीन देह तिन खोयो ॥ तत्व ज्ञान जां ते॥
नहि हुये ॥ मुक्ति अवस्था तां ते बहु पये ॥१४॥ तजे पाप नहि नरक सिधावे ॥ पुण्य विना नहि सुर पुर जावे ॥ तीनो फल ते भयो निरा॥
स ॥ है कछु गति के होवे नास ॥१५॥ जेव बहु नास हो इह ज्ञाप ॥ आतम श्रवण अनर्थ उपाप ॥ आतम श्रवण भीत कर हो ई ज्ञा
ने मध्य विनाशक सोई ॥१६॥ शुभ अशुभ कर्म त्याग करि दोई ॥ विध वत श्रवण करे इह जोई ॥ तत्व ज्ञान विन त्यागे देह ॥ सो नहि
होवे मुक्त विदेह ॥१७॥ मुक्ति नाहि तौ नरक सिधावे ॥ तनु को डार टौर कत जावे ॥ नरक गमन की शंका नाही ॥ कृष्ण निषेधी
गीता माही ॥१८॥ तथा च तत्र हां कं ॥ नहि कल्याण कृत् कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति ॥ चौपई ॥ ग्रह नहि नाश तां हि को होई ॥ जन्मांत॥
र को पावे सोई ॥ सो जन्मांतर बहु प्रकार ॥ कारण सहित सु नो निरधार ॥१९॥ जो भोगन अभिलाखा होई ॥ लोक पुण्य कृत पावे॥
सोई ॥ तंत्रु विना पुण्य कैसे न हि जाय ॥ जहां जा हि नर पुण्य कमाय ॥२०॥ आत्म श्रवण ग्रहे इह जोई ॥ परम तप स्या पुण्य सु॥
सोई ॥ तां के बल करि जावे तहां ॥ सुकृत कृत जन न जावे जहां ॥२१॥ दोहरा ॥ दिन दिन मै जो श्रवण है तां फल आहि उदार ॥ मर॥
ण अवधि लौ जे करै कौ न वता वे पार ॥२२॥ तउक्तं ॥ दिने दिने तु वेदान्त श्रवणाद् भक्ति संयुतात् ॥ गुरु शुश्रूषया लब्धात् कृच्छ्रा
सीति फलं लभेत् ॥ चौपई ॥ तप कर पुण्य लोक मै गयो ॥ भोगन को बहु संगी भयो ॥ साक्षात् भोगन करी सो कैं जो निरवासन॥
तां ते होई ॥ श्रीमंतन के कुल मे आवे ॥ जन्म पाप कै ज्ञान उपावे ॥ अरु जे कछु वासन उर होई ॥ धनी शुद्ध गृह उपजे सोई ॥२४॥
तहां आइ कै गहि वैराग ॥ ज्ञान लहै जो है वड भाग ॥ या विध की व्यवस्था जोई ॥ गीता माहि कही हरि सोई ॥२५॥ तंत्रु ते सत ज्ञानी
है जोई ॥ जन्मांतर को पावे सोई ॥ आतम श्रवण प्रथम तिन करयो ॥ पहित प्रश्न अरु संगति [illegible] करयो ॥२६॥ दोहरा ॥ आत्मश्र॥

५८

वणासु जन्म करि यहि समझो उरमाहि ॥ उपमा तेरी बुद्धि की कहूं निहारी नाहि ॥ २७ ॥ चौपई ॥ श्रवणादिक फल ज्ञान सु जोई ॥ या त
नु माहि लह्यो तिन सोई ॥ जन्म हेतु बिन होवे नाहीं ॥ जन्म हेतु ज्ञानी मो नाही ॥ २८ ॥ अज्ञान विशिष्ट कर्म है जेई ॥ जन्मांतर को है
तु तेई ॥ सह अज्ञान कर्म सभ जेते ॥ ज्ञान अग्नि भस्म सभ तेते ॥ २९ ॥ बिन कारण जन्म जग मैं से ॥ बंध्या सुत भव भीतर जैसे ॥ अरु
पुनि ज्ञानी जन्म सु जोई ॥ श्रुति माहि निषेध्यो सोई ॥ ३० ॥ तत्त्वज्ञानी पुरुष विशाल ॥ जीवत जो हि मिटाए काल ॥ ताके प्राण ।
न तत्त्वज्ञ ते जावें ॥ ब्रह्म माहि लीन ता पावें ॥ ३१ ॥ तथा च श्रुतिः ॥ न तस्य प्राणा उत्क्रामंति अत्रैव समवलीयंते ॥ नराज छंद ॥ अशे
ष वेग भोग कै अनंत धाम जावई ॥ अनंत पंथ लंघईन पार को उहावई ॥ उपाधि के अभाव ते अनंत मे समाइयो ॥ न अन्त के स
मान सो अलोक मै सिधाइयो ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ विदेह मुक्ति को हेतु सु जोई ॥ तत्त्वज्ञानी मो है सोई ॥ तातें होवे मुक्ति विदेह ॥ वा
हु यो धरे न तो सम देह ॥ ३३ ॥ तंतु तत्त्वज्ञान भाख्यो तम जोई ॥ विदेह मुक्ति को हेतन सोई ॥ तत्त्वज्ञानी परम उदार ॥ पावें ज
न्म सु वारंवार ॥ ३४ ॥ व्यास वसिष्ठादिक है जेते ॥ सनतकुमार औ नारद के ते ॥ पुनि मुनि तां के जन्म उदार ॥ माहि पुराण ।
न कहे विथार ॥ ३५ ॥ तिन्हु ही और ज्ञानी जे ते ॥ पावें जन्म तां हि सम तेते ॥ औ नतज्ञ को जन्म न हूये ॥ व्यासादिक को सम्यक
पये ॥ ३६ ॥ या मे हेतु सुनो निरधार ॥ संका तेरी दयो निवार ॥ व्यास वसिष्ठादिक हैं जेते ॥ है अधिकारक जग के तेते ॥ ३७ ॥ ध
र्म धरे हैं वेद विसतारे ॥ जन को भव सागर निसतारे ॥ धर्माधर्म गति जग तेती ॥ जन को सगल बतावे तेती ॥ ३८ ॥ या हि क
ल्प को काल सु जेतो ॥ ता को प्रारब्ध है तेतो ॥ ते निज प्रारब्ध अनुसार ॥ धारे जन्म सु वारंवार ॥ ३९ ॥ यही अर्थ शारीरिक मा
ही व्यास बतानयो संसे नाहीं ॥ तृतीय अध्याय तीसरे पाद ॥ भाख्यो प्रगट न अहे विवाद ॥ ४० ॥ तथा च सूत्रं ॥ यावदधिका
रमवस्थितिराधिकारिणां ॥ चौपई ॥ और ज्ञानी भव मै जेते ॥ यान तु स्ताग अनंतर तेते ॥ विदेह मुक्ति को प्राप्ति होवे ॥ बहुरो ।
जन्मांतर न हि जोवे ॥ ४१ ॥ तथा च श्रुतिः ॥ तस्य तावदेव चिरं यावन्न विमोक्ष्ये अथ संपत्स्ये ॥ चौपई ॥ तां ते जन्म तां हि न हि ये ये ॥

= हजार चौकडी

त्रिविधभेदहीनवह्नरूपे ॥ कल्पितनिर्विकल्पभेदयोजोई ॥ भयोनिवृत्तिरहियोनहिकोई ॥ ४२ ॥ तंत्रुपदापिकल्पितभवजोई ॥
भयोनिवृत्तिरहियोनहिकोई ॥ तदपिमोक्षप्रकल्पितरूपे ॥ तांहिनिवृत्तितहांनहिपाये ॥ ४३ ॥ परमार्थीमोक्षपरसदेहजोई ॥ श्रु-
तिनिवारेनीकेसोई ॥ तंत्रकोनश्रुतियाविधकीत्राहि ॥ भाखोप्रगटसुनोअबताहि ॥ ४४ ॥ ननिरोधोनचोत्पत्तिर्नबद्धोनच
साधक ॥ नमुमुक्षुर्नवैमुक्तइत्येषापरमार्थताइतिश्रुतेः ॥ चौपई ॥ ब्रह्मभिन्नमोक्षयीजोई ॥ याविधवेदनिषेधीसोई ॥ तांतेस
गलहैततेहीन ॥ ब्रह्मरूपकमोक्षमेचीन ॥ ४५ ॥ सवैया ॥ खीरनखीरसुनीरननीरसमीरनमाहिसमीरसमावे ॥ आतपमा-
हिमिलेजगआतपमाहिदिशादिशाभूरसमावे ॥ फूटतहीघटकेनभमेनभएकभयोनहिभेददिखावे ॥ मोक्षतथानहि
भेदपिखोहरिकोविदवेदएहीविधगावे ॥ ४६ ॥ सवैया ॥ शुद्धसनातननित्यप्रबुद्धसरूपकअखंडतत्रब्रह्मपछानो ॥ आनंद
पूरसुधूरविहीनइसोघनसैंधवखिल्यअछानो ॥ बिंदुसुपूरहीअवनीअरुबिंदुपुरंदरकेपुरमानो ॥ तद्रूहानसनातनता
ब्रह्मभयोजिमखंडअकाशअकाशसमानो ॥ ४७ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ चनंताननअपनहीभेदहोई ॥ अहैहैतजेतीरहीनाहिको
ई ॥ इकोसोविराजेनहीआनभासे ॥ स्वतोसिद्धज्योतिप्रकाशंप्रकासे ॥ ४८ ॥ चौपई ॥ तांउपमानओरनहिदरसे ॥ वासमवहीं
एकरहपेये ॥ नीरधिहैभवभीतरअैसे ॥ नीरधिहोइजगतमेजैसे ॥ ४९ ॥ अैसेगगनअहेभवमाहीं ॥ गगनहोइजेसेजगमा
हीं ॥ तिंउविदेहमुक्तहैअैसे ॥ विदेहमुक्तहीहूयेजैसे ॥ ५० ॥ याविधउपमातांकीतांको ॥ ओरनहीउपमानसवाको ॥ अज्ञा
ननिवृत्तिउपलक्षतजोई ॥ परमानंदहोउचिदसोई ॥ ५१ ॥ तंत्रअज्ञाननिवृत्तिसजोई ॥ कोनसरूपतांहिकोहोई ॥ पूर्वपक्षा
इवखानेजैसे ॥ तांहिसरूपपछानोतैसे ॥ ५२ ॥ ननुपूर्वपक्षहुवखानेकैसे ॥ कहुंककहोसुनपेअवतैसे ॥ अनेदवोधावा
धेजोई ॥ अैसेतांहिवखानेसोई ॥ ५३ ॥ अविद्यानासअहेइहजोई ॥ तरीउतीरएगपंचमसोई ॥ सम्यनाशतांकोनहिहूये ॥ हो
इसम्यअहितीनपये ॥ ५४ ॥ अरुअसम्यनासवहुनाहीं ॥ होवेताननसाधनतांहीं ॥ सम्यअसम्यउभयनहिहूये ॥ तांतेदोऊ

विरोधीपये ॥ ७५ ॥ नहिंपुनिअनिर्वाच्यवखूहूये ॥ सारीअनिर्वाच्यजोपये ॥ तांकोउपादानअज्ञान ॥ तांविनअनिर्वाच्यवखूदान ॥ ७६
मुक्तिमाहिंअज्ञाननहुहोइ ॥ ज्ञाननिवृत्तिहोइपुनिसोइ ॥ तांतेचारप्रकारनहूये ॥ त्रीउतीरणपंचमपये ॥ ७७ ॥ अद्वैतविद्या
वार्थजोइ ॥ याविधतांहिंवतावेसोइ ॥ अनिर्वाच्यअविद्याहूये ॥ तांकोनाशनयापुनिपये ॥ ७८ ॥ याहिंपत्तकोवखूविसतार
॥ माहिंसिद्धांतलेशनिरधार ॥ सर्वकहेहोवेविसतार ॥ सारग्रंथकाकीयोउचार ॥ ७९ ॥ ब्रह्मसिद्धकारहेजोई ॥ ऐसेतांहिं
वतावेसोई ॥ अविद्यानाशअहेइहूजोई ॥ आत्मरूपपछानोसोई ॥ ८० ॥ कल्पितबाधअहेइहूजेतो ॥ अधिष्ठानरूपमानन ।
हिनेतो ॥ कल्पितअहेसर्पजगजोई ॥ तांहिंअभावरज्जुहीहोई ॥ ८१ ॥ गंगाधरपुनिपुनियहीवखाने ॥ अधिष्ठानअतिरिक्त ।
बाधनहिंमाने ॥ अविद्याबाधअहेइहूजोई ॥ अधिष्ठानभिन्नवस्तुनहिंसोई ॥ ८२ ॥ याहीनेकछुहेतनहूये ॥ एकअहिंतीय
आत्मापये ॥ नंनृहूवखानयोरूपसुजोई ॥ नानाविधभावयोहूसोई ॥ ८३ ॥ तांतेतांमनअहेविरोध ॥ परस्परंनीकेउर ।
सोध ॥ नांहिंविरोधपरस्परहोई ॥ बोधउपायकेंसमकोई ॥ ८४ ॥ बोधउपायग्रंथहेजेती ॥ हेअविरुधसमभनमेतेती ॥ वा
स्तविचारअविद्यानाहीं ॥ कोनअभावकहेकोनाहीं ॥ ८५ ॥ अध्यारोपअपवादसुजोई ॥ शिष्यबोधहितकल्पयोसोई ॥ को
धअनंतरज्योतिहूहेरे ॥ तांहिंअभावत्रिकालिकटेरे ॥ ८६ ॥ तदुक्तं ॥ अध्यारोपापवादाभ्यांनिष्प्रपंचंप्रपंच्यते ॥ शिष्याणां
बोधसिद्ध्यर्थंतत्त्वज्ञैः कल्पितः क्रमः ॥ ततमस्यादिवाक्येभ्यःसम्यग्धीजन्ममात्रतः ॥ अविद्यासहकार्येणनासीदस्तिभविष्य
ति ॥ चौपई ॥ याविधतीनोकालअभाव ॥ भईअविद्यालहेनभाव ॥ आत्मएकअखेउअनासी ॥ ज्ञानानंदचिदसुतेप्रकासी ॥ ८७ ॥
तांभीनरविक्षेपजदेह ॥ तांहिंत्यागेहोइविदेह ॥ प्रारब्धभुगतिवंइहशरीर ॥ भोगत्यागीकोविदधीर ॥ ८८ ॥ पूर्वउक्तआत्माजो
ई ॥ वहीस्वरूपमुक्तनरहोई ॥ जहांतहांतनछुटेसोई ॥ हेसुखसिंधुभेदनहिंकोई ॥ ८९ ॥ सवैया ॥ नदतीर्थमाहिंतजेतनकोउ
तकघरदेशविवेतनछुटे ॥ कैमंदिरमैतनत्यागकरेउतजाइमेरवकूनीचहारे ॥ हरिध्यानधरेतनत्यागकरेउतहाहकरेटिग

मो
तु
प
६.

तेजलखारे ॥ तत्तु जारत हीरसखे सिंधु भयो न हि आेरततू हित लोकपधारे ॥ १० ॥ नराज छंद ॥ निवारके उपाधि को अखंड रूपसो वई ॥
अपारसखे रूपसो न दुःखे लेश जो वई ॥ अगाध बोध रूप सो भजे ससंत जासको ॥ जपी अनेक वेन कै जपे सजाप तासको ॥
११ ॥ सवैया ॥ जो हि निमित्त करे तपसाज ग जो हि निमित्त धरे व्रत भारी ॥ जो हि निमित्त तजे सभ भोग सु जे उर माहि सपोगड ।
हारी ॥ जो हित भामिनि धाम तजी अरु पर्णि कुटी वनमाहि सवारी ॥ सो सखे दुःखे विहीन लहे तत्तु उरज्ञान जवै धरमेत तू ।
ज्ञारी ॥ १२ ॥ सवैया ॥ जो हित यज्ञ सदा नर चे पुनि जो हि विचार रचे व्रतभारी ॥ भी खे मम्मात लिआ दि जिते सभ तीर्थ जो हित धा
रज्ञ हारी ॥ रचे भुवमंडल मे प्रभ मूर्ति जो हि निमित्त भई श्रुति चारी ॥ सो सखे दुःखे विहीन लहे उरज्ञान जवै धरमेत तत्तु ज्ञारी ॥
१३ ॥ सवैया ॥ जो हि निमित्त कही सुरसेव सु देव मनावन की गति धारी ॥ जो हित राजव सेवक ही अरु शंकर की अरचा ॥
विस्तारी ॥ देवनदी तट वैठ दरकंत करे तपसा तपसी व्रत धारी ॥ सो सखे दुःखे विहीन लहे उरज्ञान जवै धरमेत तत्तु ज्ञारी ॥
१४ ॥ सवैया ॥ वेद विचार कह्यो पुनि जो हित जो हित ग्रंथ रचे गुरु भारी ॥ भाष्य शरीरक आदि जिते कवि कोन गनेक कु
आहि न पारी ॥ सेवक ही गुरु की पुनि जो हित जो हित दुष्ट की संगति टारी ॥ सो सखे दुःखे विहीन लहे उरज्ञान जवै धा
रमेत तु ज्ञारी ॥ १५ ॥ दोहरा ॥ या विध आत्म धाम को आत्म ज्ञानी पाइ ॥ परमानंद अखंड चिद भेद विहीन समाइ ॥ १६ ॥ सवैया ॥
भव भार तखंड किमंड न ते जिन पाप विसार सु पुण्य कमाय ॥ गुरु सेव सु देव मनाय वली विध आत्म ज्ञान सु जो उपजाय
उरराग विसार फिरें जग मे जल नीरज से गुणसिंधु सुहाय ॥ तत्तु जारअखंड विहैं हू भये परमात्म सिंधु विवेक समाय ॥ १७
दोहरा ॥ मोक्ष पंथ संक्षेप ते पाहि सवैये माहि ॥ भाखे पोसम्य कहे रउरसधी पिखे मनमाहि ॥ १८ ॥ सवैया ॥ यह मार्ग नाहि ।
अपूर्व है कछु आहि पसिद्ध सु वेदन माही ॥ नर नाहि निहार सके तिह को न व्यास कह्यो सु शरीरिक माही ॥ वह आहि ।
गंभीर पिखे तिह धीर अथ्ये जिन ते सुर वैन न माही ॥ वरजे नहि तं हि निहार सके पुनि नाहि त सोइ कह्यो रन माही ॥ १९ ॥

सवैया॥ शांति सदा तिह आदि जिते सम साधन तांहि विवेक दिखाये॥ है इति सेव उदार उरे गुर की शुनि सेव सदेह सहाये॥ तां।
आधिकारि निहार कि कोविद हो इ असेक सग्रंथ सुनाये॥ है पद आगम को सभ सार निहार कि औरन नाहि वताये॥ ८०॥
सवैया॥ रवि गोतम पुंज निवार करे सुख लोचन हैं विमलीजग जांही॥ जग पेच कवै न न दोष वचे न रवि गोतम सी तिन के
उर मांही॥ जग सार परीक्षक जे गति पे सम फेतिन की मन मांही॥ रिख वैन न नाहि सए हन लोक सु वालक की गन
ना किन मांही॥ दोहरा॥ कहि है वेदांत को अर्थ है कहि मम बुधि विचार॥ रघुपति श्री गुर पद क्रिपा कीनो कछु उचार॥ ८२॥
सवैया॥ जांह रिमीलि नवे रग है करप्रेम प्रसंन भये रचुराई॥ फूल सुगंध जलादि जां पद पंकज दै जन ले हि रिझाई॥ वा।
लक वैन सफूल सुगंध हसार यजां हि विवेक न लाई॥ तो पद पंकज भेट धरे पिख हो हि प्रसंन सुसील सहाई॥ ८३॥
॥दोहरा॥ मरुदेश मंडन महां पुर से खव अभिराम॥ राइ आजन क प्रसिद्ध जग जननी गोरी नाम॥ ८४॥ गुलाव सिंघ तिं।
न धाम सुत करी गुरन की सेव॥ गुर गोविंद को पंथ गहि है रपे आतम देव॥ ८५॥ श्री गोविंद सु सिंघ है पुरसा हरि अव।
तार॥ रच पो पंथ भवे मे प्रगट दो विधि को विस्तार॥ ८६॥ एकन के कर खड्ग है भुज बल वहु विस्तार॥ पालन भूमी को।
करयो दुष्टन मूल उखार॥ ८७॥ औरन की पिख विमल मति दीनो परम विवेक॥ निर्मल भाखे जगत तिन है रेख सु
एक॥ ८८॥ तिन पद पंकज नीर ले है पापो मो हि विचार॥ तिन अनुमति पाई वाल मे कीनो ग्रंथ उचार॥ ८९॥ छपै छंद॥ अमृ
त सर जिह नाम है रजल पाप विनासे॥ पान करे दुख जाय वो धउरम ध्रम प्रकासे॥ वेद सुत ब्रह्म तांहि ग्रंथ से पर्ण करयो।
मोक्ष पंथ प्रकाश नाम विचार सु धरयो॥ जो पद देस यंको रीत के नर वहु मुक्ति सु आह जग॥ गुर हरि भज सु वाक्य अर्थी।
ग हि निज मुक्ति को पा हि मग॥ ९०॥ सवैया॥ शत अष्ट दश शुभ संवत मे पुनि विंश तपांच भये अधिकाई॥ शुभ मास वसंत दी
शुभ सोम सुमे शुभ वासर सोम महा सुखदाई॥ थिति पंचम नाम वसंत कहे सभ लोकन को सुजनो सुखदाई॥ थि-

मो
ह
प
८१

नलोंहिसभ्रनग्रंथभयोहरिकेपदपंकजमेंदचशई॥ ९१ ॥सवैया॥ गणनायकसारसतीरघुवीरसनानकजीगुरश्री॥
उदारे॥ गुरगोविंदसिंघउदारवडेप्रभुनिज्जांगुरहमेभवसागरतारे॥ तिनकौनउपायनपारधरोकछुलायकनाहिंपिवोज
गसारे॥ करजोरभलीविधवंदउसमंपदपंकजमेंवडकेंवंदहमारे॥ ९२ ॥॥इतिश्रीसन्मानसिंहचरणशिदितगुलावसिंहेनगौ
डीयब्राह्मणेनविरचितेमोक्षपंथप्रकाशेविदेहमुक्तिनिर्णयोनामपंचमोनिवासः॥५॥ ॥ ॥ श्रीशुभसंवत १८ ९८ लि
खितंमयापंडितसंतरामेणकाश्मीरमध्येग्रहलामदेग पठनार्थीसंगतदासउदासीपरमहंसः॥